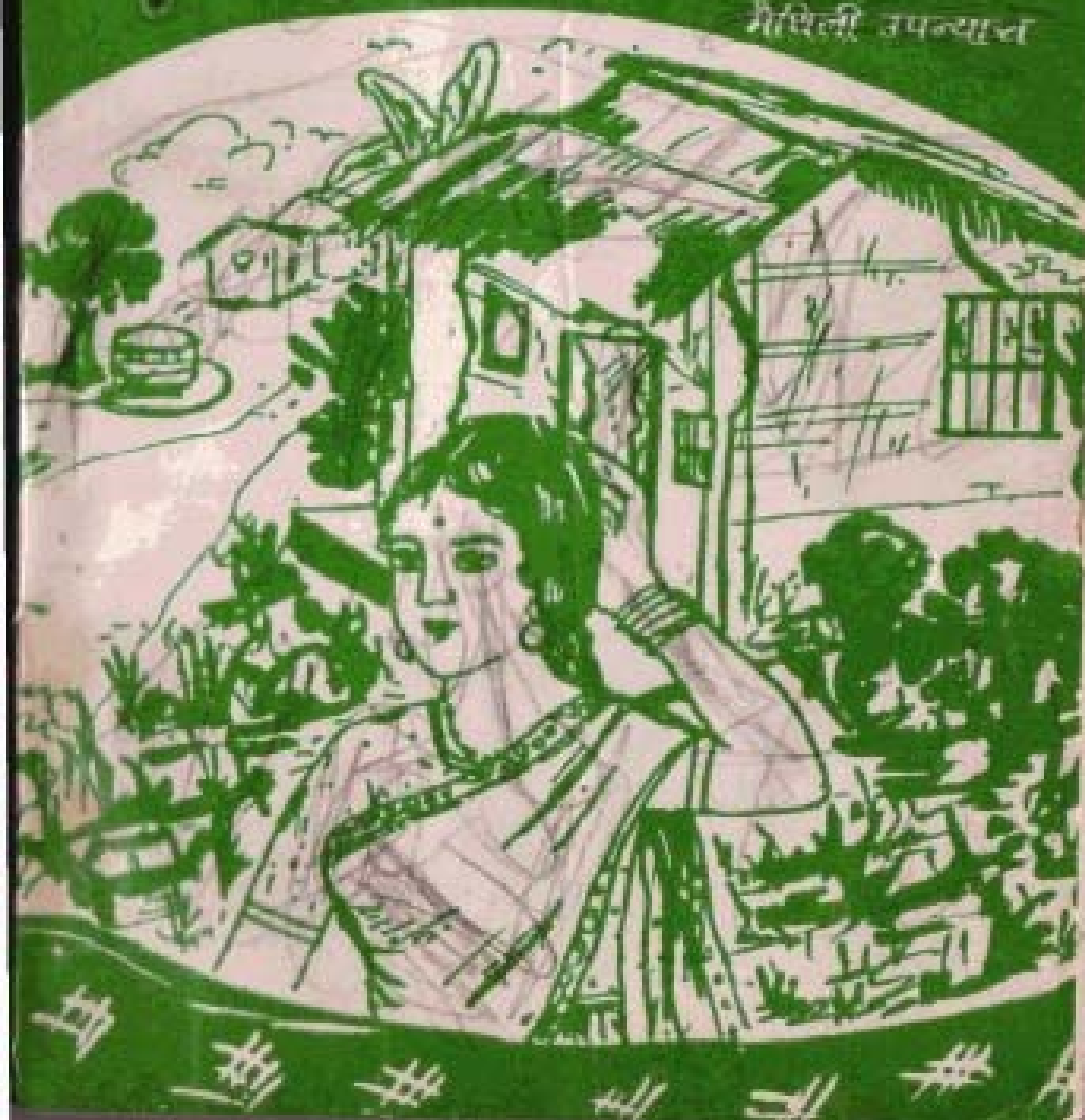


मुंशी रासबिहारी लाल दास कृत उपन्यास

सुमति

सम्पादक

डा० रमानन्द झा 'रमण'

डा. रमानन्द झा 'रमण'

उर्वशी प्रकाशन

पटना–६

सुमति (मैथिली उपन्यास) मुंशी रासबिहारी लाल दास

सं० डा० रमानन्द झा 'रमण'

Sumati (Maithli Novel)--Munshi Ras Bihari Lal Das

Ed. by Dr. Ramanand Jha 'Raman'

प्रथम संस्करण–१९१८

द्वितीय संस्करण–१९९६

प्रति–५००

मूल्य–१० रुपैया

प्रकाशक
उर्वशी प्रकाशन
मुसल्लहपुर,
पटना–८०० ००६

मुद्रक
पूर्णिमा प्रिंटर्स
मुसल्लहपुर,
पटना–८०० ००६

'सुमति'—मैथिली साहित्यक रत्न

–प्रो० श्री आनन्द मिश्र

मैथिली उपन्यासक विकास-यात्रा एहि शताब्दीक प्रथम दशक सँ प्रारम्भ होइछ। यद्यपि प्रारम्भमे एहि विधाक रूपरेखा ओतेक स्पष्ट नहि छल तैं प्रारम्भिक लेखक लोकनि उपन्यासमे कथा एवं वर्णन-विन्यास दिस बेसी ध्यान देल। वर्णनमे अतिरंजकताक मात्रा विशेष रहल। किन्तु अगिले लेखक लोकनि अपन ध्यान सामाजिक कुरीति दिस देल तथा ओकर निराकरणक दिशामे अपन लेखनीकेँ अग्रसारित कएल। बाबू तुलापति सिंह, श्रीकृष्ण ठाकुर, पं० जनार्दन झा 'जनसीदन', पं० जीवछ मिश्र, रास बिहारी लाल दास आदि मैथिलीक प्रारम्भिक उपन्यासकार लोकनि अपन लेखनी सँ मिथिलाक विभिन्न सामाजिक समस्याकेँ उजागर कएल। ओ रचना सभ प्रकाशमे आएल किन्तु ओकर उचित मूल्यांकन ताहि समयमे नहि भए सकल। ताहि दिन भाषाक एहेन रचना दिस प्रबुद्ध पाठक लोकनिक ध्यान ताहि रूपेँ नहि पड़ल। फलतः ओ रचना सभ विस्मृतिक गर्तमे चल गेल। आब जखन मैथिलीक पाठक ओहि रचनाक विषयमे किछु जानए चाहैत छथि तँ पोथीक अनुपलब्धता बड़का बाधक बनि जाइत छैन्हि। एही उद्देश्यें मैथिलीक ओहेन-ओहेन रचनाक पुनर्प्रकाशनक डा० रमानन्द झा 'रमण'क प्रयास परम श्लाघ्य अछि तथा ओही कड़ीक ई प्रकाशन 'सुमति' एक अंग थिक।

रास बिहारी लाल दासक 'सुमति' जाहि समय अर्थात् १९१८ ई० मे प्रकाशित भेल छल ताहि दिनुक समाजमे मिथ्याडम्बरक पाछाँ लोक अपन सर्वस्व नष्ट कए लैत छल। भविष्यक बिनु चिन्ता कएने विवाह आदिक अवसर पर उचित सँ बहुत बेसी खर्च कए दैत छल जाहिसँ ओकर जीवन-यापन अत्यन्त दुःखमय भए जाइत छलैक तथापि ओहेन कार्यकेँ छोड़ब ओकरा

कठिन बुझाइत छलैक। एहने वैवाहिक अवसर पर मिथ्याडम्बरक कारणें दुःख भोगैत एक कर्ण कायस्थ परिवारक कथा थिक 'सुमति'।

रास बिहारी लाल दास स्कूली शिक्षा बड़ थोड़ पओने छलाह, किन्तु स्वाध्यायक बलें तथा तीक्ष्ण पर्यवेक्षण शक्ति सँ समन्वित रहला सँ सुन्दर ढंग सँ तत्कालीन मैथिल कर्ण कायस्थ लोकनिक समस्या एवं स्थितिक आलंकारिक भाषा मे चित्रण कएल अछि। उपन्यास क्षीणकाय रहितहुँ अपन उपादेयता सिद्ध करबामे पूर्ण सफल भेल अछि।

एहि उपन्यासक अनुपलब्धताक कारणें डा० श्री जयकान्त बाबूक इतिहासमे एतबा सामग्री देल तकरहि पश्चातक इतिहासकार लोकनि दोहरबैत गेलाह। कैओ ओहि पोथीकें देखि ओकर पुनर्मूल्यांकन करबाक कष्ट नहि कएल। डा० श्री 'रमण' एकरा फेरि प्रकाशमे आनि एकर मूल्यांकनक अवसर मैथिलीक पाठककें देल अछि ताहि हेतु ओ धन्यवादार्ह छथि। एहि रचनाक प्रकाशनसँ मैथिली उपन्यासक संग तत्कालीन मैथिली गद्य-शैली पर सेहो महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ैछ तथा गद्यक अध्येता लोकनिकें भाषा सम्बन्धी किछु नवीन तथ्य भेटतन्हि से आशा अछि।

अन्तमे डा० श्री रमानन्द झा 'रमण'कें हम आशीर्वाद दैत छिएन्हि जे एहिना भविष्यहुने मैथिलीक भण्डार सँ नुकाएल, हेड़ाएल रत्नसभकें ताकि-ताकि प्रकाशमे आनि मैथिली पाठकक उपकार करथि।

पटना
स्वतन्त्रता दिवस, १९९६ ई०

प्राक्तन आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय पटना
पटना

रासबिहारी लाल दासक अवदान

रासबिहारी लाल दासक जन्म मधुबनी जिलाक भच्छी गाममे १८८२ई०क लगपासमे भेलनि। हिनक पिताक नाम छल दुलार सिंह दास। हिनक पितामहक नाम मन्नाराम, प्रपितामह जीवनलाल दास तथा अतिवृद्ध पितामह धनपति उर्फ रुक्माइ छल। हिनक विवाह मुर्तजापुर छलनि। हिनक पुत्रक नाम छल बजरंग बिहारी दास। रासबिहारी लाल दासक मूल थिक सोनैवार सप्ता डेरा।

रासबिहारी लाल दास विशेष पढ़ल-लिखल नहि छलाह। प्रवेशिका धरि शिक्षा पओने छलाह। आजीविका लेल ओ यद्यपि रेलवेमे ठीकेदारी करैत छलाह, परञ्च हुनक हृदय एक संवेदनशील रचनाकारक हृदय छल। हुनक बेसी समय शास्त्र-पुराणक अध्ययन-मनन तथा साहित्य साधनामे व्यतीत होइत छल।

रासबिहारी लाल दासक दूटा कृति प्रकाशित अछि। ओ थिक 'मिथिला दर्पण' (१९१४ ई०) तथा 'सुमति' (१९१८ ई०)। 'मिथिला दर्पण' हिन्दीमे अछि। एकर दू भाग अछि। प्रथम भागमे मिथिलाक प्रकृति, जीव, जन्तु आदिक विस्तृत वर्णन अछि। दोसर भागमे मैथिल कर्ण कायस्थक वर्णनक संग कायस्थक उत्पत्ति, चित्रगुप्तजीक बारहो सन्तानक, विवाह हुनक मूलवास तथा मूलवास सँ कतय-कतय प्रस्थान कएल तकर वर्णन अछि। एकर अतिरिक्त कर्ण कायस्थक अभ्युदयक संगहि पंजी प्रथाक अनुसार २७८ वंशक पूर्ण विवरण देने छथि।

मिथिला मिहिर २६ जनवरी १९१६ ई०क अंकमे 'मिथिला दर्पण'क प्रकाशनक सूचना एहि प्रकारें अछि—'मिथिला का प्राचीन तथा आधुनिक इतिहास, भूगोल तथा अन्यान्य विषयों को प्रदर्शित करनेवाला २७५ पृष्ठों का यह ग्रंथ छप गया है।'

'सुमतिक' प्रकाशन १९१८ ई०मे भेल। ई पोथी महाराज रमेश्वर सिंहके समर्पित अछि। एकर मूल्य अछि ६औ आना। पुस्तक प्राप्तिक स्थान मे लिखल अछि–श्री रामलाल तथा श्री गिरिधारी लाल दास, मिथिला दर्पण कार्यालय–मौ० भखी, पो० मधुबनी, जिला दरभङ्गा। 'मिथिला मोद' उद्गार १४८-४९ वर्ष १९१९ ई०मे 'सुमतिक'क समालोचना निम्न प्रकारे अछि– 'भखी ग्राम निवासी मुन्शी श्री रास बिहारी लाल दास रचित एक सामाजिक 'सुमति' नामक उपन्यास प्रस्तुत भेल अछि। ई उपन्यास देखै योग्य अछि। एक-दू पृष्ठ देखलासँ चित्तमे ततेक आह्लाद बढ़ैछ जे स्नान, भोजन, सब काज त्यागि समस्त पुस्तक पढ़ि जाइ। 'सुमति'मे विवाहक सिद्धान्तक बरिआतक विशेष कौतुकयुक्त कथा अछि।

सहलोला दासक पुत्रक विवाह मनोरथ लाल दासक कन्या सँ भेलन्हि ताहिमे सहलोला दास ओ मनोरथ लाल दास दुनू समधि मनोरथपूर्ण बरिआत सजि-धजि विवाह करौलन्हि, दैतुक देबाक तँ कथे नहि हो। विवाहक शोभा बहुत भेल। तत्काल दुनू समधिकेँ यशो पूर्ण भेलन्हि। किन्तु पश्चात् एही विवाहक ऋण दैत-दैत सर्वस्वान्त भेलन्हि। माहि वर कन्याक विवाहमे अनेको सहस्र टाका नाच-तमाशामे उड़ि गेल, ताही वर कन्याकेँ अन्नो वस्त्र भेटब कठिन भऽ गेल।'

रास बिहारी लाल दासक बाल्यकाल धरि देशमे समाज सुधारक आन्दोलन चरमोत्कर्ष धरि पहुँचि गेल छल। दोसर दिस राष्ट्रीय स्वाधीनताक आगि क्रमशः तेज भए रहल छलैक। सुधारवादी आन्दोलन तथा राष्ट्रीय चेतनाक धाह सँ मिथिलाँचलो अप्रभावित नहि रहल। ओही सुधारवादी आन्दोलनक परिणाम भेल 'अखिल भारतीय मैथिल महासभा'। समाजमे व्याप्त वैवाहिक कुरीतिक–निराकरणक उपायक चर्चा 'महासभा'मे नियमित रूपेँ होइत छल। साहित्यमे बिचार परिवर्तन करबाक कतेक क्षमता छैक ओहि तथ्यसँ प्रबुद्धवर्ग अपरिचित नहि छलाह। प्रो० गंगापति सिंह (१८६४ (१९६९) साहित्यक एहि प्रयोजनक प्रसंग लिखल अछि–'नाटक, उपन्यास आदि सरस विषय रहने ओहिसँ मनोरंजन सेहो होइतैन्हि आओर अनेक प्रकारक उपदेशो प्राप्त होएतैन्हि। बीस-बीस पच्चीस-पच्चीस विवाह कए जातिकेँ कलंकित कएनिहार बिकौआ लोकनिक अन्तमे जेहन पाप-परिणाम होइ छैन्हि, से प्रत्यक्ष देखितहि छी। किन्तु, यदि एहि विषय पर सरस तथा मनोरंजक नाटक वा उपन्यास कोनो विद्वान लिखथि तँ ओहि सँ समाजक बड़ उपकार भए सकैत अछि। तखन लोक एहन-एहन दुष्कर्म करबाक साहस नहि करत।' ('मिथिला मिहिर' १५ नवम्बर, १९१५ ई०)। मुंशी रासबिहारी लाल दासमे सामाजिक चेतना पर्याप्त छल। वैवाहिक कुरीतिक दुष्परिणाम सँ दुइ पक्षकेँ उपटैत देखि व्यथित भेल होएताह। ककर माय-बापक विवाहमे अनेक खर्च भेल छल, तकरहि सन्तानकेँ बिलटि जाइत देखने होएताह। समाजक ई स्थिति एक संवेदनशील व्यक्तिकेँ निश्चित रूपेँ प्रेरित करबा लेल पर्याप्त अछि।

मुंशीजीक समक्ष एकटा व्यापक सामाजिक विषय-वस्तु छल। ओकरा ओ समाजक समक्ष प्रस्तुत करय चाहैत छलाह। हुनका साहित्यक विभिन्न विधाक सामर्थ्य आ सीमाक ज्ञान छलनि। उपन्यासक अर्थ ओ से नहि मानैत छलाह, जे बाबू तुलापति सिंह 'मदनराज चरित उपन्यास' सँ बुझैत छलाह। अपन अनुभवक अभिव्यक्ति लेल उपन्यास विधाकेँ स्वीकार करबाक प्रसंग लिखने छथि–'नभ मण्डलस्थ नक्षत्रादिक दर्शन तँ सहजमे चक्षुपातहि सँ भऽ सकैत अछि, परन्तु भू-मण्डल समाजकाल्य चरित्ररूपी नक्षत्रक निरीक्षण तँ उपन्यासरूपी आइग्लासहीक (चश्माक) अवलम्बन सँ समाजगत गुप्त प्रकट खानि-खानिक चरित्ररूपी नक्षत्र सूझय लागत तेँ कहि सकैत छी जे समाजरूपी फोनोग्रामक रेकर्ड, समाजरूपी फोटो कमराक लेंस, समाजगत चरित्रक चित्राधार अर्थात अलबम, समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श तथा आधार उपन्यासे थिक। अतएव, सामाजिक उपन्यासक पठन सँ मनुष्य सहजमे अपन दूषित चरित्रकेँ सुविचार सँ परित्याग कए सकैत अछि।' उपन्यास की थिक, आ उपन्यासक कतेक महत्व अछि मुंशी रास बिहारी लाल दासक एहि विचार सँ स्पष्ट अछि।

मैथिलीक तीनू आरम्भिक उपन्यासकार जीवछ मिश्र (१८६४-१९२३), जनार्दन झा 'जनसीदन' (१८७२-१९५१) तथा मुंशी राम बिहारी लाल दास (१८८२-)मे एक विलक्षण साम्य अछि, जे तीनू गोटे पहिने हिन्दीमे लिखि ख्याति अर्जित कएने छलाह। ई सर्वविदित अछि जे मैथिलीक विरुद्ध चलल षड्यन्त्र सँ परिचित भेला पर जीवछ मिश्र हिन्दीमे नहि लिखबाक शपथ लेल। राम बिहारी लाल दासक पहिल पोथी 'मिथिला दर्पण' हिन्दीमे प्रकाशित भेला पर मातृभाषा दिस हुनक ध्यान गेलनि। ओ ई अनुभव कएल जे सभ उन्नतिक मूल मातृभाषाक उन्नतिए थिक। जीवछ मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६ ई०), जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु' (मि० मि० १९१४ ई० तथा पुस्तकाकार १९८४ ई०) एवं राम बिहारी लाल दासक 'सुमति' [१९१८ ई०) मे 'निर्दयीसासु' तथा 'सुमति' वैवाहिक समस्या पर अछि। 'रामेश्वर'क समस्या भूख, अभाव, गरीबी भ्रष्टाचार एवं मानवीय करुणाक अछि। प्रथम दू उपन्यासक अपेक्षे 'सुमति'क कलेवर पैघ अछि तथा पात्रमे विविधता छैक। किन्तु, निबन्ध शैलीक भाषा तथा पैघ-पैघ वाक्य संरचनाक कारणे 'सुमति'क शिल्प आ भाषामे ओतेक सहजता नहि अछि, जतेक 'निर्दयी सासु' वा 'रामेश्वर'मे पाठक अनुभव करैत अछि।

'निर्दयी सासु' तथा 'सुमति' दूनू स्त्री प्रधान रचना थिक। परंच निर्दयी सासु'मे जतय पुरुष पात्रक व्यक्तित्व अत्यन्त गौण अछि, 'सुमति'मे ओ स्थिति नहि छैक। 'निर्दयी सासु'क यशोदा मूक अछि। बिना एको शब्द बजने सभ किछु सहैत जाइत अछि। परंच 'सुमतिक'क सुमतिमे नामगुण पूर्णतः चरितार्थ भेल अछि। सासुरवासमसँ पूर्वहि सुमति सुशिक्षिता भए जाइत अछि। सासुर गेलापर आश्रमक पूर्ण प्रबन्ध अपना हाथमे लए पतिक उद्धार कएलाक बाद समाजक उद्धार हेतु सक्रिय भए जाइछ। अतः रचनाक सोद्देश्यता जतेक प्रखर आ स्पष्ट रूपमे 'सुमति'मे व्यक्त भेल अछि, से स्पष्टता 'रामेश्वर' आ 'निर्दयी सासु'मे नहि अछि। 'सुमति'मे उपन्यासकार एक पात्र उचितवक्ताकेँ अनने छथि जे बीच-बीचमे टीपैत जाइत अछि।

डॉ० जयकान्त मिश्र अपन इतिहास ग्रंथमे 'सुमतिक' चर्चा आ विश्लेषण कएने छथि। बादक पीढ़ीक इतिहासकार लेल 'सुमति' विषयक ज्ञानक ओएह मात्र आधार भेलैक। पोथी पढ़ि लिखबाक अवसर प्रायः पोथीक अनुपलब्धताक कारणे नहि भेलैक। प्रो० राधाकृष्ण चौधरी (१९२४-८५) ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर'मे 'सुमति'क उल्लेख अवश्य कएने छथि। मुदा स्पष्ट अछि मूल पोथी बिना पढ़ने-से मात्र एक उदाहरण सँ स्पष्ट भए जायत। सुमति थिकथि मनोरथ लाभक कन्या आ सहलोला बाबूक पुत्रवधु। मुदा डॉ० मिश्रक इतिहासमे मुद्रण-दोषे सुमति भए गेलीह सहलोला बाबूक बेटी आ मनोरथ लाभक पुतहु। एहि अशुद्धिकेँ दोहराबैत प्रो० राधाकृष्ण चौधरी लिखल–'When the heroine Sumati daughter in law of Manorath labh arrives, she manages things so well that the fortune of the family takes a better turn.' कहबाक तात्पर्य जे मैथिलीक अन्ये आरम्भिक उपन्यास जकां 'सुमति' सेहो पढ़ल नहि गेल अछि। चर्चाक आ विश्लेषणक स्थिति तँ बादमे अबैत अछि।

हमरा एहि बातक प्रसन्नता अछि जे मैथिलीक चारि गोट आरम्भिक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६–जीवछ मिश्र) 'निर्दयी सासु' एवं 'पुनर्विवाह' (१९१४ आ १९२५–जनसीदनजी), तथा 'सुमति' (१९१८)केँ खोजसँ ताकि अनबामे सफल भेलहुँ। ओहि प्रसंग समय-समय पर लिखि साहित्यानुरागी मैथिलक ध्यान आकृष्ट कएल। अनुपलब्धकेँ सुलभ करबामे सफलता भेटबाहिसँ मैथिली भाषा आ साहित्यक प्रसंग पसरल कतेको भ्रान्तिक निराकरण संभव भेल अछि। ई उपन्यासकार लोकनि अथवा एहि वर्गक अन्ये साहित्यकार मैथिलीक साहित्यिक परिवारक वरेण्य एवं प्रातः स्मरणीय पुरखा थिकथि। हिनकालोकनिक साहित्यिक अवदानसँ प्रत्येक पीढ़ीक माथ उठल रहत। मुदा अपन पारिवारिक जीवनक असफलता सँ कुण्ठित किछु एहनो लोक हमरा लोकनिक बीच छथि जनिका अपन बाप-पितामह अथवा पुरखा लोकनिक अवदानक चर्चे पर झड़की लागि जाइत छनि। अलोपित होइत

रचनाकें ताकि अनवाक एहन कोनो प्रयास हुनका निरर्थक लगैत छनि तथा विवेचन प्रतिपादनमे दुष्ट कुटिल आलोचनाक गंध भेटैत छनि। ओहन कुटिल आ कुंठित व्यक्तिकें रास विहारी लाल दासक अमूल्य कृति 'सुमति'क पुनः मुद्रणमे जँ 'नाना भतिजावाद' फेर सँ स्थापित होइत अनुभव होनि तँ हम अपन माथ सिएन धुनू।

'सुमतिक' सम्पादनक क्रममे सबसँ पहिने मोन पड़ैत छथि स्व० काञ्चीनाथ झा 'किरण' (१९०६-१९८९) जे पोथी सुलभ कए रास विहारी लाल दासक प्रसंग लिखबा लेल प्रेरित कएल। कतेको अन्य योजना जकाँ एहू कार्यमे पण्डित श्री गोविन्द झा, प्रो० श्री आनन्द मिश्र तथा डॉ० श्री गोकुल नाथ झाक वैचारिक सहयोग भेटल अछि। पत्नी श्रीमती कल्पना झा पूर्वहिक कतेको प्रकाशन जकाँ 'सुमति'क प्रेस कापी तैयार कए सहयोग कएल। श्री राजनन्दन लाल दास (कर्णामृत, कलकत्ता) एवं श्री जगदानन्द लाल दास संचालक चतुरानन स्मारक पुस्तकालय, भच्छी मुंशीजीक पारिवारिक परिचयक सूचना देल। एहि सब व्यक्तिक प्रति हम अपन हार्दिक आभार प्रकट करैत छी।

अन्तमे हम भच्छी गामक माटिक प्रति अपन नमन अर्पित करैत छी जे मुंशी रास बिहारी लाल दासक अतिरिक्त कालीकुमार दास (१९०२-४८) गुणवन्त लाल दास आ हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज' (१९०८-४५) सन साहित्यकारकें जन्म देलक जाहि सँ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि भेलैक अछि। मुदा सबसँ बेसी धन्यवादक पात्र छथि उर्वशी प्रकाशनक अधिष्ठाता श्री गोपीकान्त झा जे मिथिलाक माटि-पानिक चीज-वस्तुकें प्रकाशमे आनि अपन साहित्यिक आ सांस्कृतिक धरोहर सँ आजुक लोककें परिचित करेबा लेल फांड़ बान्हि तत्पर छथि।



पटना
कोजागरा
१८-१०-९४

डॉ० रमानन्द झा 'रमण'

समर्पण

प्रणतपाल गुणगार धार्मिक प्रवर भूसुर खण्डवला कुलाब्ज प्रभाकर माननीय मन्महाराजाधिराज मिथिलेश श्री १०८ श्रीमान रमेश्वर सिंह बहादुर जी० सी० आइ० ई०, के० बी० ई०क पाणि सरोरुहमे सादर समर्पण।

श्रीमन !

मैथिलवृन्दक मौलिमौर मिथिलाधिपति परम पूज्य श्रीमाने थिकहुँ। अतएव, मैथिली भाषा साहित्योद्यानक एक नव विकसित तथा सुरभित ई 'सुमति' सुमन श्रीमानक कमनीय कर कमलमे सादर समर्पित अछि। येहि 'सुमति'क सुयोग्य ग्राहक एकमात्र श्रीमाने थिकहुँ। अतः श्रीमानहिकें अपनौला सँ समर्पकके सुमति सुफला होयतैक।

भवदीयानुगृहीत
रासविहारी लाल दास

भूमिका

हम 'मिथिला दर्पण' क भूमिकामे कहि अयलहुँ अछि जे पाठक महोदयकें उक्त ग्रन्थ यदि किञ्चितो कदाचित रोचक तथा लाभदायक होयतैन्ह तौं हम परम उत्साही भैं कोनो नवीनोपहारक सहित गुणग्राही पाठकक सेवामे पुनः उपस्थित होएब। हमरा एतबो आशा नहि छलि जे हमर सन अपटु अपकक ग्रन्थकैं कब्बेरियहु केओ अवलोकन करत। किन्तु—"बड़े सनेह लघुन पर करहीं। गिरि निज शिरन सदा तृण धरहीं। जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरणि धरत शिर रेनू॥" येही धारणा सौं विद्योत्साही गुणग्राही विद्या-विवेकी पाठकक सत्कार तथा महानुभाव सम्पादकक समालोचनाक चमत्कार सौं मिथिला दर्पणक हजारो प्रति समस्त भारतवर्ष, आसाम, नेपाल तथा इंगलैंड प्रदेशमे हाथोहाथ छू: उड़िआय गेल। कियेक नहि? "शारद दारु नारि सम स्वामी। राम सूत्रधर अन्तरयामी॥" जेहि पर कृपा करहि जन जानी। कवि उर अजिर नचावहि बानी॥' किन्तु एतेक भेलहु पर सखेद कहक पड़ैत अछि जे जाहि मैथिल समाजक हेतु उक्त ग्रन्थक रचना कयल गेलि ताहि मैथिल समाजमे उपरोक्त ग्रन्थक आदर स्वल्पतरे भेल। इहो होएब उचिते कियेक तौं ई सत्ये जे 'मणि माणिक मुक्ता छवि जैसी।' अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी।' नृप किरीट तरुणी तनु पाइ। लहि सुयश शोभा अधिकाइ तैसहि सुकवि कवित बुध कहहीं। उपजहि अनत अनत छवि लहहीं॥

अस्तु, हिन्दी भाषानुरागी रसिक तथा प्रेमी पाठकक प्रोत्साहन सौं हिन्दी भाषाक अन्यान्य ग्रन्थ रचनाक परमाभिलाषी भेलहु। किन्तु मैथिली भाषाक रसिक कतिपय विबुध मित्र महाशय अनुरोध करय लगलाह जे निज मातृ-भाषाक उन्नतिये सभ उन्नतिक मूल होइत अछि। अतएव येहि बेरि मिथिला भाषा साहित्येक सेवन करब परमावश्यक थीक। हमरा सभक आधुनिक

सामाजिक दशा परम अधोगति भैं प्राप्तिकें चलल अछि, तैं येहि बेरि मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यास रचना रचू, जाहिसँ समाज पर प्रचूर प्रभाव पड़ैक।

अतएव, हम हस्तगत 'सुमति' उपन्यास रचनाक विवेचना पर उद्यत भेलहुँ। किन्तु ने हम साहित्याचार्य, ने काव्यतीर्थ ने तर्करत्न अर्थात् किछु नहि केवल निरक्षर भट्टाचार्य। तखन कोन योग्यताक बलें समाजक सुयोग सेवाई भै सकब। अस्तु, येही संकल्प-विकल्पक साम्राज्यमे नैराश्यताक आभास भासित होवय लागल। किन्तु येही तर्क-वितर्कक आक्रमणमे जगज्जननी माँ मैथिलीक अनुकम्पा सौं निराश हृदयमे किछु आशाक झाँकी दर्शनक अनुभव होइत। तत्काले स्फुरण भै आएल जे अनन्ताकाशमे खगपति तथा मशकौ तौं अपन-अपन सामर्थ्यानुसारे विचरैत छथि। तें हमहु ओही मंत्राधार पर यथा-शक्ति मिथिला भाषा साहित्याकाशमे परिभ्रमणक प्रयत्न कयल अछि। नभ मण्डलस्थ नक्षत्रादिक दर्शन तौं सहजमे चक्षुपातहि सँ भै सकैत अछि परन्तु भूमण्डल समाजाकाशस्थ चरित्ररूपी नक्षत्रक निरीक्षण तौं उपन्यास रूपी आइ ग्लासहीक [चश्मा] अवलम्बन सौं समाजगत गुप्त प्रकट खानि-खानिक चरित्ररूपी नक्षत्र सूझय लागत। तैं कहि सकैत छी जे समाजरूपी फोनोग्राफक रेकर्ड, समाजरूपी फोटोकमराक लेन्स समाजगत चरित्र प्रदर्शनीक पासपोर्ट अथवा गाइड समाज चरित्रक चित्राधार अर्थात अलबम समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श तथा आधार उपन्यासे थीक। अतएव सामाजिक उप-न्यासक पठन सौं मनुष्य सहजमे अपन दूषित चरित्रकें सुविचार सौं परित्याग कय सकैत अछि। कोन कुकर्म वा सुकर्मक केहेन परिणाम भै सकैत अछि। तै यदि येहि 'सुमति' उपन्यासक पठन सौं विचारशील उपन्यास प्रिय तथा रसिक पाठक लाभ उठौताह तथा समाजक किञ्चितो सुधार करताह तौ हमर परिश्रम सार्थक होयत। इत्यलम।

भवी

ता: १. ८. १९१८ ई०

ग्रन्थकार

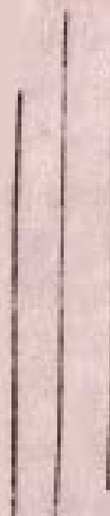
विशेष वक्तव्य

पाठक ! हस्तगत सुमति उपन्यास सत्यतापूर्ण सामाजिक दुर्घटनाक एक चित्राङ्कण थीक । उपन्यासस्थ पात्र-पात्री तथा स्थानक नामक कल्पना पर जल्पना करब असंगत । अतएव विचारशील पाठक-पाठिका कें पठन समय मे यदिकदाचित स्वनाम सौं साक्षात् भै जाइछ तौं ग्रन्थकर्त्ता सौं आकारण रुष्ट कथमपि नहि होथि अथवा उपन्यासांङ्कित घटना कें अपना उपर चरितार्थ नहि करथि किन्तु उपन्यासाङ्कित दुर्घटना सौं पूर्णतया परिचित भै समाज सुधारक विवेचना करथि तथा सर्वसम्मत्यानुसार एक बेहन नियमावली निर्माण करथि जाहि सौं अपार अपव्यय अनुचित विधि-व्यवहार तथा फककुदलालीक आदि सौं भासित समाज कें बचाबथि नहि तौं 'दिन-दिन बढ़य सवाइ रामधन कबहू न लागय काइ' ।

ग्रन्थकर्त्ता

सुमति

(मैथिली उपन्यास)



मुंशी रासबिहारी लाल दास

प्रथम परिच्छेद

'जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ।।'

आइ बैशाख सूदि पञ्चदशीक ठीकाठीक दुपहरक समय थिक । भगवान भुवन भास्करक प्रखर प्रचण्ड रश्मि सौं जर्जरीभूत रौदायल कौआसन मुँह बौने कतेक व्यक्ति मुखमण्डल तथा वक्षस्थल पर जीर्णशीर्ण तौनी सौं वायुकेँ विकम्पित करैत तथा सुखद त्रिविध समीर सेवनार्थ येहि वृक्षक छाया, ओहि वृक्षक छाया तथा येहि दालान सौं ओहि दालान दिशि दौड़-धूप कए रहल छथि। विश्रामार्थी व्यक्तिकेँ संतप्त करैत-करैत दिनमणियो किंचित कालान्तर मे सन्ध्या- देवीक भवनमे प्रवेश करए लगताह । सन्ध्यादेवीक भवनमे पदार्पण करितहि सुधाकर पूर्व नील नभ मण्डलक यवनिका उठाय मंद-मंद मनोहर हँसी हँसैत विकसित भेल चल अबैत छथि । सुधांशुक लालिमा देखितहि प्राची पवनो पिनपिनाय लगलाह । बोध होइत अछि जे अनुतपित व्यक्तिक अङ्ग-प्रत्यङ्ग सौं विभाकरक अनुतापकेँ ताकि-ताकि कय, खेहारय लागल छथि ।

ठीक ओही अवसर पर उद्धव दास पंजिकार कुमार सोनेलालक सिद्धान्त दिवसक निर्णयार्थ श्रीमान सहलोला बाबूक निज नवनिर्मित सदन पर समागत भेल छथि । जाहि स्थान पर पंजिकार प्रस्तुत छथि से स्थान परम प्रसिद्ध पर-लोकगत संचित निधिक विशाल प्रकाण्ड अट्टालिकावलीक भग्नावशिष्ट थीक । जकरा देखला सौं अहुखन धरि विदित होइत अछि जे निधि महानुभावक अध्यक्षतामे उपरोक्त स्थान अपन छवि छटाक आँगा प्रायः राजप्रसादहुक मानमर्य्यादकेँ तिरस्कार करैत छल होएत । किन्तु, सम्प्रति शून्य मशान तथा अति सोचनीय भए रहल अछि । छिन्न-भिन्न भग्नावशिष्ट पर दृष्टिपात होइतहिं दर्शकक सजलनयन वरवश अश्रुवारि सौं सिंचन करय लगैत छैक ।

संचित निधिक मबनक परिपालित व्यक्तिक कृतज्ञ लोचनकें, तँ मोतीक उपहार देने बिना औरो नहि रहल जाइत छैक। ठाम-ठाम सडल-गलल पजेबक गोनौरि, कतहु-कतहु खढौरि, ठाम-ठाम खोंखुड़ जाहिमे गीदड़-सियार मानि बनाय बैसल भटकी मारैत तथा चोरा-नुकी खेलिक अभ्यास करैत तथा कतहु-कतहु कुकरी गगनोन्मुख भै भौं-भौं कय भुकैत देखि पड़ैत छैक।

जिज्ञासु पाठक ! श्रीमान् सहलोला बाबूक परिचय सौं अपने प्रायः अपरिचिते होयब, खेद ! विशेष परिचय पंजिकार महाशय सौं बूझि समयोचित पर प्रकाशित करब। किन्तु, सम्प्रति हम एतेक अवश्य कहब जे हिनक पूर्व पुरुषा किछु साधारण व्यक्ति नहि। बड़े नामी-गामी, परिश्रमी, उद्योगी, साहसी, मितव्ययी तथा अर्थशास्त्रमे बड़ निपुण, जाहि प्रसादे बीसो हजार टाकाक वार्षिक आय हाथी-घोड़ा, सर-सवारी, गाय-महिंसि, घर-मकान, नौकर-चाकर सौं परिपूरित छलथीन्ह। किन्तु, खेद ! अपन प्रभुत्वमे विपुल अपव्यय, पराान्नभोजी परकुटुम्बक घमघट तथा हुनके गमक सरस्वाहित्य दायित्वक कारणें पूर्वाभ्युदयक सौभाग्य मदन सौं बहिर्गत भै गेल छथि। परन्तु, ईश्वरानुग्रह सँ अष्टसिद्धि रूपिणी आठ सन्तान अर्थात् चारि बालक तथा चारि बालिकाक सौभाग्यक पुनरभ्युदय भेलैन्ह। बालक प्रभृतिक नाम हीरालाल, जवाहिरलाल, मोती लाल, सोने लाल और बालिका विश्वमोहिनी, मदनमोहिनी, कामिनी तथा दामिनी छलैन्ह। सहलोलापनक साम्राज्यमे पूर्वोक्त क्रिया-कलाप मखशालाक होम मध्य असीमाहुति दैत-दैत बीसो हजारक आमदनीवला भू-सम्पत्तिकें स्वाहा कए देलन्हि। नितान्त मे भाव केवल हजारेकहिक वार्षिक आय बाँचि गेल छैन्हि। ओही श्रीमान सहलोला बाबूक अन्तिम पुत्र कुमार सोनेलालक सिद्धान्त ज्येष्ठ बदि ७मी शनैश्चरक दिन निर्णय कराय पंजिकार प्रभात समयमे पाँच मुद्रा पुरस्कार प्राप्ति कय मायापुरी प्रस्थान कयल। तदन्तर श्रीमान सहलोला बाबू सिद्धान्त बरियातक ठाठबाटक विचारार्थ निज दयाद कुबेरनिधि, रत्नपतिनिधि, माणिकचन्द्र निधि, पद्मनिधि, मुकुन्दनिधि परसमणि निधि, पोखराजनिधि, विद्रुमनिधि तथा

कौरशङ्खनिधि अर्थात् नवोनिधिक संग दालान पर बैसल-बैसल परामर्श करय लागल छथि।

अनुभवी पाठक ! अपने आब आगाँ कनेक देखैत चलू। श्रीमान सहलोला बाबू अपन अवशिष्ट सम्पत्तियहुकें कोनविधि सँ निःक्षेप करबा पर कटिबद्ध भेल छथि। निक्षेप करबे करताह दोसर आन कोन कार्य मध्य, ई कि कोनो नवीन घटना थिकैन्हि, वैह औ वैह ! अरे कनेक कहबो तँ करू केवल हुँ-हुँ कयनहि तौ ककरो बूझि नहि पड़तैक। अहः अपनेक बहुनि पर किञ्चितो नहि चढ़ैत अछि ? नहि चढ़ैत अछि तौ हमरा सौं बूझू, नहि तौ आगाँ चलू।

'सिद्धान्त-ब्याह'। बस-बस सन्धिविच्छेदक आब थोडा कोनो प्रयोजने नहि। पट्टुवत उपस्थित भै गेल "सिद्धि + आ + अन्त = सिद्धान्त, तथा वि + आह = ब्याह ! भावार्थ जे सिद्धान्त विवाहमे सबकी कें अन्त करैत-करैत आजीवन विशेष आह भरैत रही। की ? येही अर्थ पर ने अपनेक लक्ष्य अछि ? वाह ! वाह !! अपनेक तीक्ष्ण बुद्धिक की विलक्षणता बूझि पड़ैत अछि। अपने तौ साक्षात् लालबुझक्कड़े बूझि पड़ैत छी।

उचितवक्ता दास–औ बहलोल बाबू लोकनि ! विमोहवशे सिद्धान्त विवाहमे विपुल व्यय कयलहि सौं केयो सूर नहि कहौलक अछि। देखू गोस्वामी तुलसीदास महानुभाव बहुत ठीक कहलैन्ह अछि "जरहि पतङ्ग विमोहवश भार बहहि खर वृन्द। ते नहि सूर कहावही समुझि देखु मतिमन्द॥"

अस्तु ! श्रीमान सहलोला बाबू सिद्धान्त विवाहक एक विशेष प्रबन्ध रचय लागल छथि। बहलोल बाबू कहैत छथीन्ह, औ भाईजी ! हमरहु लोकनि येही सिद्धान्त विवाहक मारल दीनाहीनावस्थाक पङ्कमे पतित भै गेल छी तथापि येहनो स्थिति मध्य जखन कोनो सिद्धान्त विवाह करक पड़ैत अछि, तखन अपना अवस्था कें विचारब नहि लगैत छी। खेतो-पथार बेचि जी-जान उपैछि-उपैछि हाथी-घोड़ा, नटुआ-बजनिया, सौं बरिआत सजबे करैत छी, अपने तौं धनाढ्ये छी, तखन जौं अपनेहि नहि करी तौ दोसर करबे के करय ?

सेनि बहुआ अपनेक अन्तिमे पुत्र थीक, एकर सिद्धान्त विवाह सभक सिद्धान्त विवाह सौं विशेष समारोह सौं सम्पन्न करिऔक, जे लोक हँसय नहि। नहि तौं ककरा सौं हँसबाक बड़ लाज होयत।

उचितवक्ता दास–औ खोपड़ीक रहनिहार राजभवनक स्वप्न देखनिहार। बरियात सजबाक समयमे अपने मिथ्या भाकभीस सौं सुरपतिपहु कें मातु करबा पर माथ किऐक मुड़बैत छी ? "चिन्हारे अहाँ छी······करैछी कि सौंतें"।

प्रिय पाठक ! श्रीमान सहलोला बाबू यद्यपि एखन पूर्वाभ्युदयक सदन सौं बहिर्गतप्राय छथि तथापि पुरजन-परिजनक पीठ ठोकौअलि सौं भादवक पौरा डाबुलहि जकाँ फूलि उठलाह और बहलोला बाबू सौं बलबलाय-बलबलाय कहय लगलथीन्ह–"औ बहलोल ! अहाँ बहलोल और हम सहलोल हमरहि अहाँकें सौं बरियात पावस पमोदमे नाकशाक-नाकशाक करक पड़ैत अछि। यदि अहाँ कहये करैत छी तौं हमरो आब दोसर कोनो कर्त्तव्यता अछिए नहि, जकर चिन्ता करब। बेस ! अहाँ सबहि आब हमर बरियात सावनक घटा पर जटा जुनि पटकैत जाउ। यदि अधिक नहि तौं कम्मो सौं कम्म पन्द्रह हाथी, पच्चीस घोड़ा, पाँच खड़खड़िया, दू-चारि बरहदरी, एक लामगीरा, दश पन्द्रह फर्द, दरी-जाजिम, दू-एक गिरोह नट्‌आ तथा पाँचो प्रकारक बाजा तौं अवश्य चाही तखन येहि सौं अतिरिक्त जहाँ तक जे जहाँ, अहाँ सभ प्रयत्न कय सकी, से करैत जाउ। उपरोक्त आडम्बर पर बहलेल दासहुक मनक आवेग थम्हि नहि सकलैन्ह, कहय लागल छथीन्ह, "औ काकाजी ! अपने जखन एतेक करबे करबैक तखन बेचारा रवाइसेक येहन कोन पूर्वजन्मक तपस्याक चूकि छैकि जे ओकरा विमुख करैत छियैक"। ताहि पर श्रीमान सहलोला बाबू कहैत छथीन्ह, बेस-बेस ! अहाँ बहलोल, बहलोल लोकनि– "जस-जस सुरसा बदन बढ़ाया। तासु दुगुन कपि रूप देखावा" कयल करू। अस्तु ! उपरोक्त खण्डन-मण्डन तथा समर्थन होइत-हवाइत सिद्धान्तक दिवसो आइ पहुँचि गेल। बह्म मुहूर्तहि सौं श्रीमान सहलोला बाबूक सदन पर बरियात सवाङ्गक सकल सामान शनैः-शनैः सज्जित होअय लागल अछि।

अन्तःपुरहु मध्य स्वजन-परिजनक सौभागिनी शुभाङ्गना बनिता, स्वर्णलता, हेमलता, ललिता, सुशीला, चपला, चञ्चला, चन्द्रकला, मनोरमा, श्यामा, इन्दिरा, तारा, लीलावती, मालती, सरस्वती तथा दमयन्ती प्रभृति वीणा-विनिन्दित स्वर सौं सामयिक शुभगान करैत प्राङ्गण कें प्रमुदित करय लगलीहि। येहि समाजक कलरव सौं अनुमान होइत अछि जे भवनक संकीर्णताक संकोचे विपुल उत्साह प्राङ्गण सौं उफनाय-उफनाय बाहर बहि चलल। बरियात भोज्यहुक एक विशेष विन्यास भै रहल अछि। भोज्य कबराकूट करैत-करैत बरियाती दल सन्ध्याक समय विचारपुरक उद्यान अर्थात् सिद्धान्तक स्थान पर प्रस्थान करय लागल।

द्वितीय परिच्छेद

सिद्धान्त

'कोउ सकहि न करत बखाने,
जेहि लगी लगन सोइ जाने।'

श्रीमान सहलोलाबाबूक भृत्यगण आइ एक दिन पूर्वहि सौं सिद्धान्तस्थल कें सुसज्जित कय रहल छैन्ह। -फरशिगण सामान्य शामियाना कें तिरस्कार करैत एक चौसठि खम्भा ओसाराबाला विशाल लामगीराक प्रत्येक स्तम्भ कें एकरंगाक खोल सौं आवरणित कय ठाढ़ कयलक अछि। अधोभाग कें कान-पुर एलगिन मिल्स कम्पनी तथा आगराक मनोहर सौं मनोहर दरी गलैचा सतरंजी, कम्बुष्टरपेन (जाजिम) सौं सुसज्जित कय रहल अछि।

आलोकदर्शक अर्थात् मशालची गण बम्बई किटसन लाइट तथा कल-कत्ता औसलर ग्लास कम्पनीक चक्षु कें चकचोन्हिआवय बाला झाड़फानूस, हाँडी तथा दिवालगीर गैरह सौं लामगीरा कें दर्शनगर्वत हृदय कें हरण कय रहल अछि। अहमदाबाद कण्डील (मोमबत्ती) कम्पनीक एजेन्ट बण्डिलक

बरिआते प्रजेन्ट (उपस्थित) कय रहल छथि। मालीमण्डली मनोरम वन्दनवार पताका तोरणादिक सौं सामगीरा कें विभूषित कय रहलि अछि। एवंप्रकारें प्रतेक कार्य्यकर्त्ता अपन-अपन कार्य्य कौशलताक नमूना देखाय-देखाय सिद्धान्तक दिन बरियाती दलागमनक बाटाबाटी टकटकी चकोरवत् लगौने छथि। रात्रिक नौ बजैत बजैत श्रीमान सहलोला बाबू दलबल सहित उपरोक्त स्थान पर उपस्थित भेलाह। स्थान पर पहुँचैत मात्र आतशबाज द्वारा स्वागत सूचक दश-बारह बोट बमगोला लगातार धड़ाम-धड़ाम कय छोड़ल।

आइ पहर दिन अछैते कन्याप्रद मनोरथ लाभ सामान्य रीतियें केवल बीश पच्चीस व्यक्तिक संग सिद्धान्त स्थल अर्थात् विचारपुरक उद्यान मध्य समागत भेलाह। श्रीमान सहलोला बाबूक राजसीय ठाठबाटक तैयारी देखि-देखि विमुग्ध भै गेल छथि। शेष समय मे अनावधान अन्यान्य वृहत्प्रबन्ध कइये की सकैत छथि तथापि जहाँ तक 'सांस तहाँ तक आश, करैत ढिबारि अनुचरक सहित सरबरार दड़िभंगा बाजार पूर्वपरिचित महादेव साहुक कोठी पर पहुँचलाह और साहु सौं वार्तालाप कय हजार रुपैयाक एक हैण्ड-नोट (हस्तुलतमक चिट्ठी) लिखि साहुजीक हस्तमे समर्पण कय कोठी सौं हजारो मुद्रा मुठिआय लेल। तदनन्तर जेहन देवता तेहन पूजाक निमित्त विशेष-विशेष सिद्धान्तक उपयुक्त सरञ्जाम बाजार सौं बन्दोबस्त कय पुलकित होइत दीन दयालु कृपालु प्रभुक दरबार मे प्रस्तुत भेलाह और अश्रुपूर्ण मनभरल कण्ठक सहित आशुतोष श्रीमान महाराजाधिराजक सेवामे उपस्थित भै निवेदन कयलन्हि। श्रीमन्! सेवक कन्याक सिद्धान्त आइ सन्ध्या समय विचारपुरक उद्यान मध्य होयतैक तदर्थ सरकारक शरणापन्न भेलहुँ अछि। जाहि सौं सिद्धान्त मध्य विशेष शोभा-सुन्दर होइक। तज्जन्य आज्ञा सेवकके प्रधान कयल जाइक। आद्रचित श्रीमान् महाराजाधिराज सौं तत्काले हुकुम देल गेलैन्हि जे प्रार्थक कें एक विशेष बरियातक समुचित सामान अर्थात् पच्चीस हाथी, पच्चास घोड़ा, तीन तामदान सकल सामान सहित दशवाहन नामक सामगीरा, अंगरेजी बाजाक बैण्ड, स्वदेशी दू-तीन गिरोह नर्त्तक तथा दशबारह

प्रकारक बादन, सिद्धान्त शोभा-सुन्दर निमित्त तुरन्त देल जाइन्हि। आडर (आज्ञा) पास होइत मात्र सकल सामान बातक बातमे जखन प्रस्तुत भै गेलैन्हि तखन मनोरथ लाभ जी पुरन्दर सम शोभा धारण कयने सन्ध्या समय पाँच बजैत-बजैत सिद्धान्तस्थल पर प्रत्यागत भेलाह। राज दरबारक चतुर कार्य्यकर्त्ताक दक्षता सौं घहराधेक भीतरहि भीतरमे मनोरथोक एक विशद् विस्तीर्ण पण्डाल (सभा मण्डप) आनन-फाननमे सर्व्वाङ्ग सौं सुसज्जित भै श्रीमान सहलोला बाबूक पण्डालक आमने-सामने एक अनुपम छटा छहराबय लगलैन्हि।

उपरोक्त व्यक्तिक विशेष परिचय बुझबाक हेतु हमर कतेक जिज्ञासु प्रिय पाठक कें उत्कण्ठा लागि गेलि होयतैन्हि।

पाठक! हम अपनेक उत्कण्ठा कें छोड़यबाक हेतु अचूक चेष्टा कय रहल छी। समयोचित पर उक्तव्यक्तिक पर्य्याप्त परिचय प्राप्ति कराय देब। परन्तु, एखन हम एतेक धरि अवश्य कहि सकैत छी जे मनोरथ लाभक पिता पितामह अर्थशास्त्रमे परम पण्डित कमलचौंमि मक्खीचूस मनहूस कार्पण्यमे कृपणताक साक्षात् अवतारे छलथीन्ह जाहि कारणे लाभ जी कें बहुतन धरि साए सावालाए बिगहा लाखराज दू-चारि साए बिगहा जिराती तथा काश्ती छैन्हि। सम्प्रति अएगहु आलापुर प्रगन्नाक एक बीश-पचीस हजार रुपैयाक आमदनीवाला मौरूसी पटवारी छथि। दैयलि बैठदैयलिक औहि ठाम मान-दान विशेष तरहेँ छैन्हि। किन्तु एतेक योग्यता भेलहुँ पर जखन तीन रुपैया दरमाहावला मजकूरी सिपाही मौजे पर अबैत छैन्हि तखन देवतहि जकाँ पुजबैत तथा तुम-ताम, रैन्ने छोड़ि दोसर आन कोनो कथे नहि मुँह सौं बाहर करैत छथि। किन्तु घर परतौं अपन प्रशंसाक गुलछर्रा नौ डाकी ढकैत रहलाह तखन तौं साक्षात् राजसीयें ठाठ-बाट सौं सभामण्डपमे विराजमान भै रहल छथि।

उभयपद अपन-अपन गोल बान्हि सुसज्जित तथा मंत्र मुग्ध भेल उप-वैशित छथि। युगल सभा मण्डप मध्य भागमे एक सजल घट (झाड़ी वा

गोबनी) पुष्पमाल तथा नवपल्लव सौं विभूषित स्थापित छैन्हि। द्रुइ दलक गजाबजाविकल मनरव सौं सिद्धान्तस्थल अति गुन्जारित भै रहल अछि। औहि अवसर पर बलगोल केहरिक एक विकटनाद हठात् सभा कैं निरवावस्था मध्य प्राप्ति कय देलक। क्षणेकोपरान्त निस्तब्धता कें भंग करैत सरदारी तथा बिचारी मल्लिक पञ्जिकार प्रभृति युगलदलक नेता सौं सिद्धान्तकर्त्ताक अर्थात् लोटा उठौनिहारक परामर्शार्थं परिक्रमा करय लगलाह। एक पक्षक सिद्धान्तकर्त्ताक निर्णय करैत प्रतिपक्षीक दिशि झुकैत गेलाह। उभय पक्षक सिद्धान्तकर्त्ताक निर्वाचन भेला पर सरदारी मल्लिक प्रधान पञ्जीकार अग्रसर भै सभासद सौं निवेदन करय लागल छथीन्ह, "श्री सभासद! अपने सबहि सौं हमरा किछु बिन्ती कर्त्तव्य, साकांछ भै श्रवण कयल जाय। सम्प्रति बहलोल पुराधिपति सञ्चित निधिक प्रपौत्र उचित निधिक पौत्र श्री सहलोला निधिक पुत्र चिरञ्जीवी कुमार सोनेलालक सिद्धान्त मायापुरी निवासी मधुकर लाभक प्रपौत्री सोमनाथ लाभक पौत्री तथा श्री मनोरथ लाभक चिरञ्जीवनी पुत्रीक प्रतिये प्रस्तावित अछि। अपने सबहिक सम्मति यदि हो, तौं सिद्धान्त पढ़ायल जाय।"

उचितवक्ता दास—श्री पञ्जीकार प्रवर! कथा तौं सभ तरहें समतुल अधिकार जाँचि लेल अछि जे सिद्धान्त पढ़यबा पर अपने उद्यत भेल छी?

सरदारी मल्लिक पञ्जीकार—उचितवक्ता दासजी! हम पञ्जीकार प्रभृति अधिकारक अनुसन्धान धर्म्मशास्त्र ('पञ्चमात् सप्तमादूर्द्धं मातृतः पितृतस्तथा' इत्यादि) तथा तुरपुर प्रवासी राजा हरिसिंह देव निर्मित पञ्जी प्रबन्धानुसारें कयल अछि। येहि युगलजोड़ी अर्थात् वरकन्या कें स्वाजन्यता नहि छैन्हि। जखन अनाधिकार नहि तखन सिद्धान्त पढ़यबा मध्य कोनो बाधा बोध नहि होइति अछि। एवं प्रकार पञ्जीकारक सरटीफिकेट (स्वस्ति) देला पर सर्व सम्मति सौं सिद्धान्त अनुमोदित भै गेल। तत्पश्चात् पञ्जीकारायगण्य सरदारी मल्लिक उभयपक्षक सिद्धान्तकर्त्ताक पद्महस्त सौं पूर्व स्थापित पात्रकें ग्रहण करबाय सिद्धान्त संकल्प पद्धतिक पाठ करय लगलाह। विसर्जन

होइतहि चतुर्दिक सौं "शुभमभूयात्, "अर्थात् शुभ हो शुभ हो" वाक्यक फूल-वर्षण होबय लागल। तदनन्तरे सभास्थ सभासदगणक सम्मानार्थ नाना प्रकारक सुगन्धि अर्थात् ओटो-दिलबहार, ओटो-दिल-चमन, ओटो-डी-मोतिया, ओटो-डी-खसखस, ओटो-डी-रोज तथा वाटर-डी-रोज अर्थात् गुलाब जलक सिञ्चन तथा मसाला पानपुञ्जीक वितरणक विपुलता सौं सभासद ओतप्रोत भै जाइत गेलाह। पान-सुपारीक तौं एक पथारे पसरि गेल। येही अन्तरालमे सरदारी मल्लिक बिचारी मल्लिक, कृपाकर मल्लिक, फल्लर मल्लिक, बिलट मल्लिक, मोचन दास शोधन दास, अपूछ दास, अज्ञान सिंह दास, बकेल दास तथा बहुलैल दास लोकनि सिद्धान्तकारक पाणिसरोरुहमे अन्वजन पत्र कैं सावनक बुन्दहि जकाँ झहरावय लगैत गेलाह। पत्र प्रवर्ध्यक झटकौअलि निवृत्ति भेला पर गणना होबय लागलि तौं ९९ नोट ठहरल। यही निनानब्बेक फेरिक प्रवाहमे पड़ल वरपक्ष तर्क-वितर्कक महासागरमे उपलाय लगलाह। वर-पक्षक दलमे बहुतोक महानपुरुष हकार पुरय गेल छलथीन्ह। विनायक दत्त मुख्तार सहलोला बाबूक दशा देखि ढाढ़स दैत संबोधन करय लागल छथीन्ह, "बाबूजी! इसमें घबड़ाने की कौन-सी बात है। आप झटपट उस झटकौअल को छोड़ छटौअल को पौड़ से टटोलिये तुरत थाह पा जायेंगे।" मुख्तार साहिबक उपदेश वस्तुतः वरपक्षक हेतु औहि समय कर्णधारक काम कय गेलैन्ह। काटछूट कए कूट करय लगलाह तौं केवल उनचालिसे उपस्थित और साठि तड़िअयले अर्थात् अनुपस्थिते। दिव्य दृष्टि सौं देखल गेल तौं अन्तिम क्षणमे विशेषतर चिशु मल्लिक, नर्भू मल्लिक, बलहू मल्लिक, अन्धर दास, पल्हू दास तथा जरदृगव दास प्रभृतिहिक अन्वजन पत्र प्रस्तुत छलैन्ह। तखन कथमपि उसमठश् मध्य श्रीमान् सहलोला बाबू धनशाली व्यक्ति छलाह। तैं गुफल लेलैन्ह किन्तु उक्त स्थान पर यदि आइ अकिञ्चन दास वरपक्ष रहितथि तौं हुनक की दशा होइतैन्हि तकर अनुभव कलकत्ता काली-घाट, आसाम, कामाख्या, काशीविश्वनाथ, प्रयाग, त्रिवेणी तथा हरिद्वार हरपैड़ी तीर्थस्थानक भुक्तभोगी अनुभवी पाठक स्वयं कय लेथु।

उचितवक्ता दास–'तीन बुलाए तेरह आए देख यहाँ की रीत। बाहर वाले आ गये घरके गावे गीत।' औ विचारवान पञ्जीकार जी ! येहनि धर्मीहि कियैक ? अपने सबहि अखन पञ्जिप्रबन्धानुसारे अधिकारक जाँच कयनैत छी, तखन कतोक सिद्धान्त त्रुटि अथ त्रुटि कियैक जाइत अछि ? अपने तौं पञ्जीक मर्मज्ञ छी, हरिनाथ शर्माक कथा स्मरणे होयत, स्वजनागामीक दोषे शर्म्मा जी चण्डाल प्रमाणित कयल गेलाह।' उक्त दोषारोपणक निवारणार्थ पञ्जी प्रबन्ध निर्म्मित कयल गेल जे भविष्य मे एतादृशी यातना पुनः ककरो भोगय नहि पड़ैछि। शास्त्रकार तौं स्वजनगामीक दण्डविधान रौरव नर्क निवासे निर्णय कयने छथि। परन्तु, अपनेक न्याय मध्य येहन नियमावलीक उल्लंघन कयनिहार पञ्जिकान्ध अज्ञानसिंह दास सिद्धान्त पढ़ौनिहार पञ्जिकारक दण्ड विधानक निर्णय हम विचारशील पञ्जिकार तथा न्याय प्रिय पाठकक विचाराधीन छोड़ैत छी।

विचारशील पाठक ! येहन-येहन आकस्मिक गण्डगोलक आन्तरिक कारण बुझल ? यदि कोनो पाठक कैं बोध नहि भेल होइन्हि तौं ओ आइ तारीख सौं उपन्यास पढ़ने परित्याग कय देथु या विशेष मननशील होथु। अकिञ्चन दास बरपक्षक मन खुट-खुट करैत रहैत छैन्हि, जे यदि कदाचित् कथाक विशेष घोलघाल होयतैन्हि तौं पञ्जीकार ठट्ठक अल्लमल्लमे पड़क पड़तैन्ह। तन्निमित्त पञ्जीकाराचार्यक अथवा अपन अज्ञात पञ्जीपट्ट व्यक्तिक सम्मति लेबा सौं मुँहमोरि नैन कथि तैं उपन्यासकार पञ्जिकारक घटकैती कसौटी पर कसले नहि जाइत छैन्हि ! अष्टपट्ट सिद्धान्तक माथा हाथ दय "निरस्त पादपे देशे एरण्डोपिद्रुमायते" भै मनवाञ्छित फल प्राप्ति कय लैत छथि। सिद्धान्तोत्तर जाँच कयला पर यदि कदाचित् ओहि पञ्जीकारक पञ्जीवृत्तिमे अदूरदर्शिता, अपटुता अनभिज्ञता प्रगट भै गेलैन्हि तौं महा कौलाहल उठैत एक दोसरे सिद्धान्ताभिनयक यवनिका उठय लगैत छैन्हि।

जिज्ञासु पाठक ! येहि अश्वकाण्डमे श्रीमान् सहलोला बाबू कैं सहस्राधिक मुद्रा दातव्य भेलैन्हि। अस्तु बरपक्षक जिज्ञासा भै गेलि। आब कनैक

कन्यापक्षक खोज पुछारी करब उचित थीक। कन्यापक्ष मनोरथ लाल जे हजार टाका सिद्धान्त तीर्थक निमित्त ऋण लेलैन्हि ताहि सौं ओहो कोन रूपे सुफल भेलैन्हि से सुनू। हजारी टाकामे नौ सय सिद्धान्त इलबाइस तथा लम्फ-लम्फामे शुल्का भै गेलैन्ह। आब सहस्रक शुन्य सौं शुन्ये हाथमे केवल एक्के सए रहि गेल छैन्ह। किन्तु उक्त तीर्थस्थान पण्डाक "प्रतिपन्न स्याछन्न"क रगड़-झगड़ तथा दान-प्रदानक दायित्व पड़ले छैन्हि। राजक हाथी घोड़ाक जमादार जहरतुरकी खाँ तथा अंगरेजी-बाजाक-बैण्ड मास्टर मिस्टर शैतान क्रमशः २६५) तथा ३५) रुपैयाक एक-एक हैण्ड बिल्ल (चिट्ठा) मनोरथ लालक हाथमे दय-दय कहय लगलैन्ह "दीवानजी ! अब हमलोगों को भी मुताबिक बिल्ल के बिदाइ-सिदाइ दे देकर जल्द रोखसत कीजिये"। बिल के देखितहि दीवान जी कैं १०६ डिगरी बोखार चढ़ि अयलैन्ह। ठामहि हहुआय लगलाह। लाभजीक पुरहित सुमन्त झा सुमंत्रणा तथा झाड़फूकमे परम प्रवीण यजमान कैं हुलकी-लागि सौं हुलकैत देखि झट मनोरथक माथा हाथ दय लागि-थूनि उतारबाक मंत्र पढ़ि-पढ़ि मुँह पटपटावय लगलाह। मंत्र सौं मनहि मन पढ़ैत छलाह जाहि सौं ककरो कर्णगोचर होइतहि नहि छलैक। किन्तु मुख सौं कहुखन-कहुखन हठात् प्रकाश भै जाइन्ह जे "आहाँ लोकनि अपन-अपन धन-सम्पत्ति येही समये निरर्थक फुरैकाय करैत जाइत छी। अरे ! आबहु तौं चेतैत जाइ जाउ। आबहु यदि चेतैत नहि जायेब तौं भिखारियो सौं पत्तर भै जायेब।" 'हमरा लोकनि सिद्धान्त विवाहमे यदि हाथी, घोड़ा, नटुआ, बजनिया नहि करैत छी तैं कि हमरा सभक विवाहे नहि होइत अछि।' 'एक विकौआ बाभन बीसो विवाह बिना खित्ते कय छोड़ैत छथि। कतोक कट्टर धनार्थी तौं–'जातिर्यातु रसातलं गुणगणः तस्याप्यधोगच्छ "सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्तिक" अर्थ कैं सार्थक करैत धनलोलुपताक कारणे गाय नौ वर्षीया बालिकाक विवाह पचास साठि वर्षक बालक सौं कय दैत छैक। कतोक अर्थलोलुप सुता विक्रेता तौं ताकि-ताकि कय दण्डहस्ती, चर्म्मलम्बी, चिबुक चोकटिय, दन्त विगलित, धवलकेशी विदेशी नवयुबक सौं

कन्याक पाणिग्रहण कराय दैत छैक। कतोक तँ गविपूर्ण कय किछु टाका खसायाओ लय गेल। बस् ओतबहि मध्य सिद्धान्त विवाह सम्पन्न कय लेलक। हमरालोकनिक वैवाहिक, सर्वोपर्य गहुने निट्ठाह बन्धन अछि जे वर्णान्यिक कण्ठधर कैम्बोपात निरर्थ जाय, नहि सकैत अछि। विवाह विधियो मेहने सुगम रीतिक रहने छी जे स्वल्पहि मध्य सभ कार्य्यक समावेश कय लैत छी। यदि सकतो किछु विशेष व्यय करबाक इच्छो भेलैकि तँ कथा पठाय,सटना पर पञ्जीक कार्बिल्लार कें, दू-एक टाका फीस दय अधिकारक चिट्ठी अंचवाय लेलक। सेहो लेलक नहि, तँ ओहो नास्तिये। कतोक विधिया तँ सुद्धान्तक सन्ध्या समयमे कथा पठाय-सठाय गरुड़गति सौं गमन करैत भोर होइत-होइत कन्यागतक भवन पर पहुँचैत छथि। वैवाहिक सकल सामान यथा विहित कन्यापक्षक भवन मध्य पूर्वहि सौं ओरिआओल रहैत छैन्हि। विवाहक शुभमुहूर्त्त यद्यपि पत्रहि मध्य पचराय जाइत छैन्हि तथापि ठेलि-ठालि कय विवाह भोर कहये कोठैत छथि। जहाँ लोकनि जैना उपार्ज्जन करय चनैत छी तेना यदि समर्ज्जन करय जनितहुँ तँ, प्रायः एको व्यक्ति की दरिद्रछीमर्हि दृष्टिगत होइतहुँ? किन्तु हमहि अपन प्रशंसा की करू, आइ काल्हि तँ हमरहु समर्थ लेनदेनक बाजार गरमे भेल जाइत अछि। पूर्वोक्त महामंत्रक डाकनि दैत-दैत पुरहित जी मुँह सौं फू-फू करैत मनोरथक माथ पर हवा छोड़य लगलाह, जकर प्रभाव सौं लामजीक लागि छूबि तत्काले उतरि गेलैन्हि। तखन कुलकुराय कय उठि बैसलाह और पूर्वकथित बिल्लमे लगलाह कौताही करय। ताहि पर विकट संग्रामक सामना करय पड़लैन्ह। साइस-महाशय सभ अपन-अपन पुरस्कारक क्षीणता सुनि लामजीक स्वचाहन्त करैत अपशिष्ट-सर्वार्थ कय बात कहय लगलैन्हि। ताहि पर सामवी दुर्वासाजी पं. मिसिर और जोखावेगसँ कहय लगलथीन्ह "हम आब अहाँ सभकें एको कौड़ुआ नहि देब।" "नहि देब"क नाम सुनतहि ओ सभ अवाच्य कथाक और प्रयोग करय लगलैन्ह "साले हरामी के पिल्ले! जब लेने पास ज़र ही नहीं था तो तुमने "जर,मट्टी" ला इतना टेढ़े क्यों किया"। राष्ट्रीय सनाढ़्य की छीछालेदर करना सहज बात

नहीं है, अब भी हमलोगों को दक्षिणा देता है कि और भी कुछ सुनकर टेंढ होवेगा।"

खेद! नितान्तमे स्वैचाहन्त कराय बड़कन सुनि झखमारि मनोरथ लाभ बाबाराउत जेठरैयति सौं दुइ सय टाका हथपैंच लय बिल्ल मुताबिक रुपैया चुकाय अपन मनोरथलाभ कयल। सिद्धान्त शेष भेला पर उभय पक्ष अपन-अपन गृहागत भै सिद्धान्तक अवशेषाङ्क सम्पन्न कय स्वस्थ होइत गेलाह।

अनुभवी पाठक! सहलोलपन तथा देखाउसिक प्रतिफल देखल? उभय पक्षक टाका बाटहिबाट फाका भै गेलैन्ह एको समधीक स्वार्थतामे अवितैन्ह तँ सन्तोषजनक कहि सकितहुँ। युगल समधीक व्यर्थाडम्बरक चित्रपट देखि कहय पड़ैत अछि जे—सामान्यहि सौं करू समतुल ब्याह प्रीति अरु बैर। यथाशक्ति विभवानुकूल करबेहिमे अछि खैर। नहि तँ "सम्पति भरम गमाय कैं मूल हेरत अति-हीन। रजनी सौं त्याजित शशि लहहि न शोभा दीन॥"

तृतीय परिच्छेद

विवाह प्रकरण

हम नहि आजु रहब येहि आङ्गन जौं बुढ़ होएत जमाय।

वर्षाभ्यन्तरमे मनोरथ लाभ कैं अनुमान एक दर्जन पत्रिका घर सौं देहात पर गेलैन्हि जे अपने कान मे तूर देने देहात पर बैसल छी, घर मध्य कन्या आब रक्षणीया नहि अछि तकर चिन्ता लेशमात्रो नहि रखैत छी, गाम मध्य सभ अपन-अपन कार्य्य कर्त्तव्य निवाहि लेलक, केवल अपनहि पाछाँ पड़ि गेलहुँ अछि।" एको रातुक हेतु तँ गाम पर आबि सलाह विचार कय जाउ। बारहम पत्रिका हस्तगत भेला पर आइ फाल्गुणी आमावस्यामे मनोरथलाभ घर आएल छथि। पुरजन-परिजन स्वजन सभ कुशल-क्षेम पूछि-पूछि कहय लागल छथीन्ह "अपने येहि बेरि बहुत दिन पर गाम अयलहुँ अछि? "बनियाक विवाहदान बहुबेरि करबैक कि अनेठाइये देबैक!"

मनोरथ लाल—औ भाइजी ! की कहू एक तँ एखकल नौं अखेकोक अवकाशे नहि होइत छले। थोमस साहेबो येहने भूताह छले कुरसतीक नाम सुनैत मन्ता हण्टर (डण्टा) घुमाय आँखि मूने दौड़ैत छलैक अछि। वान्दन कृपा सौं एखन ओ जलवायु परिवर्त्तनक निमित्त तीन मासक हेतु दारजीलिङ्ग आएल छथि। कतेक कहला-कहौला पर एक मासक छुट्टी देलैन्हि अछि। अपने राम तँ गाम पर विश्रामाने छलहुँ, किन्तु नहि विवाहक एक शुभ दिन मञ्जूरीक हेतु बहलोलपुर पठबाय देल, स्वीकृत भेला पर तँ हम कोनो धराने नयबे करितहुँ। अस्तु ! गतन्त कँ आब सोचन्ते की काल्हिये अपने सबहि बैसि ज्योतिषीजी सौं एक नीक दिन तकवाय हजामक हाथे पठबाय दियौक। यदि प्रस्तावक अनुमोदन समर्थन भेला पर पूर्व-पश्चिमक नाना प्रकारक गप्प-शप्पक वारिहान लागय लागल। वारिहान उतरला पर सबहु गोटे क्रमशः अन्तर्ध्यान होइत गेलाह। तदन्तर मनोरथ लाभो स्वाङ्गण समागत भेलाह और भोजनोत्तर शयनागारमे निद्रा देवीक आवाहन नाक द्वारा करय लगलाह। प्रभात समयमे लालजी शौचादिक सौं निवृत्त भै पुनः दायाद प्रभृतिक एक विशेष अधिवेशन कयल। दिनमणि झा ज्योतिषी पत्रा कँ उलटि-पुलटि देखैत-देखैत फाल्गुन सुदि पुनीत पुर्णिमा शुक्र विवाहक शुभ दिन निर्णय कयलैन्हि। येही दिनक निर्णय पत्र लिखवाय मोचन ठाकुर हजामक हाथे बहलोलपुर पठौलैन्हि, मुनहारि सांझ होइत-होइत हजाम ठाकुर बहलोलपुर श्रीमान् सहलोला बाबूक डेउढ़ीपर समागत भेलाह। हजाम ठाकुर विवाहक निर्णय पत्र लयलाह अछि। ई शुभ समाचार सुनितहि नर प्रद अति हर्षोत्फुल्ल भै हजाम ठाकुरक विशेष अह्लाद करय लागल छथीन्हि। हजाम ठाकुरक शुभागमनक समाचार हवेलीमे पहुँचैत सन्तां कसमसिया खवासिनी हँसैति-बिहुँसैति कसमस करैति हवेली सौं बहराय मोचन ठाकुर सौं कुशलक्षेम पुछय लगलैन्हि।

कसमसिया—औ हजाम ठाकुर ! अरे कहू-कहू समधिनीक कुशलक्षेम कहू। कनेयां, कैहेनि, कतेकटा, बरियातीक खयबा-पीवाक ओरिओन-परिओन कोना की कहाँ आहाँक ओहिठाम होइत अछि ? हमरा हवेलीक लोक तँ आइ

बरस दिन सौं आहाँक बाटाबाटी पपीहे जकाँ तकैत छथी। हमर महलम लोकनि तँ मनशुवाइत छथि जे बरियाती ततेक लय अयबैन्हि जे कनेया-वालक घरक खड़ एक-एकटा कय गोचि लौतैन्हि। येही बेरि तँ ओहो भूखेक मरि बैसताह।

मोचन ठाकुर—अय खवासिनी ! कुशल परसन तँ सब खूब बढ़िया किन्तु अहाँक एतेक सवालक जवाब एकके बेरि देत तथा अहाँक चहचही देखैत सर्व्वाङ्ग रोमाञ्चित होइत मन कोना-कोना दन करय लागल अछि। हमरो मनोरथ बबुआ किछु आधीभुज्जी आदमी अछिए नहि, देहात सौं भरि-गोर रुपैया लाएल अछि। अलावे दस-पांच हजार अगर लगो भै जयतैक तँ कि कोनो बातक परबाहि करत ? अहाँ अपना स्वामिनि कँ कोनो बातक हींगला उठाय नहि राखय कहबैन्हि।

पाठक ! येहि युगल जिज्ञासुक पारस्परिक वार्त्तालापक रसास्वादन करब यद्यपि अपने कँ आब आगां अधिकार नहि तथापि विवाहक धूमधाम तथा होरीक होहकार सौं यदि धृष्टते पर अपने कमर कसि तीनी बाबाजी भेल कान पातने युगल जोड़ीक रसमयी वार्त्तालाप चटनी चुपचाप चिखैत चलू। हमहूँ यखन उपन्यासे लिखय बैसलहुँ अछि तखन तौ नीक कौ अथलाह सभ अर्थ सौं इति तक कहैत चलैत छी। सुनू कसमसिया हजाम कँ की कहैति छैन्हि।

कसमसिया—बेस-होउ ! समधिनि कँ डाँड़ सकलत कयने रहय कहबैन्हि।

मोचन ठाकुर—अय खवासिनी ! देखब ! आहाँ अप्पन तँ पहिने सम्हार कयने रहू।

कसमसिया—दुर्र जी ! अहाँ तँ बड़ चकठोस मलोलिया बूझि पड़ैत छी। बेस-बेस आब अहूँ भोगराग पर घण्टा बजाय-बजाय श्री जगन्नाथ जी कहू। आब हमहुँ हवेली जाइति छी। औ हजाम ठाकुर ! एक बात तँ पुछवे हम बिसरि गेलहुँ। आइ तँ अहाँक मोलिक नौआइनि कँ प्रायः निराहारे व्रत करक पड़लैन्हि या फलाहार करयबाक हेतु ककरो राखि अयलियैन्हि अछि कि हनहन गोपाले ?

मोचन ठाकुर–पारणाक बेरि तौं रमितारामे हम पहुँचिये जयतैन्ह, किन्तु एखन तौं अहीं कें हमरा गृहागत अतिथि अभ्यागतक विशेष भाव भक्ति तन-मन सौं करब उचित थीक।

कसमसिया–औ हजाम ठाकुर ! हम तौं अहाँक बहिनि-पितसीक बाखिल छी। छिः छिः छिः हुनकहुँ सभ पर अहाँकें ओहने भाव-भक्ति रहैत अछि ?

उक्त कथा कहैति कसमस करैति कसमसिया प्रत्यागत भेलि और हजाम ठाकुरक हरमजदगीक वार्तालाप सौं हवेली मध्य सभ कें हंसायब-ठहकायब लागलि। तदनंतर श्रीमान् सहलोला बाबूक हरिफवा हजाम, खखना खवास प्रभृति प्रस्तुत भै भाँति-भाँतिक भोज्य पदार्थ मोचन कें भोजन करायब लगलैन्ह।

भोज्य सामग्री कें मोचनो ठाकुर ओहिना मुखमे ठुसय लगलाह जहिना पच्छिमाहा बहलमान लाल मिरचाइक संग सातुक मुठरा कें मुख मे अंगूठा सौं ठुसैत अछि। अस्तु ! ठुसि-ठुसि कय मोचन स्वस्थ भेलाह। तत्पश्चात् सभहि गोटे परस्पर हाहा-हीही करैत निद्रा देवीक शान्तिमय कोड़क सुख अनुभव करय लगैत गेलाह। शेषमे जखन निशा देवी निज घोघट पट उतारि अन्तःपुर प्रवेश कयलैन्हि तखन श्रीमान् सहलोला बाबू हुनक सुखमय सदन सौं बहराय स्वजन-पुरजन कें हंकारि विवाहक स्वीकृत पत्र लिखबाय मोचन कें वर-विदाइ तथा स्वीकृत पत्र दय बिदा कयलैन्ह। हजाम ठाकुर यथेष्ट विदाइ सौं पुलकित होइत सन्ध्या समय मायापुरी प्रत्यागत भेलाह और स्वीकृत पत्र कें मनोरथक करकमलमे समर्पण करैत अपन गृह गेलाह। स्वीकृत पत्र कें देखैत-देखाबैत प्रमुदित होइत लाभ जी निज कुलदेवी त्रिपुरसुन्दरी श्री कालिकाक पादपद्म पर समर्पण करैत मङ्गलाचरणक अनुष्ठान करय लगलाह। तत्कालैं ग्राम भरि हंकार पड़ल। परिजनक सौभाग्यिनी सुभाङ्गनाक समाज एकत्रित भै गोसाउनिक तथा मङ्गल सूचक शुभगान सौं लग्न जगायब लगैति गेलीहि। तत्पश्चात् तैल-सिन्दुर, पान-सुपारी सौं सम्मानित भै निज-निज भवन प्रत्यागत भेलीहि। विवाह-दिवसक निर्णय भेला पर दुहू पक्ष कैं

विवाह-कार्यक धूनि समयलैन्हि। "एना कह, ओना करह" सप्तस्वर उभय ओर उठय लागल।

जिज्ञासु पाठक ! आब कनेक चलैत चलू ओहू दलमे घूमि-घामि कय देखि-सुनि आउ जे कोन विधि कोन भाँतिक विवाहक ठाठ ठाठल जाइत अछि।

पथ सौं उतरैत देखल जे श्रीमान् सहलोला बाबू दालानक प्राङ्गणमे बैसल-बैसल विवाह यज्ञक प्रबन्ध कय रहल छथि। जे-जे अबैत छैन्ह, से-से एतबय कहैत अबैत छैन्ह "सरकार ! आब अपनेक बिढ़ारे उसरैत अछि तेंमे बबुआक विवाह दान सभक विवाह दान सौं बढ़ि-चढ़ि तथा विशेष समारोह सौं सम्पन्न करियौक। उक्त कथा सुनि-सुनि चैया खवासो एम्हर-ओम्हर जाय चाई-चूईक चरखी चरचराय रहल अछि। महतम सौं कहि रहल छैन्ह–"सरकार ! ई सभ सरकार कें उचित कथा कहैत छथि। एखन अपने कें आब दोसर कार्य्य कोन उत्पन्न अछि ?

सहलोला बाबू–रौ चैया ! तौं कनेक प्रपंची ठाकुर सिपाही कैं तौं बजाय अनहीक।

चैया–बेस सरकार ! प्रपंची कें पकड़ने लगले हम हुजूरमे हाजिर होइत छी।

प्रपंची–ताबेदार हजूरमे हाजिर भेल। की हुकुम होइत छैक ?

सहलोला बाबू–हौ प्रपंची ! तौं कनेक हुड़पुआ सोनार, गिरहकटुआ पनड़िया, जटुआ बनिया कें जल्द पकड़ि लाबह।

प्रपंची–बेस सरकार ! एतबे कि औरो गोटा कें पकड़ि अयबाक हुकुम होइत अछि।

सहलोला बाबू–हूँ हूँ ! औरो जे कोनो पोनी-पसारी हो, तकरो सभ कें बजौने अबहक।

प्रपंची–बेस सरकार ! सभ कें पकड़ने फेरि फौरन हम हजूरमे हाजिर होइत छी।

सहलोला बाबू–रौ चैयां ! दुइ वर्ष बीति गेलैक प्रपंची एखनहुँ धरि नहि अयलौक देख तौं की विषय बिकैक ?

चैयां–सरकार ! विषय की होयतैक, भुइंहार भाइ थीक, कोनो प्रपंच करैत अपन मतलब गठैत-सठैत होयत ।

सहलोला बाबू–छैहे तो बड़ बुद्धियक रौ ! गठैत-सठैत की कहैत छैह। शीघ्र बजबहीक ।

चैयां–प्रपंची धन्ने येहने-येहने जहंई जाएत तहंई लेउरपनी करय लागत । रौ खखना! कनेक आगां बढ़िकय देखहीक तौं अबैत अछि कि नहि ।

ओहिठाम सौं खखना जसबैत बिदा भेल और प्रपंची-प्रपंची कहैत टाहि लगौलक ।

प्रपंची–हौ खखनू । थोड़बाहिमे चिचियाय कियैक लगैत छह । चलो हौं अबैत छी ।

खखना–हं हौ हं । कहबह ने कियैक ? "कूटि-पीसि लायथि हीरा, मौंछ पसारथि जीरा ।" एकतरे बयबह तौं पेटे फाटि जयतोह ।

प्रपंची–हौ खखनू ! थोड़बाहिमे चिचिआय कियैक लगैत छह । जाहि ठाम प्रपंची, भाई, खखन, ताहि ठाम सौं खनखनाइत कियैक छह । तोहरो ठीक-ठाक कय देबह ।

सहलोला बाबू–की हौ प्रपंची ! पौनी-पसारी प्रभृति प्रस्तुत भेलह ?

प्रपंची–जी सरकार ! पौनी-पसारी सभ बापे-पूते सरकारी सेवा मे संयुक्त भेल अछि, जे हुकुम होइक ।

सहलोला बाबू–हं हं ! सभ कें शीघ्र शोर पारहक ।

प्रपंची–हौ हड़पू, जट्ट॰, मिरहकट्ट॰, चपरगट्ट॰ निखट्ट॰, बरहबट्ट॰ लोकनि । सरकार लगमे हाजिर होइत जाह ।

सभ बरहबट्ट॰ एक स्वर सौं सलाम सरकार कहैत श्रीमान् सहलोला बाबूक मुखचन्द्रक चकोर भै टकटकी लगौने आज्ञाक प्रतीक्षा कय रहल अछि ।

सहलोला बाबू–हौ हड़पू ! ननकिरबूक विवाहक समाचार तौं तोहरा सभ कें विदिते भै गेल होयतहु । समय आब रहलैक नहि तखन तेहन यत्न करहक जे गहना-गुरिया सभ बहुत जल्द तैय्यार भै जाइक । भोलानाथ बाबूक संग सौं तथा चैयां दक्षिभंगा बाजार सौं आइये पांच हजारक सोन-चानी कीनि आनत । गहना गुरिया शीघ्र तैय्यार भेला पर तोहरा उब्बल इनाम देल जयतहु । रौ चैयां ! हवेली सौं पांच हजार मुद्रा मांङ्गि ला।

मुद्राज्ञा मुख सौं बहराइतहि चैयां सवाय अन्तःपुर दौड़ि गेल और बुढ़ी महलमाइन सौं निवेदन करय लगलैन्ह "दाबीजी ! बड़का बाबा पांच हजार रुपैया मांङ्गि पठौलैन्ह अछि । जल्दी दियौन्हि ।

श्रीमती चेठरानी देवी–वाह रे चैयां ! मूहक सरसे जहिना मालिक कांहि हलफुल तहिना ताग तोड़ैत तड़ित गति सौं दौड़ि अयलेंह अछि ? राति दिन आठ पहर चौसठि घड़ी रुपैयाक हेतु हुनका हरदम हाय-हाय होइत रहैत छैन्ह । हमरा कैन्चा-कौड़ी आब आओत कहां सौं ? जे किछु देने छलाह से सभ तौं विवाह-दान करैत-करैत निघटि गेल । सय दुइ सय हुनको नगद तौं ताहि सौं कि ठंटक मुंहमे जीरक फोरन होयतैक । जो कहुन ग "हुनका हाथमे आब कानी-कौड़ियो नहि छैन्हि" उन्चितक बाप तौं ऋण-दाता मित्र मौजूदे छथीन्ह, दस-पांच हजार हुनकहि सौं हथफेर वा ऋण लेथु । आगां-पाछां सबैत-बबैत रहतैन्ह । सोनमा हमर कोरपोछू थीक तकर विवाह सभ सौं विशेष रूपे कय देथुन्ह । धन-सम्पति आब रखबे करताह कौन दिन लय ।

स्वामिनीक लाठीमार जबाब सौं चैयां चुरमचूर भै अपन मुंह सोहल-मुसनियें सन कयने छौ-पांच करैत विमुख भेल और श्रीमान् सहलोला बाबू सौं कहय लागल छैन्ह–"सरकार ! मालिकिनी तौं नाक पर माछियें नहि बैसय दैछथीन्ह, कहैति छथि जे आब माल-मिलकियाति रखबे करताह कोन दिनुक लेल । विवाह-दानमे बिना ऋण-पैंच कयने कि ककरो शोभा सुन्दर भेलैक

अछि। आइ-काल्हि तँ विवाह-दानमे ऋण-पैंच करब एक प्रकारक विधिये लोक मानि लेलक अछि।

चैयाक मुख विनिर्गत निराशाजनक वार्ता कर्णकुहरमे प्रवेश होइतहि श्रीमान् सहलोला बाबूक हृदय डामाडोल होयय लगलन्हि। चिन्तान्वित भै जल्पय लगलाह।

सहलोला बाबू–हाय ! हम तँ कहितहि छलहुँ अछि जे टाकाक हेतु हमरालोकनि यदि लेकटोयो पर टांगल जाइत होइ तँ स्त्रीगण कोशलिया रुपैया कदापि नहि बाहर करय। बेस, रौ चैया ! पौनी-पसारी कें परसु प्रस्तुत होयबाक हेतु कहि दहीक। और मित्र महाशय कें बजाय लबहुन।

घाइ ठाकुर–दोस्त ! आइ कोन तेहन असाधारण कारण थिकैक जे अपने असमयमे हमर स्मरण कयल अछि।

सहलोल बाबू–मित्र ! ननकिरबाक विवाहक दिन नियुक्त भै गेलैक। हाथमे फूटलि चित्तियो नहि। तखन कार्य्यक निर्वाह अपनेहीक हाथमे अछि।

घाइ ठाकुर–दोस्त ! ई शुभ-समाचार सुनि बड़े हर्षित भेलहुँ किन्तु आइ-काल्हि तँ टाकाक परम करहरी भै रहलि अछि। कारण जे हमर बहुत्आ रुपैया तँ खदुका सभ अपना-अपना घरमे लोभाय लेलक अछि तथापि जिबैत जी अहाँक मांग अनका कोना ग्रहण करय देबैक। अस्तु ! सञ्चितवाक माय कें पुछैत छियैक ओकरा यदि कोशलिया रुपैया होयतैक तँ अहाँ कें अवश्ये देब। कहू कतबा टाकाक आवश्यकता पड़त।

सहलोला बाबू–आवश्यकता तँ अथाहि। किन्तु तत्काल एक बारहे हजारक अछि। शीघ्र गेल जाय। हम अपनेहीक भरोस पर सरोष रहैत छी।

घाइ घर घूरि अयलाह और निज घरणी कोशल कुमरि अर्थात् सञ्चितक माय सँ परामर्श करय लगलाह।

घाइ ठाकुर–प्रियतमे ! अहाँ कें अपन कोशलिया रुपैया किछु अछि ? बाबूक विवाह निमित्त दोस्त अपन मांग बेचबा पर उद्यत छथि। हमर

रुपैया सभ कर्जखोरक घरमे फँसि गेल अछि। रुपैया बाहर नहि कयला सँ तेहन बढ़िया मित्रक मांग अनकै हाथ लगतैक।

कौशल्या कुमरि–जीवनधन ! हमर तन, मन, धन तँ सभ अपनेहीक सरोहरि थीक। जे आज्ञा हो। हमर कोशलिया कोष मध्य रुपैया, मोहर, गिन्नी, नोट, सभ जिनीस प्रस्तुत अछि। जाहि रकम पर रुचि हो आदेश कयल जाय। किन्तु द्रव्यक बोझ कहाँ तक उठौने जायब एक हजारी नोटे दस-बारह गोट हथियौने जाउ। कागज पत्तर खूब पक्का-शक्का कराय लेब तखन रुपैया दोस्त कें देबैन्ह।

बारहो नोट कें धोतीक खूँट मे खोंसि खोदाबक्स खाँ लेसनदार तथा सहेरलाल कातिब (लेखक) कें संग लगौने घाइ ठाकुर श्रीमान् सहलोला बाबूक सन्मुख उपस्थित भेलाह।

घाइ ठाकुर–दोस्त ! रुपैया देब तँ स्वीकार कयलन्हि किन्तु कहैत छथि जे दोस्त के तँ रुपैया-आदायक आदत्तिये नहि छैन्हि। केवल मांगे-मिलकीयति पर आंट सेहो खाँझिये-खियाय कय केबाले कय देबाक बानि पड़लि छैन्हि। हुनक मांगे-मिलकीयति सभ अहिना बिकाएल जाइत छैन्हि। दोस्तक दशा देखि-देखि चित्त बड़े चिन्तित होइत अछि। आबहुँ हुनक अवशिष्ट मांग जाहि सँ बाँधि जाइन्ह, से प्रबन्ध धराय रुपैया देबैन्ह अर्थात् दस्तावेजक शर्त्त तेहन कठोर लिखबाय लेबैन्ह जे रुपैया परिशोधनक भीषण भय रहैन्ह, तखन रुपैया शीघ्र सधाय देताह। तमस्सुकमे तीनि रुपैये सैकड़ा माहवारी सूद। साल शेष भेला पर सुदी रुपैया असल भै सूदक दर सूद चलय। तीन साल मे रुपैया यदि सधाय नहि सकथि तँ तमस्सुकी मांग ओतबहि रुपैया मे ऋण-दाता कें निर्विवाद हस्तगत भै जाइन्हि। येहि अभिसन्धि सँ बड़े भयभीत भै परिशोधनक विशेष चेष्टा करैत रहताह। ऋण परिशोधनक बेरि बुझल जयतैक। दुहू मित्र आपस मे हरिछाय-फरिछाय लेब। पूर्वोक्त नियम यदि अपने कें स्वीकृत हो तँ हम लसनदार तथा कातिबो कें संगहि लेने आएल छियैन्ह।

सहलोला बाबू–मित्र ! हम अति आर्त्तमन्द छी तखन "आरत काह न करहि कुकरमू" कें मूल्य मानि अहाँ सँ फराक छीये नहि, तखन जेना जे

शर्त्त सम्बरय से लिखवाय दियौक हम आँखि मुनि कय हस्ताक्षर कय देब ।

धाइ ठाकुर–औ मुनशी खदेरनलाल । खोदाबक्स खाँ सौं स्टाम खरीदि तमस्सुक जल्द लीखि लाउ । तावत्काल हम दुहू दोस्त अन्यान्य गप्प-शप करैत छी ।

मुनशी खदेरन लाल–बाबू साहब ! यह लीजिये तमस्सुक -तैयार हुआ बस्त । सह (मोकीर) मे सही गवाह से गवाही (साक्ष्य से साखी) रजिस्ट्रार मे रजिस्ट्री करवाकर बाबूजी को आज ही जर-नकद हवाले कर दीजिये क्योंकि जर को हलाल करनें के लिये बाबू साहब बेकरार हो रहे हैं ।

धाइ ठाकुर–दोस्त ! "अब विलम्ब केहि काम रचहु सेतु उतरय कटक ।" तमस्सुक पर स्वयं सही तथा गवाह सौं गवाही कराय रजिस्टरीक रास्ता नापू । देखव ! से प्रबन्ध करब जे रजिस्टरी-काण्डक इतीश्री आइये भै जाय ।

सहलोल बाबू–मित्र ! लाउ-लाउ तमस्सूक लाउ, श्रीगणेश कहि तमस्सुक पर हाथ धरू ।

धाइ ठाकुर–दोस्त ! तमस्सुकक मजमूनो धरि तौं कनेक सुनि लियौक ।

सहलोला बाबू–सुनबैक की जैसी होत होतव्यता तैसी उपजे बुद्धि । होनहार हिरदे बसे बिसरि जाय सब सुद्धि । तुलसी भावी प्रबल है जो मानवै सो मूढ़ । राई घटे न तिल बढ़ै लिखे अंक विधि गूढ़ ॥'

उपरोक्त जल्पना करैत सहलोला बाबू स्वयं सही साक्ष्य सौं साखी कराय नकन्त आ परिचायक (सिनाख्तकार) कें संग लगाय धाइ ठाकुर सहित रजिस्टरी जाय दाखिल कयल ।

रजिस्ट्रार साहेब–सहलोला बाबू ! रुपये तो आप पा गये । तमस्सुक का शर्त्त इतना कड़ा क्यों है ।

सहलोला बाबू–हुजूर ! रुपये तो अब पा ही गये । तमस्सुक का शर्त कड़ा करवाना तो मेरे मित्र की दूरदर्शिता है ।

रजिस्ट्रार साहेब–रुपये तो अब पा ही गये की मानी मैंने समझा नहीं ?

एतबा कथा सुनितहिं धाइ ठाकुर रजिस्ट्रारक अध्यक्षहिमे एक दू तीन गनैत एक-एक हजारक बारहो नोट श्रीमान् सहलोला बाबू कें गनि देलथीन्ह ।

तत्पश्चात् रजिस्ट्रार साहेबक विशेष कृपा सौं रजिस्टरीक सभ कार्य्य तत्काले तामील तथा तमस्सुको ततक्षणे भेटि गेलैन्ह । तखन तमस्सुक कें धाइ ठाकुरक हाथ मे समर्पण करैत संगहि संग सबहु गोटे अपन-अपन गृहाभिमुख भेलाह । रास्ता मे स्वच्छ स्वभाव सहलोला बाबू विषकुम्भ पयोमुख मित्र धाइ ठाकुर कें कहैत अबैत छथीन्ह, मित्र ! अपने आब कृपा कय विवाह कार्य्यक निरीक्षण करैत रहबैक ।'

धाइ ठाकुर कहू तौं भला । इहो कोनो कहबा सुनबाक बात थिकै कि, अपन कार्य थीक । एखन अपरान्ह समय भै गेल अछि । मुहो हाथ धोएब तथा पेट-पूजो बाकिये अछि ।

एवम्प्रकार परस्पर वार्त्तालाप करैत-करैत युगल मित्र अपन-अपन गृहागत भेलाह । तृतीय दिन सबेर सकाल सहलोला बाबूक पौनी-पसारी प्रभृति पुनः प्रस्तुत भेलन्हि ।

चैता–सरकार ! पौनी-पसारी सभ हाजिर भै गेल, जे हुकुम हो ।

सहलोला बाबू–सभ सौं पहिने हड़पूआ सोनार कें तलब करहीक ।

हड़पू सोनार–धर्म्मावतार ! विवाहक दिन आब रहलैक नहि बलू गहनो-गुरिया बनुये-ढाकी गढ़क होयतैक बलू । थोड़बहि मे सरकारी हुक्वण्डा उठायब लागब बलू । यहू किञ्चित कालमे यदि हमरा अपना मन सौं काम करय देब तौं बलू हम अपना ममियौतो भाय सभ कें बजवाय-बजवाय काम अंजाम कय सकैत छी बलू । अगर सरकार पीठ पर सवार भेल रहब तौं डरे पिलिहये चमकैत रहत काम की करब खाक बलू । खैर ! तखन गरमे होले पड़ैत अछि तौं कोनो घराने बचयबे करब बलू । अलावे ई दरबार तौं हमर पुश्तैनी थीक बलू । सरकारही दरबारक प्रसादात सए-सवा-सए बिगहा बकौस्तरी हासिल कयने छी बलू । आबहु सोन-चानी जल्द मंगवाय देल जाउक जे काम काजक खटरम-पटरम चलय, बलू ।

सहलोला बाबू–औ भोलानाथ बाबू, आहाँ, हरपुआ तथा चैता तीनू गोटे एखने दड़िभंगा बाजार सौं पाँच हजारक सोन-चानी कीनि लाउ । लिय, पाँच हजारक पाँचो नोट धरु ।

भोलानाथ बाबू पाँचो हजारक नोट कें अङ्गाक जेबमे राखि लेल । तखन तीनू गोटेखट्ट-खट्ट दुइ चूसा मूँहमे लगाय, मूँह-हाथक झगड़ा छोड़ाय, चट्ट दड़िभंगा

बिदा भेलाह और मोहन साहूक दोकान पर जाय सोन-चानीक भाव-साव पटौबय लगलाह ।

सभ सौं पूर्वहि हड़पू अपना सोनारी शैली, सौंस सिंघार-फौंकसे मोहन साहु सौं साङ्केतिक बातचीत कय प्रकाशमे कहय लगलैक, हौ मोहन भाइ । देखिहह, हमर भोलानाथ बाबू भोलेनाथ छथि बलू । सौदा कोनो तरहक कच्चा मति वहून बलू ।

मोहन साहु—हड़पू ! तुम तो खूब जानते होगे क्या नाम है कि, मेरे दुकान-सा सस्ता और चोखा माल क्या नाम है कि शहर भरमे कहीं दूसरे जगह मिलता न होगा । क्या नाम है कि, एक बार पचीश-पचास का नफा न सही न सही । एक बार कौन कहे सौ बार सौदा ले जाव क्या नाम है कि, नाकिस या नापसन्द हो तो महीने रोज पर वापिस दे जाना । क्या नाम है कि, मेरे यहाँ रोज मजूरी चोखा काम होता है । क्या नाम है कि, अभी अभी धरनीधर बाबू, हल्खी बाबू, ऐठहू बाबू, दामोदर बाबू, क्या नाम है कि, मनोरथ बाबू हजारी का सोना-चान्दी मेरे ही दूकान से ले गये हैं । क्या नाम है कि एक बार तुम भी ले जाव । देखो साढ़े पाँच हजार का माल क्या नाम है कि पाँचे हजार में बाबू साहिब को दे रहा हूँ । खैर ! क्या नाम है कि, एक बार घाटे ही सही । मेल-वाकफत हो जाने से फिर तो क्या नाम है कि, बाबू साहिब का घर तो मेरा ही हो जायेगा । हम भी क्या नाम है कि, समझ लेंगे कि, आइन्दे के लिये बाबू साहिब का दरबार ही छापा है । एवम्प्रकारे चिक्कन-चुनमुन वार्त्तालाप सौं भोलानाथ बाबू कें मोहि-माहि कय साढ़े चारि हजारक माल पाँच हजारमे दय तथा सलाम बन्दगी करैत बिदा कयलकैन्ह । इहो तुरंत सोन-चानीक गठरी बाँधि नाकक सोझ रास्ता अपने मुसकैत होइत बारह बजैत-बजैत बहुलोलपुर प्रत्यागत भेलाह और सोन-चानीक मोटरी श्रीमान् सहलोला बाबू कें समर्पण करैत निज-निज निवास स्थान पर प्रस्थान कयलैन्ह । किंचित्कालोपरान्त श्रीमान् सहलोला बाबू पुनः हड़पू सोनार कें आह्वान कय पाँचो हजारक सोन-चानी गहना-गुड़िया गढ़बाक हेतु दय देल । द्रव्यक समस्त गेठरी हस्तगत होइतहि हड़पू कुम्पहि नकां फूलि उठलाह और तहिखन सौं ताबड़तोड़ फूड़ाक बाबू

कैर-फारक फिकिरमे फिरीशान होवय लगाह । सन्ध्या समय सोनार राम शौलीन सकर्षण सौं मोहन साहूक दोकान पर पुनः प्रस्तुत भेलाह और कहय लगलथीन्ह—मोहन भाइ । गलकट्टी वाला पाँचो सै रुपैयाक अर्द्धांश वौं हमरो सेवा सुश्रुषा करह बलू नहि तौ बलू कालिहुये तोहर माल-ठाल सभ फिरता भै औतह बलू ।

मोहन साहु—बस-बस क्या नाम है कि, यह चालबाजी अपने ही घर रहने दो । तुम से भी मुर्खों का बाबा-दादा गुरु मैं हूँ । तुम्हारे-सा क्या नाम है कि मैं भी फटक चन्द गिरिधारी थोड़े हूँ जो रुपये को फोक्ट में फेंकता फिरता हूँ । इस सौदे में तो क्या नाम है कि मुझे खुद ही घाटा लगी है । तुमलोग तो क्या नाम है कि राजदरबार के झाँझी कुत्ते ठहरे । मेल-मेत मे क्या नाम है कि झूट-मूठ झाँव-झाँव, काँव-काँव की झड़ी लगाते रहते रहोगे । खैर ! जब तुम आ ही गये तो क्या नाम है कि लो ! ये पच्चीस रुपये अपने खोरे लिये ले लो और क्या नाम है कि इन हिलाते-हिलाते मी दो ग्यारह हो जाव ।

मोहन साहू कें हड़पू हरचन्द हिलाय हिलाय हारि मानिलैन्ह, हृदय मे विश्वास भै गेलैन्ह जे येहि पच्चीसक अतिरिक्त एक कानी कौड़ियो आब नहि देत तखन झपट्टा मारि पचीसो रुपैया कें धाकल नटुआ जकां झुटकी बिछैत तथा "चोरक धन छिपाड़े खाय"बला फकड़ा पढ़ैत भकभक्-झकझक् करैत रेलवे चालि सौं स्टेशन पर पधारलैन्ह ।

ओहि निशिमे निर्भीक भै सोन-चानी कें गलाय-गलाय गाली पिबय लगलाह । ओही रात्रिक कोन कथा बियाहक दिनहु धरि सोन-चानी कुहेल-दाहेल अर्द्धांश चाटि लेल । शेषकालमे जे किछु गहना तैय्यारो कयलैन्ह से सभ अस्तित्वशून्य कलेवरे बनाय माँजि-घूजि पालिसे चढ़ाय बरियात विदा होयबाक कालहि प्रस्तुत कय कहय लगलैन्ह—सरकार ! येतेक कान-कपार धुनलो पर दू-तीनटा गहना नहिये तैय्यार भै सकलैक, कारीगर सब कें लगौने छी, तैय्यार करौने हम खुद मर्य्यादि कालमे सरजमर सरकारक सेवामे समर्पण कय आयेब । ई कथा सुनितहि सहलोला बाबू कोधे तमतम करैत सोनार रामक शिष्टाचारक व्यवस्थो करबा पर उद्यत भेलाह । किन्तु, अन्तिम समयमे बरियाती लय जायु कि सोनार रामक व्यवस्था करथु ।

चढ़ौआ गहनी कतोक येहनो गढ़ि देलकैन्हि जे विवाहक रात्रियहि सौं वनिता-समाक बीच सौं नू-नू ससय लगलैन्हि ।

सहलोला बाबू—औ गिरहकट्टू मल्ल ! ननकिरवाक विवाह मध्य कम्मो-सौं-कम्म तौ एक डेढ़ हजारक कपड़ा मैरहक खर्च अवश्ये होयतैक जकर भार अहीं कें गछबा पड़त ।

गिरहकट्टू मल—राम-राम बाबू साहब ! बाजारमे उधार का नाम भूलकर भी कभी न लीजियेगा । राम-राम ! जरा फरमाइये तो राम-राम कौन-कौन से कपड़े चाहिये । आपके लिये तो मैं कभी पाँव पीछे कर ही नहीं सकता खैर ! जहाँ तक जो राम-राम हो सकेगा । हुजूर से कोई उजूर नहीं करूँगा लेकिन राम-राम रहू गया उधार का मामला ।

सहलोला बाबू—वाह मल्लजी वाह ! कपड़ा चाही कौन-कौन ? चाही बढ़ियाँ-बेशकीमती पटोर, रेशमी बनारसी, साड़ी, बुन्न, दरेस, रेशमी तथा रेशमी पाढ़ीक धोती, शान्तीपुरी धोती, रेशमी दोपटा, लंकिलाट, नैनसुखक थान तथा औरो-औरो किस्मक कपड़ा, कतेक गट्ठ ।

गिरहकट्टू मल्ल—राम राम बाबू साहब । आपने तो कपड़ों के नाम ही गिनाने में घन्टों लगा दिया । इन दिनों तो राम राम कपड़े लेने के लिये टंगड़ी गड़्ँ मसरतो । पीछे राम राम आप गिरहकट्टू से भी बढ़के पानकट्टू मल मेरा नाम धरने लग जायेंगे ।

सहलोला बाबू—मल्लजी ! नहि-नहि येहन कहियौ कहि सकैत छी ? एक तौ अहाँ सबन उधार देब दोसर पहिलुको बाहीक किछु रुपैया बाँकिये रहि गेल अछि । धन्य अहाँ जे उधार दैत छी । अहि कार्य्य सौं उबारि दीय, तखन बड़का फलमवाग अहाँ कें केवाला कय देब ।

गिरहकट्टू मल—राम राम बाबू साहेब ! उधार में तो यही सब बातें होती है । पहले राम राम यह तो कहिये कि इस वक्त नकद रुपये कितने देंगे या नहीं, "चैन की कटारी हींग ले हमारी" वाली बात होगी ।

सहलोला बाबू—अहह मल्ल जी ! "जैह रोगी कें भावय सैह वैद फर-

मावय" अहाँ तौं हमरा सभक हींग सौं हरदि तचकक जननिहार छी तखन पसहा-वस्त्र जकाँ मुड़ी जुनि हिलावी ।

गिरहकट्टू मल—खैर ! इस वक्त तो राम-राम आप अपना काम सम्भाल लें । शादी से राम राम दो एक रोज पेश्तर भोलानाथ बाबू को फेहरिस्त के साथ मेरे दुकान पर भेज करके मङ्गवा लीजियेगा । जय जय राम बाबूजी अब आगे आपकी मरजी ।

कुमरम गौ दू दिन पूर्वहि सहलोला बाबू एक लौंग लिस्ट अर्थात् डबल फिरहिस्तक सहित भोलानाथ बाबू कें प्रपंची, छिपाटू, सबामक संग गिरहकट्टू मल्लक दोकान पर पठाओल । लौंगलिस्ट कें देखितहि मल्लजी मुञ्जरहि बीन पिटैत कोठली सौं भाँति-भाँतिक पट बढ़ाबढ़ि दोकान पर पटकय लगलाह । तदन्तर सूचीक अनुसार प्रत्येक पट भोलानाथ बाबू कें अर्पण करैत अपना बही खातामे एक-एक कपड़ा पर दू-दू, तीन-तीन डर दाम कसि-कसि कय दर्ज कयल और भोलानाथ बाबू सौं हस्ताक्षर कराय निश्चिन्त भ हुनका बिदा कयलैन्हि ।

पाठक ! ओम्भर सौं गिरहकट्टू मल्ल अपन अभीष्ट साधि निश्चिन्त भेलाह और एम्भर ओहि वस्त्रादिकक संयम कोन रीतिये विवाह मे काल भेल से सुनू । वस्त्र विन्यासमे एक रकम पटोर छल सौं सप-सप-सपक रेशमी दोपटे सौं पचीस-पच्चासक । ओ बहुमूल्य पटोर वर्णाभ्यासरेसँ कन्याप्रदक मध्यमण्डा मन्त्राहितीक अर्थाङ्ग पर लोटन परवा सभी लौटाय लागल, रेशमी दोपटा सौं विवाहक रात्रियहि सौं मन्त्रागतक हुजामक अङ्ग पर पातू होयब लागल । यदि अनुसन्धान कयल जाय सौं विवाहक बहुतो वस्तु पर येहने-येहने अलहड़पन दृष्टिगत होयत । अस्तु ! वस्त्र विन्यासान्तर सहलोला बाबू भोजनादिकक विशेष प्रबन्ध हेतु जट्टू साहू बनिया कें भार दैत छलैन्हि ।

जट्टू बनिया—सरकार ! कि कहू छैक कि दिन बहुत समीप आबि गेलैक, विवाह-दानमे अन्नहीक विशेष कचरकूट रहैत छैक तखन कि कहू छैक कि सरकार कहल जे उधारे दे, से कि कहू छैक कि, बिना रुपैये येतेटा बलक भार सम्भारब हमरा बापहुक साध्य नहि छिलैन्ह तखन कि कहू छैक कि किछु

बेशी टाका अगाउ निकास कय देल जाउक जे हमहूँ रकम पाली कीनि-बेसाहि कय मौजूद रखने रही। तखन कि कहै छैक कि कम्मो सौं कम्म एक्को हजार धरि निकास कय देल जाउक जे कि कहै छैक कि काम धन्धा चलैक।

प्रपंची–धर्म्मावतार ! जटुआ कें आब पहिलुक विभव रहलैक नहि बिल्कुल थौंसि गेल किछु अगाउक आज्ञा अवश्ये दय देल जाउक नहि तौं बिवाहमे बड़ पिचाल पड़त। बरियात कें सबवे-पीवे धरि सरोकार रहैत छैक। भोजनमे त्रुटि भेला सौं सभ अनोने-बिसनोने भेल रहत।

सहलोला बाबू–हौ प्रपंची ! जाह तत्काल जटुआ कें भोलानाथ बाबू सौं चौदह सय टाका देआय दहक हिसाब-किताब आगाँ-पाछाँ बुझल-सुझल जयतैक।

प्रपंची–चलह हौ जट्टू चलह। आब तौं भेलौह। हमरा सरकार सन बुझनीक व्यक्ति ब्रह्माण्ड भरिमे विरलयके केओ भेटतौक। पूर्वोक्त स्वार्थताक बात कहैत-सुनैत निज प्रपंचमे जट्टू कें जटैत भोलानाथबाबूक समक्ष प्रपंची पहुँचलाह।

भोलानाथ बाबू–की हौ प्रपंची की समाचार ?

प्रपंची—कृपानिधान ! जट्टू कें पन्द्रह सय रुपैया बरियातक भोजनी समतूल रखबाक हेतु सरकार सौं निकास भेलैक अछि।

भोलानाथ बाबू–बेस-बेस आहाँ सभ कनेक बैसि जाउ, हम थोड़ेक नदी फिरने लबले चल अबैत छी।

अस्तु ! भोलानाथ बाबू तौं ओम्भर वाह्यभूमि गेलाह। एम्भर जट्टू कें प्रपंची फुसुर-फुसर कहय लगलथीन्ह। जट्टू ! देखह तोहरा हेतु हम कतेक वितण्डा कयलहुँ अछि हमरे होहकारला सौं तोहरा एतेक रुपैया सरकार देलथुन्ह अछि नहि तौं खटाइये मे फुलैत रहितह। आब जर चौथ हमरा दय देह तखन तौं "खाना माना आन, मीत मिलारय आनक" बात करह।

जट्टू बनियाँ–आए-आए सिपाही जी आए : आहाँ की कहै छैक कि थोड़बहिमे अगुताय लगैत छी, हम तौं की कहै छैक कि अपनेक कथा सौं कहियो कि फराक छी ? बड़े गुन गबैत छी अहाँक जाति भाइ तौं हमरो गुरु

पिकाह तखन की कहै छैक कि रुपैया तौं पहिने मोठिआबय दीय तखन की कहै छैक कि आगाँ कोनो बातचीत।

यही अभ्यन्तरमे भोलानाथ बाबू अबैत दृष्टिगत भेलथीन्ह। हुनका देखितहि दुहू गोटे अपन-अपन वार्त्तालाप कें सटक-सीताराम हवाला कयलैन्ह। कुछ रायमशोपरान्तर भोलानाथ बाबू गद्दी पर बैसलाह और लोहाक सन्दुकचा सौं दुइटा हजारी थोकड़ी बाहर कय सए द्‌ रुपैयाक थीव थाक लगौलैन्हि किन्तु रुपैया देबाक बेरि विस्मरणताक कारणे पन्द्रह थाकक स्थानमे सोलह थाक दय बाँकी रुपैया सन्दुकचामे पुनः राखि छोड़लैन्ह। रुपैया सभ कें तौनीमे बान्हि जटुओ अपन घरक रास्ता धयलैन्ह। हुनके पाछा-पाछा प्रपंचियो डोरि-आएल गेलाह। एवम्प्रकारे हड़पू, गिरहकट्टू, जट्टू, चपड़गट्टू पौनी-पसारी प्रभृति कें दैत देआबैत सहलोला बाबू अन्यान्य कार्य्यक प्रबन्ध करय लगलाह।

पाठक ! वरप्रद सहलोला बाबू कें आब अपन कर्त्तव्य करय दिवौन्ह तावत् कनेक कन्याप्रद मनोरथ लाभोक प्रबन्ध तौं देखि अबैत जाउ। बरियातक-शोहरा सुनि-सुनि लाभ औ बड़े विचलित भै रहल छथि। ओही अवसर पर मोचन ठाकुर कहय लगलैन्ह "औ बाबू ! खुद बरक बापे हमरा कहैत रहथि जे बरियाती हम ततेक लय जयबैन्ह जे मनोरथ लाभक बाभे (नाभि) येहि बेरि सुखाय जयतैन्हि। येहि बेरि तौं ओहो अपन माथक मौले बुझताह। से देखब जे अपना दिशि सौं कोनो बातक कोताही नहि हो तेहन प्रबन्ध करब जे ओहो येहि मायापुरी सौं नाके रंगौने जाथि। यदि कोनो बातक टोटा होयत तौं देश भरिमे हँस्सी भय जाइति।

मोचनक मर्मभेदी कथा तथा समधीकृत अपमान जनित व्यथा सौं कन्या-प्रदक सर्व्वाङ्ग फड़कय लगलैन्ह जाहि कारणे तत्काले मनमे सर्वस्वौन्तक संकल्प कय लेल। बस येही ऐंचा-तानी क साम्राज्यमे मनोरथ जी-जान उपछि-उपछि बिवाहक स्मारक पत्र तैय्यार करय लगलाह तौं अपव्ययक कोनो आभा-परिचय नहि रखलैन्ह। स्मारक पत्रक जोड़ बारहो हजार सौं बाहर चल गेलैन्ह किन्तु एतेक टाका औतैन्ह कहाँ सौं तकरे सलबली मचय लगलैन्हि। भर मध्य ताकि-हेरि अयलाह तौं झारि-झूरि कय सय-पाँचेक

टाका ठहरलैन्ह् । बांकी टाकाक उपाय की ? ओएह्—"ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।"

अस्तु ! माधा मिसकियत-सेतवारी जे कहीं छलैन्ह् से सभ केवाला मक्ष-मूल कय बारह-सहस्र मुद्रा निराधा राउतक भाय आधा राउत सौं ऋण लेलैन्ह् । खेद ! दस्तावेजक शर्त राउतो किछु न्यून नहि करोलकैन्ह् बल्के थाड़ ठाकुरक शर्त सौं एकाध मात्रा बेशिये । मुद्रा हस्तगत होइतहि मनोरथ-लाभ बढ़ि चढ़ि कय विवाहक बिलोबन्द करय लगलाह् । बरक अलङ्करणक हेतु एक डेढ़ हजारक सोन-चानी खरीद कय हुड़्रू सोनारक मसिऔत-भाय तस्कर ठाकुर कें देल गेलैन्ह् । दान दहेजक हेतु एक द्वि-हजार टाकाक सहित भक्कूलाभ ठक्कू ठठेरिक दोकान गेलाह् । वस्त्रादिक हेतु एक हजार बारह सय रुपैया लय रभसलाभ गिरहकट्टू मलक मित्र मोचन पजियाड़क दोकान पर प्रस्थान कयल । खान-पानक निमित्त एक चारि-पाँच हजार टाका भट्टू साहुक गुरुभाय घृतघट्टू राय कें देल गेलैन्ह् । बरियातक जनवासाक हेतु स्थान-स्थान सौं राउटी, कनात, छोलदारी, शीमा, शमियाना, जाजिम, सतरंजी, एकत्रित करबाक हेतु धावक गण प्रेषित कयल भेल । स्वजन, परिजन, कुटुम्ब वग तथा मित्रजनक समक्ष निमंत्रण पत्र पठाओल गेल ।

उचितवक्ता दास—दुहु समधी भेल एक समतूल । निभय विदाय कय कयल कबूल । पाछां सूनय दुहुक हाल । दर दर फिरताह् पिटैत भाल ॥

पाठक ! उभयप्रद कें फफड़-दलाली करैत-करैत फाल्गुण शुदि चतुर्दशी गुरुवारो पहुँचि गेलैन्ह् । आइये कुमार सोने लालक कुमरम थिकैन्ह् । श्रीमान् सहलोलाबाबूक सर कुटुम्ब बन्धु-बान्धव शनैः-शनैः एकत्रित भै रहल छथीन्ह् । जेम्हरे चकरा देखैत छी सैह् लाल-पीयर रंग-बिरंगक वस्त्र फहराय रहल अछि । सन्ध्यादेवीक आगमन सौं पूर्व कुमरम काण्ड बड़े समारोहक सहित सम्पन्न भेल । रात्रि भरि खान-पानक ठेलम-ठेल रेलम-रेल मचैत रहल ।

आइ फाल्गुणक पुनीत पूर्णमासी कुमार सोनेलालक शुभ विवाहक दिन थिकैन्ह् प्रभातहि सौं बरियात प्रस्थानक प्रबन्ध तथा बरियात भोज्यक उथल-पुथल पाक शास्त्रानुसार होबय लागल अछि । भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य,

अम्ल, मधुर, तिक्त, कषाय, लावणिक आ मिष्ट षट-रस पदार्थ सौरभि सौं भोजनकर्त्ताक रसज्ञ रसना पनिछाय रहल छैन्हि । सम्पूर्ण बहलोलपुर हाथीक चिंहकार, घोड़ाक हिंहिकार,ढोल-ढाकला-ढाक-ताशाक, तड़तड़ौअलि-धड़धड़ी-अलि, तुरही-पिपहरीक तुरतुरौअलि-पेंपिऔअलि, शहनाई बासुरीक मिसि-औअलि, क्लैरियोनेट बैंभक (बैनक) कड़कौअलि-किकिऔअलि, ड्रम-ड्रम्पेटक गड़गड़ाहटि घड़घड़ाहटि सौं दलमलित भै रहल अछि । बारह बजैत-बजैत सिंहौक घण्टा ठोकल गेल । घण्टाक घननाद कर्णपुटमे प्रवेश होइत सन्तो बरियाती-गजस्वरूप स्थान पर उपस्थित भै रचि-रचि भोग लगाय निश्चिन्त भेलाह् । तदन्तर बरियात प्रोसेशनक (गमन) हेतु रूपरंग मे रंगल, फैशन-मे-फैंसल, छयल-छबील सौन्दर्योपासक नवयुवक बरियातीजन सीटि-साटि कय स्वेच्छानुसार वाहन कें अपनाय रहलाह् अछि । बरियातीक स्वाङ्ग सभ विधि सौं सजि-धजि कय श्रीमान् सहलौला बाबूकें डेउढ़ी सौं प्रस्थान कय ग्रामक श्रेष्ठ गंगासागर तड़ाग पर किछु कालक हेतु एकत्रित भेल तदन्तर मायापुरीक हेतु क्विक-मार्च (शीघ्र गमन) करय लागल ।

बहलोलपुर सौं बहराइतहि कतोक मद्योपासक तारणी (तारी) सुन्दरीक ध्यान करैत डगमेल होइत आगा आगा बढ़ल जाइत छथि और स्थान स्थान पर उक्त प्रमदा कें दण्ड-प्रणाम करैत चरणोदक लैत पासी पण्डा कें दान प्रदान दैत झटकारैत जाइत छथि । कतोक नवशिक्षित सभ्याभिमानीक ध्यान सौं केवल विलायत-वासिनी बोतल-वाहिनी वारुण्डी सुन्दरिहीक पाद पद्ममे लागल छैन्ह् किन्तु येहनि प्रमदाक दर्शनक सौभाग्य सर्वत्र सम्भव परम दुर्लभ तथापि विशेष ध्यानकृष्ट भेल सहटल जाइत छथि । अस्तु ! अन्तिम सम्प्रदायक विशेष भाव भक्ति सौं आर्द्र भै स्वभक्त कें मायापुरीक सन्निकट वाम-पार्श्वमे मधुपुरीक मनोरथ मन्दिरमे दर्शन देलथीन्हि । दर्शनक सौभाग्य प्राप्ति होइतहि उपासक गण निज निज जन्म कें सार्थक मानि हुनक आराधनक षोडशोपचार करय लगैत बेल छथि ?

एक कहैत छथीन्ह्—पित्वा पित्वा । दोसर—पुनः पित्वा ।

तेसर—यावत्पतति न भूतले ।

चारिम–पुनरुत्थाय ।

पाँचम–पुनः पित्वा ।

षष्टम–यावज्जियति भूतले ।

परन्तु उपासकक अविधेय षोड्शोपचार तथा अश्रद्धयानुष्ठान सौं युगल प्रमदा सुन्दरी अप्रसन्ना भै उभयोपासक कैं विक्षिप्त कय देलथीन्हि । फलतः युगल सम्प्रदाय परस्परहि मध्य छिका-छिकौअलि, टिका-टिकौअलि, लात-जूता, मारि-मारि तथा ओकरैत-ओकरैत उपरोक्त स्थानहि पर रजनी अवसान करैत निभेर नशामे निमग्न भेल टिटहीवत् टांग उठौने मुँह बौने प्रज्ञाहीन पड़ल छथि । बरियाती सभ एखन पाछहि छथीन्ह खोज पुछारी के करतैन्हि ? निःसहाय देखि स्थानीय श्वान कें रहल नहि जाइत छैक यद्यपि ओ कोनो आन दवा-दारू नहि कय सकैत छैन्हि तथापि मुख सरोज पर सलिल सिञ्चन घरि अवश्ये करैत छैन्हि । जत प्रपात मुखमे पड़ितहि सर्वाङ्ग सुगबुगाय लगैत छैन्ह किन्तु ठामहि पुनः पसमोड़ि कय पड़ि रहैत छथि ।

चतुर्थ परिच्छेद

ब्याहे चाहे सुमति के सुमत वर हो ।

सूर्य देवक सप्त रंग रंजित सुरम्य-स्वर्ण किरण सौं आइ मायापुरी एक अनुपम छटा-छहरावय लागलि अछि । स्थान-स्थान पर चित्र-विचित्रक अति मनोरम वितान (शामियाना) शिविर, तम्बू, कनात, सभ बरियाती दलक स्वागतार्थ हस्तावद्ध ठाढ़ि भेल दृष्टिगत होइत अछि । नव-सप्त-सज्जित युवक यूथ रमणी विवाहोपलक्ष पर सपक्ष चहकैत देखि पड़ैत छथि । मायापुरीक छविक झांकी दर्शनक हेतु ऋतुराज बसन्तो ससैन्य उतरि आयल छथि । जिनक स्वागतार्थ कुसुम-काननादि स्थान-स्थान पर भांति-भांतिक सुमन-सय्या सजने प्रस्तुत छथि । ऋतुराजक प्रधान अर्जबेगी कोकिल रसालक उच्च-उच्च

डारि पर बैसि-बैसि कुहू-कुहू शब्दमे ऋतुराजागमनक घोषणा घोषित कय रहलाह् अछि । प्रकृति मालिनिओं धैन नञ्जेरा मे नाना प्रकारक सुगन्धित सुमन सजने छथि । सुमन सौरभि सौं रसज्ञजन मदोन्मत्त भै रहलाह् अछि । मदमत्त मधुकरावलियो मड़राय मड़राय झूमि-झूमि नव विकसित मञ्जु, मञ्जरक मकरन्द कैं पान करवा लय लालायित भै रहल छथि । आहा ! मायापुरी मे आइ वसन्तोत्सव तथा विवाहोत्सवक कारणे घर-घर स्थान-स्थान मे हलचल मचल देखि पड़ैत अछि । वसन्त राग-रागिनीक समीर कर्णपुट होइत हृदय कमल कैं विकसित कय रहल छथि । स्थान-स्थान पर अतर-गुलाब-कुमकुम, केसरीक धमाउर मचि रहल अछि । विशेष-विशेष स्थान पर वाराङ्गना पञ्चम सुर मे "आजु खेलै होरी कन्हैया घर बलुरी" मत मारो पिचकारी ललन तुम" "फागुन जइहैं बहुरी फिरि अइहैं" आलापि रहलि अछि । आगां बढ़ि कय देखैत सुनैत छी जे एक कुटीर पर वियोगी जनक मण्डली उक्त आलापक प्रत्युत्तरमे मृदङ्ग मञ्जीरा सौं धिकधाम् धिकधाम्,, किन्को किन्कोक, ध्वनि उच्चारण कय रहलि अछि । सायंकालमे देखैत छी जे बरियात समारोहक प्रशंसा सूनि सूनि गगन मण्डलक सम्राट चन्द्रदेवो प्राची दिशि सौं मन्द-मन्द बिहुँसैत बाहर भेल चल अबैत छथि किन्तु मायापुरीमे बरियाती दलक कतहु नामोनिशान नहि । मायापुरी निवासी कें बरियातीक प्रतीक्षा करैत-करैत अर्द्धरात्रि बीति गेलैन्ह । परन्तु वेहि व्यर्थ विलम्बनक कारणें कन्यापक्ष कें क्षण-क्षणमे चिन्ताक मात्रा बढ़य लगलैन्ह ओहि समयमे कोनो एक प्रत्यागत पथिक कहय लगलैन्ह "किछु बरियातीकें हम गञ्जनपुरक गाछीमे बोहितवत् छिछिण्ड भेल पड़ल देखल अछि, जल्द सभक खबरि लियौन्ह नहि तँ हुनका सभक रंग ढंग सौं येहन बूझि पड़ैत अछि जे आइ प्रायः विवाहे नहि भै सकत । एतबा कथा सुनैत संतां कन्यागत् नेहाल तथा सनाथ दास कैं पांच सात व्यक्तिक सहित गञ्जनपुर पठौलैन्ह । इहो सब तत्क्षणे तीर गति सौं गमन करैत गञ्जनपुरक गाछी पहुँचलाह् तँ देखैत छथि जे मदमत्त व्यक्ति सभ कें बहलोल निधि गञ्जन तथा हुरियाठि रहल छथीन्ह । तथापि मदमत्त सभ उठैत नहि छैन्ह । ओही समयमे सनाथदास कहय लागल छथीन्ह "समधीजी एतवहि दूर अथवा मध्य अपने सबहि एतेक

विलम्ब लगाय देल ताहू पर एखन खिचिड़ुटि लगले अछि, विवाहक शुभ लग्न जखन बीति जाएत तखन कुलग्न मे विवाहे कोना भै सकत। आबहु शीघ्रतर अग्रसर भेल जाय। समाधदासक परमोचित कथा सुनि श्रीमान् महलोला बाबू कहय लागल छथीन्ह "समधीजी ! कोन कथा कहू, मखसेवीक झरबे एहने एहने, हिनकै सभक पेंच मे हमहूँ पड़ि गेल छी आहि द्वारे एतेक विलम्ब भै गेल अछि। वास्तविक रात्रि ढ़रलि जाइत अछि तथा कथल जाय। अपने-हीक संगहि संग हमहूँ सभ चलैत छी। हौ बहलोल ! नगारची, मशालची, रोमारची सभ कें सावधान होयब कहक। हुकुम होइतहि नगारची नगारामे चोट देबय लागल। कूचक सूचना सुनितहिं गाछीमे पीहपाह मचय लागल और थोड़बहि कालमे अनोर-शोर करैत बरियाती दल मायापुरी पहुँचल। सरियातीगण तत्काले दलबल साजि बरियातीक स्वागतार्थ अग्रसर भेलाह और शीघ्रतम परीछि-पुरीछि कय कन्याप्रवक द्वार पर लय अयलाह। आहा ! की अपूर्व शोभा ! कन्याप्रवक सिंहद्वार दिशि दृष्टिपात होइतहि देखि पड़ल जे वर्ण-वर्णक भूषण वसन विभूषिता विधुवदनी, केहरि-कटि-मदमान विमोचिनी सौभागिनी शुभाङ्गना गण नाना विधिक मञ्जुल आरती, किंशुक किसलय संयुक्त कलशा सँ सुसज्जित कयने तथा मृदुल मनोहर मंगल गान सौं कल-कण्ठ कें लजबैत वरक परिछनक निमित्त प्रस्तुत छथि। औही सुअवसर पर सार प्रभृति वैवाहिक वस्त्र-भूषण विभूषित, मौर-मण्डित दूलह कें प्रभय पाग मे बन्धने हाथो-हाथ धयने अबैत छथीन्ह। सिंहद्वार पर पदार्पण करितहि विधिकरी वरकें परिछि प्राङ्गण प्रवेश कराबय लागलि छथिन्ह। प्राङ्गण प्रवेशान्तर वेर विहित कुल व्यवहारानुसार पाणिग्रहण परिचर्या सुचारुरूपे प्रारम्भ भेल। विवाह विधि सम्पन्न होइत-होइत पौह फाटि गेल तत्पर सरियाती-बरियाती गण कें भोजनार्थ निवेदन करैत बरगोटिया देबय लागल छथीन्ह। बहुतोक विचारवान व्यक्ति सद्यःस्नातुकक लालिमाक आभास देखि-देखि भोरक भोजन पर निषेध करैत अनइच्छुकता प्रगट करय लगलथीन्ह किन्तु बहुतोक रात्रि भरिक क्षुधा पिपासा सौं सिठिआएल शठ सभ पापी पेट कें दामन करबाक निमित्त भोजनोन्मुख भेलाह। अस्तु ! अन्तिमा-

भिलाखी कें अशनासन एक बेस सुनहर घर मध्य देल गेलैन्ह। भाँति-भाँतिक भोज्य पदार्थ पात मे पड़य लागल। भोजनक कचर-कूट खूब भै रहल अछि। बाहर सौं कौआ कांव-कांव करैत कुसमयक भोजन पर निषेध कय रहलैन्ह अछि तथापि भोजनक ठसम-ठस्स कसम-कस्सक आगा कौआक कोन कथा। बाहर मे जे नीच वर्णक बरियाती भोजन करैत अछि तकर कथे कोन कहू ओ सभ तौं अपन-अपन विशाल अंचला रूपी उदर मे नाना विधिक भोज्य पदार्थ कें तहिआय-तहिआय ठुसि रहल अछि और परसनिहार कें नाकों दम कयने छैन्ह जाहि सौं ओसभहिं क्रोधान्ध भै एकेक पात मे चारि-चारि व्यक्तिक भोज्य उझिलय लागल छथि। येहि झोंकोंझलि सौं गृह-पतिक सामग्री क्रम पजबा पर बाधित भै गेल छैन्ह। फलतः मनोरथ लाभक गति-मतिक विशाला उत्कृष्ट पर उद्यत छैन्हि। यजमानक मुखमण्डल पर चिन्ताक रेख देखितहि सुमन्तझा पुरहित जी कहय लागल छथीन्ह "अपने सभ कें सहलोलपनहीक कारणे कृपा-कलापमे विलापक सम्भावना भै जाइत अछि एखन यदि हमर वमनौलिक आश्रय नहि लेब तौं देखभरि हँस्सी भै जाइति। एखन झोंकोझलिक प्रपात कें शुष्क कय चलू। मर्य्यादिक भोज्यक निमित्त नीच वर्णक बरियाती कें दुहु सन्ध्याक सीधा एकहि ठाम तौलवाय दियौक नहि तौं थोड़ो किछु सरञ्जाम अवशेष अछि तकरो ई सभ ढिढिअये जकां चाटि जाएत। सुमति झाक सुमंत्रणा सौं निराश हृदय मे आशाक सञ्चार होयब लगलैन्ह तखन सौं प्रत्येक कार्य्य पुरहितक आदेशानुसार करय लगलाह। अग्रान्ह समय मे मर्य्यादान्तर पुनः बरियाती दल भोजनाशीन भेलाह। भोज्य सामग्रीक घर्द-घर्द मचि गेल। बरियाती गण कें यद्यपि पूर्वकृत-भोजन सौं उदर भकरले छैन्ह तथापि षट-रस पक्वान्नक लालचवशात दृसीठलिक कोनो आभा परिचय नहि रखैत गेलाह अछि। येहि कुसमयक नाकों नाक भोजनक परचण्ड फल देखल जाइत अछि जे बरियातीगण मे ककरो पेट फुलल जाइत छैन्ह, ककरो पेट सौं निराश पानियें बहल जाइत छैन्ह। कतोक पेटू मधुरिया-पण्डा भै चितचित पड़ल छथि, कतोक पाचकक सेवन बीजान सौं कय रहल छथि। उक्त दृश्यक वर्णन कहाँ तक करू एक दोसर असक्ताबे बोध होइत अछि।

कतोक परहेजी पुरुष क्षुधाव्याकुल व्यक्तिक जिज्ञासा करय लागल छथीन्ह। बहुतोक तँ अग्नि लीला तथा नृत्योपवेशनहीक प्रबन्धमे हैरान भय रहल छथि। अस्तु ! रात्रिक आठ नौ बजैत-बजैत अग्निलीलाक यवनिका सर-सर करैत ऊपर ससरि रहल अछि और लीलाक पात्र-पात्री, नट-नटी अर्थात् महताबी, सिताबी, गुलाबी, फुलझाड़ी; चौकी, कदम्ब, पेटार, बमगोला सभ शांय-शांय, फांय-फांय, छर-छर, फट्टफुट्ट, भटभुट्ट धड़ामधुड़म करैत राति कें दिन बनाय रहलि अछि। तत्पश्चात् नाट्य लीलाक द्वितीय यवनिकाक उत्थान मे देखल जे एक सूत्रधार दाढ़ीदार मियां छौंछिदार तम्बुरा कें कनैठी दैत 'मेआंव मेआंव' कय रहल छथि। हुनका पाछां अन्यान्य समाजीगण स्वस्व साज बाज अर्थात् तबला, सरंगी, सितार, इसराज, मञ्जीरा, मुरचाङ्ग, करताल, पर हाथ धयने खिरकिट-खिरकिट खि, नाना रीं री डा. डिरि- डारा, तुक्का-तुक्का तुन्न-तुन्न ठररर-ठक्क करैत-करैत सारेगमक धमक दय रहलाह अछि। नेपथ्य नटी तँ सूत्रधारक नाना नानी कें नाना-नाना मे रवाना करय लागलि छैन्हि। ओहि अवसर पर हास्य-कुशल एक विदूषक (विपटा) अपन बबमस्त पेट हिलबैत डांड़ लचकबैत आदि धमकलाह और निज कौतुक-कौशला सौं दर्शक मण्डली कें लोट-पोट कय रहल छथि, हिनक हास्य वार्त्ता सौं नाना रहि-रहि कय खिलखिला उठैति अछि। उक्त उत्सव (जलसा) मे दर्शक गण चूरमचूर भै रहल छथि। अन्तःपुरहु मे गृहलक्ष्मी लोकनि मर्य्यादिक उपरान्तहि सौं नाना प्रकारक भोजनक विधान पाकशास्त्रानुसार करय लागलि छथि। यामिनीक युगयाम बितला पर देखैत छी जे कन्याप्रद एक लघु मण्डली बरियाती दलक अधिपतिक समक्ष पाककर्ता तथा समधीक निर्वाचनक निमित्त उपस्थित भेलि अछि और समधी ताकि-ताकि कय स्वजन परिजन, कुटुम्बजन कें उपरोक्त सलाह विचारार्थ एकत्रित करय लगलाह तँ केओ उनींदवशे शय्या पर पड़ल नासिका द्वार सौं दीर्घ श्वास खिचैत-खिचैत मुख सौं फुस्स-फुस्स कय रहल छथिन्ह। कतोक कुम्भकरनी, कतोक मुचकुन्दी, कतोक तँ हरिनी निद्रा मे आँखि मिड़ारने फौंक काटि रहल छथीन्ह। कतोक उकस-पाकस-छटपट्ट करैत देखि पड़ैत छथीन्ह अस्तु ! अति कठीनता सौं शेषमे

सभ कें एकत्रित कयल। तखन उक्त मण्डली श्रीमान् सहलोला बाबू सौं पाककर्ता तथा द्विव्यक्ति समधीक निर्वाचनक निमित्त निवेदन कयलथीन्ह जाहि पर वरप्रद एक कोनो स्थानीय सम्बन्धी कें पाककर्ता नियुक्त कयल किन्तु समधीक संकीर्ण संख्या पर संकोच दर्शबैत कहय लागल छथीन्ह "हमरा कुलक अटल नियम "अछि जे जतबा दीयाद तथा मातृपक्षक व्यक्ति बरियात जाइ से सभ समधीक आसन ग्रहण करी और उचित सम्मान सौं सम्मानित होइ।" कन्याप्रदक मण्डली कहैत छथीन्हि जे हमरा लोकनि स्वजातीय कुमैटीक अन्तर्गत एक अन्तरशाखा स्वेच्छया निर्माण कयल अछि जकर नियमावली मे आबद्ध भै केवल द्विव्यक्ति अर्थात उभय पक्षक एक-एक मुख्य व्यक्ति कें समधीक आसन पर आसीन करैत छियैन्ह तथा आसीनो होइत छी। एकर प्रत्युत्तर में वरप्रद कहय लागल छथीन्ह "हमरा सभक प्राचीन नियमावली बाधित करैति अछि जे उभय कुलक जतेक व्यक्ति बरियाती आथि या आबथि से सभ समधीक आसन अवश्ये ग्रहण करथि वा करावथि। येहि मतभेदताक कारणे वादानुवादक एक लङ्काकाण्ड उपस्थित भै गेल, युगल दल अपन अपन पक्षक पहाड़ भै जाइत गेलाह। कर्षताक मात्रा क्षण-क्षण छितराय लागलि। उभय प्रदक ऐंचा-तानीक उत्कर्षताक कारणे यामिनियों असन्तुष्टा भै निज घोघट पट उतारि अन्तःपुरमे प्रवेशकय गेलीहि। येहि अन्यमनष्कता तथा अनोल्लासताक कारणे बरियातीगण अनशन-करैत कन्यागतक भवन सौं विमुख भेलाह। अन्यमनष्कताक कारणे रंगमे भंग भै गेल। कन्यागतक भवनमे भम्म पड़य लागल अन्तःपुर तँ प्रायः कयकेयीक कोप भवने भान् होबय लागल। उपरोक्त विषमता सौं विस्मित भै कन्याप्रद माथ पर हाथ धयने भाग्य कें कोसैत विलाप करय लागल छथि "हे कुमते ! पूर्वहि यदि हमरा जानि पड़ैत जे कुमैटीमे कुमतिये भरल छैक तँ ओहनि कुमैटीकें दूरहि सौं दण्डवत करितहुँ आब तँ हमर कयल-धयल सभ बयल मे चल गेल। खेद ! आब तँ हमरा सांप-छुछुन्दरिके दशा भै गेलि। एम्हर कन्यागतक ई दशा। ओम्हर वरागत बेचारे सटपट सौं खटपट होइत खेद सौं खिन्न भेद सौं भिन्न भेल प्रण कयने जाइत छथि जे आजीवन आब येहन कुमैटी-उपासकक ओहिठाम पुनः विवाह-दानक चर्चा

नहि करलाह। बाट-घाटमे जे-जे राही-बटोही बरियातीक मुख सौं सासुरातीक शिष्टाचारक समाचार सुनैत अछि से दू चारि सड़ल गलल कुवाच्य कथा कहय लगैत छैन्ह। कन्यागतक भवन परित्यागक काल मे तौं कतेक नवयुवक उत्तेजित भै भै अपन सम्मति प्रकाश करय लगलथीन्ह जे बरहु कें संगहि लेने चलियौन्ह। ताहि पर कतेक विचारशील वृद्ध व्यक्ति निवारण करैत छथीन्ह जे ई बात परम अनुचित होइति। येहि मध्य वर-कन्याक कोन दोष छैक। यदि अपने सभहीक येहने विचार अछि तौं विवाह काण्डक चतुर्थान्त अर्थात् चतुर्थी समाप्त होइतहि वर कें मङ्गवाय लेबैन्ह। युगल प्रस्तावक मध्य मे श्रीमान् सहुलोला बाबू असमंजस तथा संकल्प विकल्प मे पड़ि गेलाह तथापि सुतवत्सलताक वशे येहू दुर्दशा पर विधि चतुर्थीक निमित्त ढिसय टाकाक सहित चाई, छिपाहू खवास कें मनोरथ लाभक द्वार पर छोड़ि चललाह। रसाभास-अपमानक वार्त्ता सूनि-सूनि दुलह सोनेलाल कोबरा घर कें परित्याग करबाक हेतु आफन तोड़य लगलाह किन्तु रहस भवनीया-प्रहरी-नायिकागण हुनका प्रणय पाश सौं तेहेन जकड़ बंध कयने छैन्हि जे टस्स सौं मस्स करबाक अवकाशे नहि भेटैत छैन्ह। खेद ! पराधीन बेचारे वर करथे की करलाह, निरुपायी भै जेना-तेना चतुर्थीक दिन और दिन कटलैन्ह। चतुर्थीक प्रातहि असभ्यसासुर कें परित्याग कय चललाह। रूसल जमाय कें बौंसबाक हेतु ससुरजी पाछा-पाछा दश पन्द्रह भरि दहेज तथा दश पाँच मोट भार और पठाय देलथीन्ह।

पाठक ! सहुलोला बाबू अपरापर सन्तानक विवाह हलमे विशेष दान दहेज तथा आदर सत्कार सौं अति सम्मानित भेल छथि किन्तु अन्तिमापत्यक विवाह मध्य कुमेटी-सेवक समधी सौं अति अपमानित होयक पड़लैन्ह अछि।

उचितवक्ता दास–प्रिय पाठक ! "शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे-गजे, साधवो नहि सर्व्वत्र चन्दनं न वने वने।" औ स्वेच्छाचारी कुमेटीक उपासक गण। अन्यान्य कर्त्तव्याकर्तव्य मध्य अपने सभहि आँजुरेक-आँजुर स्वेवा छिरिआबैत छी, क्षुद्राविक्षुद्र गृहागत अतिथि अभ्यागतक सेवा सम्मान यथा

विभव तौं करितहि होयबैक किन्तु मान्यवर ! ताहूमे निमंत्रित तथा गृहागत समधि पर येहनि रुष्टता तथा संकीर्णता किऐक ? धन्य अपनेक विचार और धन्या अपनेक कुमेटी।

एक कुमेटीक उपासक–उचितवक्ता दास जी ! अपनेक वक्तव्य उचित किन्तु साम्प्रतिक दीनाहीनावस्थाक कारणे हम सभ बहु-विधि-व्यवहार सौं उत्कुल विवाहादि क्रिया-कलापक विपुल अपव्यय सौं त्राण पयबाक हेतु तथा जोंकरूपी बहु-विधि व्यवहारादिक सौं बँचबाक हेतु समयानुसार संशोधन (रिफोरमेशन) करबा पर सन्नद्ध भेलहुँ अछि। किन्तु हमरा समाज कें सुमंत्रौषधि ओहिना नहि सोहाइत छैक जहिना कालविवस व्यक्ति कें भेषज। अतएव हमरा सभक साम्प्रतीक दशा "धर्म सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छुछुन्दरि केरी" चरितार्थ भै गेल अछि। किन्तु यावत्काल हमरहु सभ कें कुमेटी बपटाइज्ड (दीक्षित) नहि कयने छलि अर्थात् दीक्षा नहि देने छलि तावत्काल हमरहु लोकनि आगन्तुक वरियातीक आगत-स्वागत सेवा-सम्मान विशेष रूपे करैत छलहुँ, दायादहुक घर-घरमे वरियातक भोजन छाजनक विन्यास विशेष विधि सौं होइत छलैन्ह। जन सम्वादक दिन तौं ततेक रेलपेल मचैत छल जे वरियाती लोकनि कें स्ववर्ग-सरियाती समाजक प्रतिगृहमे पेट-पूजा करय पड़ैन्हि और वर-विदाइ सेवा-सम्मानक तौं हाटे लागि जाइन्हि। हम अपना सभक प्राचीन आदर-सम्मान-पहुँनाइक गाथा कहाँ तक दारि देखाउ। यदि हमरा सभक पूर्व सौख्य तथा लौकिक व्यवहारादिकक अलबमक (चित्राधारक) अवलोकनक इच्छा हो तौं राम-लक्ष्मण, भरत-शत्रुघ्न, सीता-श्रुतिकीर्ति, माण्डवी, उर्मिलाक विवाहोत्सव पर महाराज मिथिलेश जनक तथा महाराज अवधेश दशरथक पारस्परिक मिलन सम्मान, अनुनय-विनयक फोटो (चित्राङ्कण) रामायण रूपी लेन्स (छायाग्राहक शीशा) द्वारा हृदयपट (प्लेट) पर छायाग्रहण कय देखू–

नित नूतन आदर अधिकाई। दिन प्रति सहसभाँति पहुनाई॥
नित नव नगर अनन्द उछाहू। दशरथ गमन सुहाय न काहू॥

पञ्चम परिच्छेद

परिणाम

जेहन काम तेहन परिणाम ।

'यथा करोति कर्म्माणि तथैव फलमश्नुते'

पाठक ! केवल विवाह दाने सौं स्वाच्छन नहि किन्तु विवाह सौं विधि भारीक कथा कर्णगोचरे होयत । विवाहोत्तर सालो भरि, नहि-नहि साले भरि किये ओहू सौं उर्द्ध अर्थात् ई कहू जे यावत्धरि द्विरागमन काण्डक इतीश्री नहि भेलि रहैत छैन्हि तावत्काल उभयपक्ष कें कोजागरा, पुछारी, पञ्चाग्नि, बटसाविती, मधुश्रावणी तथा तुषारी व्रतागमनक समय पर विपुल व्ययक उत्ताल ताल तरङ्गमे उबडूब होयैक पड़ैत छैन्ह । उभयपक्ष विवाह तनातनी सनासनीक साम्राज्यमे सहकि-सहकि तीक्ष्ण तरुआरि फेरि-फेरि धनान्त कय छोड़ैत गेल छथि किन्तु विवाह सौं विधि भारीक दक्षिणाक दोसर उपाय कोन ? पुनः उयैह ''ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत ।''

साल शेष भै गेलैन्ह् अछि । ऋणदाता गण द्वहू समधी पर ऋण परिशोधनक तकाजा पर तकाजा करैत-करैत अरियाय गेल । परिशोधनमे केवल टाल मटोल होयब लगलैक तखन ओ सभ धड़ाधड़ि मोकदमा दायर लगलैन्ह् और मोकदमाक पैरवी जी जान सौं करय लागल अछि । एक कें देखैत छियैन्ह् जे नाजिरक नजरिमे हाजिर तौं दोसर प्यादाक पाबमौजीमे पड़ल छथि । तेसर निशान देहिन्दाक फिकिरमे फिरैत, चारिम तौं मुद्दालह् कें मोकर्ररेमे पकड़ैबाक चेष्टामे निष्ठा कयने छथि ।

वारन्टक सिपाहीक नाम सुनियहि सहलोला बाबू छौह कटने घुरैत छथि, आङ्गन सौं बहरयबो करताह् से परम भयावह भै रहल छैन्ह् । डर सौं धोतियहि वध्य नदी-लधी परित्याग होइत छैन्हि । प्रवीण प्यादो प्रभृति पकड़बाक प्रयत्न मे पड़ल भेष बदलि-बदलि, नुकि-नुकि, छिपि-छिपि घात मे

घूमि रहलैन्ह् अछि । सहलोला बाबू वारन्टक भय सौं तेहन खेद खिन्न भै गेल छथि जे क्षण-क्षण मे दाँती पर दाँती, मुहूर्त्त-मुहूर्त्त मे मुर्च्छा होइत छैन्हि ।

विभ्रमावस्था मे चेहाय-चेहाय उठैत छथि और अष्ट-खष्ट अर्र-बर्र बजैत बेटा सभ पर बाजय लगैत छथि ''हाय लाल हीरा, मोती, जवाहरि, सोन ! कहाँ सभके अछैते हमर ई दशा ? बचाउ-बचाउ, हटाउ-हटाउ, नहि तौं धयलक-पकड़लक कहैत पुनः मुर्च्छागत भै गेलाह् । ओही अभ्यन्तर मे पोस्ट पिऊन (डाकिया) एक पत्र दय गेलैन्ह् जाहिमे लोमहर्षन लाल सम्वाददाता लिखैत छथि जे आहाँक फल्ला माल, चिल्लाँ खेत, अमुक तारीखमे कम किफायते मध्य निलाम भेल प्रायः २६ दिनक अवधियो अवसान भै गेल अछि, ओहि दिन अहाँक पैरवीकारो आकाशक-कुसुमे छलाह् । खेद ! सहलोला बाबू जेम्हरहि तकैत छथि तेम्हरहि सौं विपत्तिक पहाड़ घहराइत देखि पड़ैत छैन्ह एवंप्रकारे तीनि वर्षाभ्यन्तरे मध्य हुनक सकल सम्पदाक इतिश्री भै गेलैन्हि । शोक सन्तापक विषम ज्वर सौं संतप्त भै सहलोला बाबू आइ अपनहुँ येहि दुःखमय संसारक धराधाम कें परित्याग करैत माया जालक कलेवर बदलैत छथि ।

हा शोक ! अपार अपव्यय तथा महलोलपनक संचार सौं उक्त परिवार देखले दिनमे लुप्तप्राय भै गेल । येहि परिवारमे आब केवल जवाहरिलाल तथा येहि उपन्यासक नायक सोनेलाल बाँचि रहल छथि । हिनको सभ कें अर्थाभावे उपवास पर उपवास करैत-करैत पेटमे ऐठनि पर ऐठनि पड़य लगलैन्हि अछि । युगल भ्राता क्षुधा सौं व्याकुल भै यदि पितृ-परिपालित आप-स्वार्थी सभ कुटुम्बक शरणापन्नो होइत छथि तौं ओहिठाम सौं केवल दुःख-दुर्गतिक पहुनाइये स्वाय कें विमुख होयबा पड़ैत छैन्ह, जाहि सौं हिनका सभक हृदयाकाश मे अहर्निशे दुःखहीक घनघटा आच्छादित कयने तथा नेत्र नलिनमे अश्रुये प्रवेश कयने रहैत छैन्हि । युगल भ्राताक मिदानावस्था देखि-देखि दीनदयालु दीनानाथ दत्त जमीन्दार पाँच टाकाक मासिक वेतन पर पटवारिकी वृत्ति लिखा-पढ़ी मध्य अनुग्रह कयलथीन्हि अछि । येही स्वल्पाय सौं बेचारे

जवाहिरलाल कोनो धराने परिवारक भरण-पोषण करय लगलाह, परन्तु अर्थाभावे सहोदर सोनेलाल सासुरक द्वितीय यात्रा अद्यावधि नहि कय सकल-थीन्हि अछि। जकर तगाद बिन्ताक ओंच सतत् सताय रहलैन्ह अछि। तैहि जौंक यात्रा मे कम्मो सौ कम्म तौ दुइ अढ़ाइ सय रुपैया लगतैन्ह। परमोदार पिताक पुत्र थिकाह। विधि-व्यवहारादि मे न्यूनता कोना करताह आइये लोक हँसि मारतैन्ह तें अहू दीन-हीनावस्थामे मालिक महानुभाव सौं ढ़ि सय मुद्रा ऋण लय अनुजकें सासुर विदा कयलैन्ह अछि। सासुरक टिटकार सौं सोनेलाल मालहि दिनमे सभ रुपैया फूकि-फाँकि कय घर चल अयलथीन्ह।

पाठक! वरपक्षक दानलीला देखि लेल। आब कनेक कन्यापक्षहुक मान-लीलामे मननशील होउ। हमर पूर्व परिचित ऋणदेव साहुकें ऋण परिशोधनक बाटा-वाटी तकैत-तकैत वर्षो बीति गेलैन्ह। किन्तु मनोरथ लाभ कें अर्थाभावे अचेष्ठ देखि अदालत मे मोकदमा दायर कय बीसो-पचीसो बिगहा मात्र मुफ्तमे हाथ लगाय लेलकैन्ह। येम्भर पिशुन प्रसाद मालिकक दरबारसे विवादजनक विपुल व्ययक अभियोग लगौलथीन्ह जाहि पर मनेजर साहेब मौजेक वामलातक (वांचक) आज्ञा पास कयल। उत्कोच ठाकुर वासलातक हेतु मौजे पर पहुँचलाह और बम्म-बखेड़ा करय लगलाह किन्तु दीवानजी कें अचेय देखि असंतुष्ट भै षड्यंत्र सौं साधय लगलाह जाहि सौं दीवानजीक उपर एक पाँच-सात सय खाएन लगाय खेयानतक मोकदमा मजिस्टर साहेबक इजलास मे दाएर करौलैन्ह।

मोकदमाक सापक्षमे मालिकक तरफ सौं अधकट्टी रसीद स्याहा चलान इत्यादि दाखिल कयल गेल। रसीद अधकट्टी कें मिलान कयला सौं विदित होइत अछि जे जानू जोलहा जिलगाक जिल्दमे जलील जमादारक अधकट्टीमे १०) दर्ज तौ ओकरा रसीद मे १००) लिखल देखल जाइत अछि। मिट्ठू मियाँक अधकट्टी मे १६) तौं ओकरा रसीदमे १९२) दर्ज। ठगवा रंगरेजक अधकट्टी मे २०) तौं रसीद मे ४०) दर्ज किन्तु अक्षर मे बीसे लिखल छैक। जलवा लहेरिक अधकट्टी मे ७) सात तौं रसीद मे ६७) सातसठि लिखल।

हुसैनी हजामक अधकट्टी मे २०) तौं रसीद मे ३०) दर्ज। एवंप्रकारें सं थि-गुपि कें पाँच सात सएक खेयानत साबित कयल गेलैन्ह।

खेयानत साबित भेला पर मजिस्टर साहेब बार्जे देबाक समय मनोरथ लाभ सौं पुछैत छथीन्ह "वेल मैनस्ट लाभ! टोम इटना रुपी लैण्ड-लौर्ड (मालिक) का क्यों डिफालकेट (अपहरण) किया?

मनोरथ लाभ–हुजूर! जानबूझके मैंने मालिक के मालगुजारी को किसी तरह से तसर्रुफ नहीं किया है। मालिक के रूल के मुताबिक पटवारी के पास तहवील रक्खा नहीं जाता। तहसीली रुपये सभ रिआल होने-होने के कबल तक जेठरैयत के पास जमा रहता है। मैं तो केवल लिखनी दास हूँ। रैयत के रसीद का हाल तो जाने रैयत या जेठरैयत। मैं तो केवल अधकट्टी वाले रुपये को जानता। सिवाय इसके हुजूर यह भी गौर फरमायेंगे कि मेरे घर में बीसों आदमी हैं जिनका पालन-पोषण करने वाला एकमात्र मैं ही हूँ। हुजूर लोग भी अपने खानसामा, बावर्ची, बैरा, बॉइ को बारह-पन्द्रह रुपये से कम्म तो मोशाहरा न देते होंगे, लेकिन हम बेचारे पटवारियों को तो तीन, पाँच, सात के सिवाय मोशाहरा पाना कभी भी मयस्सर नहीं होता। अलावा इसके आजकल के ऐय्याम मे तो तीन, पाँच रुपये में एक आदमी की भी गुजारा दुश्वार है? तब जहाँ बीसो आदमियों का परवरिश करना है वहाँ पाँच, सात का बिसात ही क्या है। हम पटवारियों को खुद मालीक ही तो कम्म मोशाहरा दे-देकर अपहरण वृत्ति का पथ प्रदर्शक होता है। पहले जमाने में मोशाहरा के अलावा दस-पाँच बिगहा खेतवारी भी परवरिश के लिये मालिक देता था। लेकिन, आजकल तो "दाना, घास नदारथ खड़हरा दोनों शाम" की बात हो रही है। ऐसी हालत में अगर रहमदिला रैयाया हम बेचारे पटवारियों पर मेहरबानी न करती होती तो हम पटवारी लोग पटवारिकी के नाम सुनते ही गोनू झा की बिल्ली हो गये रहते। हुजूर खूब ख्याल फरमा के लामिन्धी करेंगे कि ऐसी-ऐसी ख्यानत-दारिया सिर्फ हम पटवारियों ही से नहीं हुआ करती है। बल्कि मालिक के

जहले अहलकारों ही के अकलमन्दी से होती है, तब रहा "हलुआ पूड़ी बीबी खांय, कोत भरन को बान्दी जांय।"

येहि पर मुद्दंक मुख्तार कसौटा शहनी कहय लगलथीन्ह, बस-बस तुम मे जाली बोलहा, मिट्ठू मियाँ, लाला लहेर की रसीद को देखो—जो कि तुम्हारे ही लिखावट और दस्तखत में है, अब कहो कि तुमने तो इन रुपयों को तगल्लुफ तसर्रुफ किया। फिर भी तो तुमने इन तसर्रुफाती रुपयों के लिये तमस्सुक लिखवा लेने के लिये मनेजर साहेब से अमानी राउत जेठरैयत के सामने अर्ज किया था न?

मजिस्टर साहेब—देन (तब) वश टोमारे कहने से सेल्फ-कनफेशन (स्वयं स्वीकार) होटा हाय इस वास्टे हाम टोम को सेशन (दौरा) डेटा हाय।

मनोरथ लाभ—हजूर हाकिम है जो कुछ करें सो सब अख्तियार है लेकिन इस मोकद्दमे में कुछ भी मेरा कसूर नहीं है।

पेशकार—सिपाही! इसको जेलर बाबू (कारागाराधिपति) के पास जेल में ठेल आव।

दौराक दंगल मे दिवानजीक दलील सौं दया किछु अवश्य देखाओल गेलैन्हि किन्तु दागीदार धरिकयले गेलाह।

कारावासक अभ्यन्तर मे दिवानजीक तनय सौं आशा राउत ऋण परिशोधनार्थ तकाजा पर तकाजा करैत-करैत थाकि गेल किन्तु परिशोधनक निराशा देखि शेष मे नारद प्रसाद वकीलक परामर्श सौं मोकद्दमा दागि देलकैन्ह औ तावड़-तोड़ पैरवी करैत-करावैत दीवानजीक सकल संपदा निलाम-मखशालाक होम मध्य एक-एक कें स्वाहा कय देलकैन्ह। पश्चाति पूर्णाहुतिक हेतु बड़का घर सौं दीवानजी बहरयबो कयलाह तौं स्मशाने स्मशाने देखि पड़लैन्ह। घर अयलाह तौं घरणीक सिवाय केओ खोज पुछारी पर्य्यन्त नहि करैत छैन्हि। एक चुटकी अन्न जे अशन करताह से दुष्प्राप्य भै रहल छैन्ह।

अनुभवी पाठक! येही ठामक कहाउत थिकैक।

सम्पति भरम गमाय कय मुख हेरत अति हीन।
रजनी सौं त्याजित शशी बहुहि न शोभा दीन॥

विवाह दान जनित विपुल अपव्ययक कारणे उभय समधीक स्थिति एक दम सुख सौभाग्यक उत्तंग शिखर सौं अति दुख-दुर्गतिक अन्ध-कूप मे पतित भै गेलैन्हि। तीव्र दरिद्रताक आर्त्त वशात् यदि कोनो आत्मीय जनक द्वार पर पर्य्यटनो करैत छथि तौं ओहिठाम सौं तिरस्कृते भै प्रत्यागत होयब पड़ैत छैन्ह। तखन निरावलम्ब भै स्वजातिक न्यून श्रेणीक धनवान व्यक्तिक ओहि ठाम स्वसंतानक सिद्धान्त विवाहक विवेचना करय लगैत छथि। सिद्धान्त विवाहक पूर्व धरि तौं अन्तिम श्रेणीक व्यक्ति विशेष रूपे सेवा सम्मान सरसावैत रहैत छैन्ह किन्तु तत्पश्चात ओहो आँठि देखावय लगैत छैन्ह तखन पूर्वकृत अनन्यय पर आजन्म थिर धुनि-धुनि पश्चात्ताप करैत अधोगति सौं जीवन यात्राक निर्वाह करक पड़ैत छैन्ह।

उचितवक्ता दास—अवश्यमेव भोक्तव्यं कार्य्याकार्य्यं शुभा शुभम्॥

षष्टम परिच्छेद

द्विरागमन

गमन हमरो नगिचाना।
करब हम कोन बहाना॥

पाँच वर्ष पर आइ जवाहिर लालक हजाम पचट ठाकुर कें पुनः मनोरथ लाभक भवन पर विराजमान देखैत छिऐन्ह। हजाम ठाकुरक पुनरागमनक कारण पाठक-पाठिका कें विदिते भै गेल होयतैन्ह। बहलोलपुर—मायापुरीक गमनागमन सौं टांग तोड़ैत-तोड़ैत पाँचम बरख मे आइ अपन अभीष्ट सिद्ध कय रहल छथि। द्विरागमनक शुभ दिवस अबुके सोलहम दिन चैत्र सुदि द्वादशी शुक्र स्वीकृत कयल गेल छैन्ह। कतोक प्रिय पाठक तर्क-वितर्कक भौंर मे पड़ि गेलाह होएत जे चैतमे द्विरागमन कोना होयतैक। किन्तु, विचारशील पाठक यदि कनेक औरो विचारथि तौं स्पष्टतया विदित भै जय-

तैन्ह जे चन्द्रायण मासक क्रमे यद्यपि चैत्र किन्तु सौर्य्य मासक हिसाबे एखन बैसाख थिकैक। अस्तु स्वीकृत पत्र तथा अपन विदाइ-सिदाइक सहित पलटि ठाकुर पुलकित होइत बहुलोलपुर पलटि अयलाह। द्विरागमन-दिवस निर्णय भेला पर सोनेलालक जेठ भाय जवाहिर लाल अपन टूटल-फूटल घर द्वारक पुनरोद्धार (मरम्मति) करायब लगलाह अछि। ओम्हर जाहि दिन सौं सुमतिक द्विरागमनक दिन मानल गेलैन्ह ताहि दिन सौं हुनक प्रियतमा सखी विदुषी श्रीमती हितवादिनी देवी प्रतिदिन एकान्त स्थानमे बैसि-बैसि नारी धर्म पर नाना प्रकारक शीक्षा देबय लागलि छथीन्ह।

श्रीमति हितवादिनी देवी—हय, प्रिय-प्यारी बहिनपा! आब तौं तो पित्रालय सौं श्वसुरालय जाइति छह। हमरा सभ कें तौं आब तोहर दर्शनो दुर्लभ भै जाएत। 'हा! कत विधि सृजी नारि जग माहीं, पराधीन सपने सुख नाहीं।' यद्यपि तोहर संगे सुमति थिकहु तथापि हमहुँ तौं तोहर सखिये थिकिऔह तैं किछु नारी धर्म पर शीक्षा दैति छिऔहि कान पाति कें श्रवण करैत चलह।

देखह! हम सभ यावत्काल अपना माता-पिताक आलय (गृह) मे रहैत छी अर्थात् यावत्काल हमरा सभक पाणिग्रहण (विवाह) नहि भेल रहैत अछि तावते धरि हम सभ माता-पिता, पित्ती-पितिआइनि, भाय-भाउजीक अधीना रहैति छी किन्तु समयोचित पर जखन ओ लोकनि हमरा सभ कें दान कय दैत छथि तखन सौं हम सभ अपन-अपन पतिक अनुचरी भै जाइति छी। हमरा सभक माय-बाप, पित्ती-पितिआइनि, भाय-भाउजि, हीत-मीत सभ परिमित सुख अर्थात् योग्यतानुसारे सुख देनिहार थिकाह किन्तु स्वामी अनन्त सुखक दाता होइत छथि, विश्व भरिमे पतिदेव सौं बढ़ि हितकर पत्नी कें आन केओ नहि होइत छैक। पतिक पति ईश्वर थिकथीन्ह किन्तु हमरा सभक ईश्वर पतिये थिकाह। हमरा सभक कर्त्तव्य पति सेवाक अतिरिक्त दोसर कोनो व्रत, तप तथा यज्ञ करब शास्त्रकार नहि लिखलैन्ह अछि। (पतिरेको गुरु स्त्रीणाम्) मनु भगवान तौं एतेक धरि निषेध कय गेलाह अछि जे-जे सौभाग्यिनी स्वामीक आज्ञा बिना कोनो उपवासो व्रत करथि तौं पतिक

आयु कें क्षीण करैत नर्क-गामिनी होथि। पतिक धर्माधर्म, पाप-पुण्यक अर्द्धभागक भागिनी पत्नी थिकथीन्ह तदर्थ अर्द्धाङ्गिनी कहबैत छथि तहिना पत्नीक धर्म तथा पाप कर्मक अर्द्धभागक भागी पतियो होइत छथि। अपन पति यदि आन्हर, कनाह, कुरूप, कोढ़ि, कुकर्मी, क्रोधी, बहीर, बूढ़, लांगड़, लूल्ह तथा मूर्खाधिराजो होथि तथापि हुनक अवहेला तथा अनादर कोनो अवस्था मध्य कदापि नहि करियैन्हि। मनसा, वाचा, कर्मना सौं केवल हुनके सेवा-सुश्रुषा करैत रहियैन्हि। जे पत्नी पतिक अपमान अवज्ञाक आचरण करैत छथि से ऐहि लौकिक मे आजन्म अनन्त यातना तौं भोगितहि छथि किन्तु मरणान्तर यमलोकहु मे अनेकानेक क्लेश सहन करक पड़ैत छैन्हि। जे विलासिनी निज स्वामी कें ठकि परपुरुष सौं रमण करैत छथि से ऐहि जन्म मे कुलकलंकिनी, उलूकिनी भै जीवन व्यतीत करैत छथि। पारलौकिको मे सय कल्प पर्य्यन्त नर्क निवासिनी कयलि जाइति छथि। जे रमणी क्षणिक सुखक हेतु अपन सय कोटि जन्म पर्य्यन्तक सौख्य कें बातक बात मे तिलाञ्जलि दय दैति छथि तनिका सनि अधमाधम अधलाहि अबला संसार मे दोसरि के होइति। येहेनि पापीयसी पतिवञ्चिनी पत्नी मरणोत्तरहु जहाँ जन्मग्रहण करैत छथि तहुँठ पतिक सुख सौं वञ्चित रहि प्रमत्त-तरुणावस्थाक लहलहा-हटि मे विधवा भै जाइत छथि। हम स्त्री जाति बिना परिश्रम सहज मे परमगति प्राप्ति कय सकैति छी यदि हम सभ सकल छल-छद्म छोड़ि केवल पतिव्रत धर्म्महीक पालन करी। हमरा सभक सर्वोत्कृष्ट धर्म-व्रतादिक पालन करब केवल पतिदेवहीक पाद पद्मे मनसा, वाचा, कर्मना सौं प्रेम करब थीक। केवल पतिदेवहीक पाद पद्मक सेवन-पूजन सौं सहज अपावनि नारि शुभगति प्राप्ति करैति छथि। स्त्री जाति कें सभक प्रेम परित्याग कय केवल पतिदेवहीक प्रेम करब लिखैत अछि, जाहि कारणे पत्नी, पतिव्रता कहबैतिअछि। कहह कोनो स्त्री आइधरि पतिव्रता उपाधिक अतिरिक्त पितावता वा पुत्रवता कहौलक अछि? माता-पिता, भाय-बहिनि, बेटा बेटी, सासु-ससुर, हीत-मीत, स्वजन-परिजन अर्थात् जहाँ तक जे स्नेही सम्बन्धी छथि से सभ स्त्री कें पति बिना तरणिहुक (सूर्य्यहुक) ताप सौं अधिक तप्त बूझि पड़ैत छथीन्ह। स्त्रीकें पति वियोगक समान दुःख दोसर कोनो नहि होइत छैक। पति बिना पत्नीकें तन, धन, धाम, पृथ्वी, राज, समाज सभ शोक समाज बूझि पड़ैत छैक।

पति विहुनि पत्नी कें भोग, रोग समान, भूषन वसन बोझ समान, संसार येम यातनाक समान बोध होइत छैक। स्त्री कें विश्वभरि मे पतिक सन सुखदायक आन केओ नहि होइत छैक। बिना कान्तक कामिनी ओहने बुझह जेहने जीवक बिना देह, दीपक बिना गेह, जलक बिना सरिता, पक्षक बिना पक्षी, मणिक बिना फणि, दिवाकर बिना दिन, चन्द्रक बिना यामिनी। ई सभ सोचि-विचारि जे स्त्री केवल पतिदेवहीक सेवन-पूजन करैति छथि तनिका ऊपर देवता-पितर, ऋषि-मुनि सभ सतत् सानुकूल रहैत छथीन्ह। "यस्य पत्नी भवेत्साध्वी पतिव्रतपरायणा सजयी सर्वलोकेषु स सुखी स धनी-पुमान॥" नारी धर्म नियमावलीमे की बालिका की युवती, की वृद्धा अर्थात् कोनो अवस्था मे हमरा स्त्री जातिक हेतु स्वतंत्रता नहि लिखल गेल अछि। बाल्यावस्था मे पिताक, युवावस्था मे पतिक, वृद्धावस्था मे पुत्रक रक्षा मे राखलि गेलहुँ अछि। "पिता रक्षति कौमारे, भर्त्ता रक्षति यौवने पुत्रा: न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति"। स्वतंत्र भेला सौं हम सभ बिगड़ि जाइति छी तखन पति पिता तथा मातामह तीनू कुल कलंकित भै जाइत अछि। हम सभ स्त्री रत्न कहबैति छी तखन कहह रत्न कें नम्पित करबाक इच्छा ककरा नहि होइति छैकि। देखह गोसाईं तुलसीदासजी कहि गेलाह अछि जे "महावृष्टि चलि फूटि कियारी। जिमि स्वतंत्र होइ बिगड़हि नारी"॥ अतएव हमरा सभ कें पातिव्रत्य रत्नक रक्षा सर्वथा-सर्वदा करतव्य थीक तें हमरा पतिव्रता स्त्री कें पर पुरुष सौं परदा (ओट) करब परमोचित थीक।

हमरा सभक शोभा केवल सौन्दर्य्य सौं नहि होइति अछि। केवल सुन्दरिये भेलहि सौं हम सभ विशेष पतिप्राणा नहि भै सकैति छी। सुन्दरता केवल मुखोज्ज्वलहि सौं नहि किन्तु गुणहि सौं होइति छैकि। हम सभ यदि वस्तुत: मे पतिप्राणा भै स्वर्गक अनुपम सुखक अनुभव करय चाही तौं हमरा सभ कैं परमावश्यक थीक जे पतिक प्रियतमा बनि हुनक आज्ञानुवर्त्तिनी होइ। पति-इच्छाक प्रतिकूल जे कोनो कार्य्य होइत हो से बिसरियो कय कथमपि कर्तव्य नहि थीक। क्रोधावेग मे कोनो दुर्वचनक प्रयोग पतिक प्रति नहि करी, अपरापर स्त्री-मण्डली मे बैसि-बैसि पतिक निन्दा वा हेय वचनक मुल-

धरौ नहि छोड़ी। स्वयं सर्वदा प्रीति-चिन्ता बनलि रही तथा पतिक चित कें सतत प्रसन्न रखबाक प्रयत्न करैति षड्गुणालङ्कार सौं विभूषित तथा षट्रिपु और अष्टावगुणक अन्त्येष्टि क्रिया (श्राद्ध) करैति रही।

पति यदि क्लेशित वा चिन्तित रहथि तौं प्रत्येक प्रयत्न तथा विशेष सेवा सुश्रुषा सौं हुनक दुःख चिन्ता कें निवारण करियैन्ह। जखन पति परदेश अथवा बाहर सौं थाकल-माकल आबथि तौं हुनक स्वागत सत्कार मृदुमन्जु-भाषण तथा मन्द हासक द्वारा करियैन्हि। मुर्खा तथा कर्कशा स्त्रीवत् हनहन-पटपट-खटपट तथा दुर्वचन कहैति स्वार्थताक प्रलाप नहि करय लागी। जखन पति परदेश वा बाहर जाथि तखन अपन शरीर कें विशेष भूषण-वसन सौं विभूषित करब मरलवत् (विपत्ति) थीक। शृङ्गाराभरण धारण करबा तौं केवल पतिहीक प्रीत्यर्थ थीक। स्त्री जातिक सर्वालङ्काराधिपति पतिये होइत छथि, जखन पति प्रस्तुत नहि तखन प्रणय ककर? जे स्त्री पति वियोगिनी छथि तनिक जीवन यापनाक निर्वाह केवल भस्मरमिता-योगिनी वा ब्रह्मचारिणीये भै करक पड़ैत छैन्हि। विधवाक हेतु तौ शास्त्रक आदेश छैन्ह जे ओ श्वेतवस्त्र धारण करथि। कोनो वाहन पर विचरथि नहि। ऊँच शय्या अर्थात् पलंग, खाटादि पर शयन नहि करथि। काजर-उबटन, अतर-फुलेल, ताम्बूलादि अर्थात् शोभाव्यञ्जक कोनो पदार्थक व्यवहार नहि करथि, शिरमुण्डित भेलि रहथि। शान्तिन्दिवामे एकाहारे अर्थात् एकभुक्त करथि। एकभुक्तोमे केवल जलहीक रोटी तथा स्वाच्छातिस्वच्छ सुस्वरस व्यंजने भोग लगाबथि। किन्तु देखह आइ काल्हि तौ हमरा स्त्री जाति कें भूषन-वसन-विन्यासक चढ़ाव येहन बढ़ि गेल छैन्ह जे बूढ़ि सौं बूढ़ि जनिका मुख मे दाँतक नाम नहि, माथ मे कारी केशक रेख नहि, आनन मे कान्ति नहि, मास मे रुधिर नहि, गात मे करामात नहि अर्थात् सभ नहिये नहि, सेहो भूषणा-

षट्गुण—कार्य्येषुमंत्री, करणेषुदासी, भोज्येषुमाता, शयनेषुरम्भा। धर्मोऽनुकूला क्षमया धरित्री भार्य्या च षाड्गुण्यवतीह दुर्लभा:।

षट्रिपु—मद्यपान, कुसंगति, पति सौं पृथकता, परिभ्रमण, कुसमय सयन और परगृहनिवास।

अष्टावगुण—साहस, चपलता, अनृतवचा, माया, भय, अविवेकता, अशौच, आदाया।

भिन्हानी, सौभागिनी, युवतीक वाक-श्रान बटवा पर तत्पर रहैति छथि। विशेषतर जखन कोनो तीर्थ स्थान, उत्सव स्थान वा नैहर-सौहरक गमनागमन करक होइत छैन्हि। येहि समय पर यदि अपना नहिओ रहतैन्ह तौं अड़ोसियो-पड़ोसियो सौं मांङ्गि-चाङ्गि कय सर्वाङ्ग कें भूषित कय लैतीह। खेद ! हमरि स्त्री जाति कें स्वर्ण-रौप्यक (सोन,-चानीक) कंकण, किंकिणि, काढ़ा, कण्ठश्रीक स्थान मे कानिहुक हथकड़ी, पदकड़ी, सूति-सिकड़ी सौं शृङ्खलित कय दैन्हि तौं कि एक्को बेरि शरीरो समस्यौतीहि ? हमरि विधवा तौं औरो साधनाक काल काटय लगैति छथीन्हि। देखह हुनक छवि छटाक, घटा पर कोनो कवि केहेन चित्राङ्कण कयलैन्हि अछि। "जरीदार सारी मे किनारी कामदार टँकी, चोली जरतारी दे दिखाती गोल छाती को। नथलें, सिरबालों बर भूषण सजाती, कोर कज्जल लगाती नैन बीच तरजाती को। चाल अठलाती बलखाती नचाती लङ्क, जीवन जवानी में लुटाती निज थाती को। मांग बिन सिंदुर सुहाती पान खाती खूब, कहिबे को रांड कान काटे अहिवाती को।"

हमरा सभ कें तौं येहन अलौकिक आभरण सौं शरीराभूषित करतव्य थीक जे आजन्मो अङ्ग पर सौं उतरय नहि, चोरो चोराय नहि सकय, लूटबो-कूटबो वा बिक्रयबो नहि करय। समय पड़ला पर कैओ बाँटियो धरि नहि सकय। अतएव हमरा सभ कें परमोचित थीक जे बारहो आभरण[1] तथा षोड़शो शृङ्गारक[2] स्थान मे बारह विधि सोलहो कला अर्थात् क्षमा, शिल्प ज्ञान, चातुज्ञान, अरोग्य-ज्ञान, वैद्यक-ज्ञान, पाक-शास्त्रक ज्ञान, सौं आभरणित भै सोलहो शृंगार रूपी कला सौं पति कें स्ववश कयने रही अर्थात् पति कें रति-विलास मे सुखदा होइ, पति कें स्वयं परसि कय भोजन कराबी, पति कें निज करकमल सौं ताम्बूल (पान) अर्पण करी, पतिक सम्मुख हाव-भाव कटाक्षादि सौं उपस्थित रही, पति कें पुस्तकादि तथा काव्यक पठन श्रवण कराबी, पतिक रूचिक अनुसार उत्तम-उत्तम खेलिक शिक्षिता होइ, तथा पतिहिक संग खेली, मधुर मनोहर गानक सुशिक्षिता होइ, सत्य तथा प्रियम्वदा होइ, पतिक दोष कें चितमे वृत्ति नहि दी, पतिक क्रूर वचन पर उदासीना बनलि रही, पति कें प्रत्येक कार्य्य मे सुमंत्री होइ, पतिक दोषारोपित कथा पर क्रोधव्यक्ता भै विनय वर्धिका होइ, पतिक अतिरिक्त परपुरुषक संग हास्य वा रसमयी वार्त्तालाप कदापि नहि करी, गृहागत पतिक विशेष सेवा-सुश्रुषा करी, पतिक सम्मुख प्रसन्नाननी तथा लज्जावनति बनलि रही, पतिक अतिरिक्त सासु-ससुरक पादपद्मक पूजन आदरपूर्वक करी। आश्रमक प्रत्येक व्यक्तिक उत्थान सौं पूर्वहि, शयन-शय्या कें त्याग करी। परिवारक प्रत्येक व्यक्ति कें अशन-पान कराय तत्पश्चात् स्वयं आहार करी। सन्तानक विशेष पालन-पोषण करी। अपरक नीक वस्तुक लिलिप्सा कदापि नहि करी। स्ववस्तुक यथासम्भव पर सन्तुष्टा बनलि रही। अपन गृह खर्च बहुत सोचि-विचारि तथा सामर्थ्यानुसार आय सौं व्यय कम्म करी। विपदापदक हेतु अर्थ सञ्चन कयने रही। गृहक वस्तुमात्र कें संयम-नियम सौं राखी तथा विशेष ध्यानाकृष्ट कयने रही। मधुर तथा प्रिय वचन सौं परिवार तथा दास-दासी कें संतुष्ट कयने रही। देखह ! पतिदेवहीक सेवार्चन सौं अहल्या,

---

१. १२ आभरण–१. वेणी (शिरफूल) २.टीका (माङ्ग टीका) ३.बेसरि (नोथ) ४. कण्ठश्री (कण्ठसरि) ५. हार (चन्द्रहार) ६. बाजुबन्द (बिजौठ) ७. चूड़ी (बलया) ८. कङ्कण (कगना) ६. मुद्रिका (औंठी) १०. किंकिणी (पाँयजेब) ११. नूपुर (पैरी, नेउर) १२. बिरिया (बिछिया)।

२. १६ शृङ्गार–अङ्गशुचि २. मञ्जन (स्नान) ३. अमलवसन परिधान ४. आलक्त (आरति) रञ्जन ५. चिकुर विन्यास (केशरञ्जन) ६. बिन्दु विन्यास मांग मे बिन्दु करब ७. ललाट पर चानन केसरीक तिलक करब ८. चिबुक (गाल) पर तिल बनाएब ६. हाथ पैरमे मेहदी लगायब १०. शरीराभ्यङ्ग अर्थात् सुगन्धि लेपन करब ११. भूषण धारण करब १२. पुष्पमाल धारण करब १३. मुखराग अर्थात् पान चिबाएब १४. अधरराग अर्थात् ओठ लाल करब और १५. अंजन, काजर लगायब। १६. दन्ताभरण (मिसी)।

अहिल्या, कुन्ती, गान्धारी, गार्गी, तारा, तुलसी, दमयन्ती, द्रौपदी, विद्याधरी, मन्दोदरी, मदालसा, लीलावती, सीता, सावित्री, शची तथा अनेकानेक साध्वी प्रातःस्मरणीया भै गेलि छथि ।

हम स्त्री जाति चारि प्रकारक अर्थात् पद्मिनी, चित्रिणी, हस्तिनी, शङ्खिनी होइति छी और ओहू चारि मध्य चारि प्रकारक पतिव्रता अर्थात् उत्तम, मध्यम, लघु तथा नीच होइत छी । आब हुनक परिभाषा सुनह ।

उत्तम पतिव्रता ओ थिकीहि जिनका चित्तमे सतत् चिन्तित रहैत छैन्हि जे विश्व भरि मे हुनके पति पुरुष थिकाह और सभ स्त्रीये थीकि ।

मध्यम पतिव्रता ओ थकीहि जिनका पर पुरुष पर पिता, पुत्र तथा भ्रातृवत भाव रहैति छैन्हि ।

लघु पतिव्रता ओ थिकीहि जे गुरुजनक भय, लोक लज्जा तथा धर्म्म विचारि स्वगृह कैं परित्याग नहि करैति छथि अर्थात् स्वगृहे मध्य रहैत छथि ।

नीच पतिव्रता ओ थिकीहि जे स्वकुल धर्म्म पाशावद्ध भै कुलोच्छेदन नहि करैति छथि ।

हय सखी ! नारी धर्म्म पर कतेक शिक्षा दिऔहि समीचीन प्रकारे कहय लगिऔहि तौ येहि थोंथीक एक पोथा तैय्यार भै जयतौहि । तो तौ स्वयं सुमतिये थिकीहि ।

अस्तु ! हितवादिनी दैदीक हितकारी शिक्षाक शेष होइतहि श्रीमती सुमतिक एक दोसरि प्रियतमा सखी प्रियम्वदा पण्डाइनि काव्य मे किछु नारी धर्म्म पर शिक्षा देबय लागलि छथीन्हि ।

श्रीमती प्रियम्वदा पण्डाइनि । हय सान ! हम सभ अपना प्राण प्रीतमक गृह लक्ष्मी थिकियैन्हि । ओ सभ देश-विदेश सौं कतेक कष्ट सहन कय धनोपार्जन कय हमरा सभक भरण-पोषण करैत छथि । हम भार्य्या यदि आश्रमक भार नहि सम्भारि सकी तौ पति प्राप्तिये कय की कय सकैत छथि ? ओ सभ सहस्र मुख सौं कहैत छथि जे "भार्य्याविहिन गृहे नास्ति माता चाप्रिय-

वादिनी । अरण्यं गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम् ॥ तें हमरा सभ कें केहन होयक चाही से सुनह ।

"कुलक्ष्मी सन्तान वत्सला होवे माता ।
सदाचारिणी हंस-मुखी सद्‌गुण की ज्ञाता ॥
पालन करि गृह धर्म सभी को सुख पहुँचावे ।
लघुजन, गुरुजन आदि सभी पर स्नेह दिखावे ॥
कर मे पति के चरण मीदने सुत वा कन्या ।
सेवामे सुख लहय वही गृहणी जग धन्या ॥
निराहार रहि स्वयं करावे पति को भोजन ।
वही प्रेमव्रत वही नारि का सुखमय जीवन ॥
सुख विलास की सभी कामना खोकर ।
पत्नी पति से मिले स्नेह की मूरति होकर ॥
एक प्राण दो देह होय जब दम्पति की मिल ।
लगी आनन्द समीर उभय हृत्पद्म उठय खिल ॥
सावधान रहि सदा करे परिवार सुपालन ।
ध्रुवतारा की भाँति राखि रक्षित सब आलय ॥
रैन दिवस आत्मीय जनोंका करि हित चिन्तन ।
सकल भोज्य संयोज्यक बनावे सुखमय जीवन ॥
आ जावे यदि कोई द्वार पर अतिथि भिखारी ।
यथा शक्ति सत्कार करे निज धर्म विचारी ॥
देकर अन्न अहार बोलकर मीठी बानी ।
करि सेवा सम्मान पिलावे ठंढा पानी ॥"

नारी धर्म्म शिक्षाक उत्तर-काण्डक शुभमस्तु श्रीरस्तु होइतहि श्रीमती सुमतिक भाउजि मंजुभाषिणी गृह कार्य सौं अवकाश पाबि उक्त गोष्ठी मे सम्मिलित भेलीहि । हितवादिनी, प्रियवादिनी प्रभृति बिहुँसि-बिहुँसि चम चौलि करैति कह लागलि छथीन्हि, अय चन्द्रकला भौजी ! हम सभ तौ अपन

सखी कें जे-जहाँ फुरल से शिक्षा नारी धर्म्म पर देल आब अहूँ कें उचित थिक जे अपना ननदोसि कें पुरुष धर्म पर किछु शिक्षा दिऔन्हि ।

मंजुभाषिणी–प्रिय ननदे ! हमर ननदोसि तँ हालि मे नारी शिक्षाक प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण भै गेलाह अछि और काव्य मे तँ काव्य परीक्षोत्तीर्ण पाबोपाधित भै आएल छथि । हुनका सन्मुख मे हम यदि कनेको अधरोष्ठो डोलाएब तँ तुरन्त काव्य छाँटय लगताह । 'जोड़ि-बीछि को मौगी बहुमोर हो, मुआ फटी तौं नइहर जौं" तथापि अहाँ सभक आग्रह तँ किछु अवश्य कहबैन्हि । अहूँ सभ चलैत चलू हमर काव्य कें सुनैत रहब ।

श्रीमती हितवादिनी–छिः छिः छिः ओ तँ हमरा सभ कें बहिनि-जमाय होयताह । हमरा लोकनि हुनक सन्मुख कोना होयबैन्हि । अनावे सुनैत छी जे पाहुन परम मुखर (मुँहफट्ट) छथि की बजैत की बाजि देथि तखन तँ हम सभ बेशर्म भै जाएब ।

श्रीमती मंजुभाषिणी–चलू, चलू ! "हास्य मनोहारि सखी जनानाम्" । ओ कि आहाँ सभक चन्द्राननें निहारैत रहताह, कोबराक वर तँ कौतुक बरदे भेल रहैत छथि यदि सन्मुख नहि होयबैन्हि तँ देहरियो लागि कें तँ हमरा सभक दृष्टकूट सुनैत रहब ।

एवम्प्रकारें पारस्परिक हास परिहास करैत-करैत सभहु जनी कोबर गृहक देहरि पर प्रस्तुत भेलीहि । तदनन्तर श्रीमती मंजुभाषिणी अवसर भ निकेतनाभ्यन्तर गेलीहि और सुमति नायक सोने लाल सौं कहय लागलि छथीन्हि–औ पहुना ! अहाँ तँ पण्डितक बेटा महापण्डिते छी । आहाँ कें तँ किछु उपदेशो देब सूर्य्य कें दीपे देखाएब होयत तथापि निज ननदीक ममत्वे किछु कहैक पड़ैत अछि । देखबैन्ह ! हमरि ननदि एखन अति अबोधा तथा एक लालक ललित लाड़िली लली थिकीहि सासुर मे जाहि सौं कोनो बातक क्षोभकर्म्य नहि होइन्हि से यत्न करैत रहबैन्ह । आहाँ तँ विशेषतया जनितहि होयब जे–जे पति पत्नी पर प्रेम रखैत छथि अर्थात् पत्नीव्रत पालन करैत छथि से पराया पत्नी कें मातृवत् बुझैत छथि । पत्नीव्रत-पुरुषक

पत्नी यदि कुरुपो किम्बा फुहरियो रहैति छथीन्हि तथापि धर्म विचारि हुनक पति परदार-निरत कदापि नहि होइत छथीन्ह केवल स्वपत्निये कें प्रेमभाजी बुझैत छथीन्ह । जे पति स्वपत्नी कें अर्द्धाङ्गिनी जानि विशेष प्रणय करैत छथीन्ह हुनक पत्नियो पति कें प्राणाधिक प्रीति करैति छथीन्ह । दाम्पत्यमे जखन परस्पर प्रगाढ़ प्रेम भै जाइत छैक और युगल-जोड़ी अपन-अपन कर्त्तव्यक पालन करय लगैति छथि तखन हुनक क्षुद्राति-क्षुद्र भवनो स्वर्ग सदृश भै जाइत छैन्ह । दिनानुदिन सुख-सौभाग्य-सम्पत्तिशाली होयब लगैत छथि । पराया रमणीक कमनीय कान्ति कें देखि जाहि पुरुषक चित्त चलायमान होइत छैन्ह से नर अधमाधम नारकी थिकाह । जे पुरुष पराया पत्नी सौं प्रणय प्राप्ति करैत छथि अथवा ओकरा मोहजालमे फँसि जाइत छथि तनिक दशा देखैत होयबैन्ह जे लोक लाज कें तिलांजलि दय तन, धन, धाम कें स्वाहा करैत नाना प्रकारक दुःख शोक सन्ताप कें सहैत द्वार-द्वार भीखाटन करैत फिरैत छथि । जाहि तन-धन-धामक द्वारा कर्म कयला सौं मनुष्य सकल सुखक खानि स्वर्गलोक प्राप्ति करैत अछि ओहि वृहद्वस्तु वित्त कें वाराङ्गना वा अन्यान्य कुकर्म मे प्रवाहित कय नाना प्रकारक रोग-शोक-परितापक कुण्ड मे हवन होइत रहैत छथि । जाहि कुल मे कामिनीक आदर सन्मान नहि होइत छैन्ह से कुल श्री मनु भगवान कहैत छथि जे ओहि वामाक आहि सौं आशु विनष्ट भै जाइत अछि और जाहि कुलमे भामिनीक भरण पोषण आदर सन्मान विशेष होइत छैन्ह ताहि कुल पर देव पितर ऋषि-मुनि सब सतत् सानुकूल रहैत छथीन्ह । तें स्त्री, पिता, भ्राता पति तथा देवरादिक सौं परम पूजनीया थीकीहि ।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥

प्रिया न पावहि जेहि भवन आदर अरु सन्मान ।
सो निश्चै नसि जात हैं कहते मनु भगवान ॥

एही अभ्यन्तर मे मन्द-मन्द हँसैत बिहुँसैत छह-छह करैति सोनेलालक सारि हृदयहारिणी उपस्थित भेलीह और बहिनोइ कैं दू-चारि सकल गारि सौं परिचाय कहय लागलि छथीन्ह "औ पहुना ! भौजीक शिक्षा तौ सुनलैन्ह कनेक हमरो शिक्षा तौं श्रवण मे धारण कय लीय। अहाँक पुरुष जाति कैं उचित थिकैन्ह जे माता, भगिनी(बहिनी)तथा पुत्रियोक भेंट निरन्तर स्थानमे कदापि नहि करथि, कियैक तौं इन्द्रियादिक बड़े बलिष्ठ होइति छथि केहेन-केहेन, बड़का-बड़का बुद्धिमान बलमानो कें, खींचि कैं पाप पंक मे पटकि दैति छैन्हि। औ पहुना ! हम परम गंवारि मन्दमति स्त्रीजाति कहाँ तक अहाँ कें पुरुष-शिक्षा पर दीक्षा देब अहाँ तौं स्वयं काव्य मे पिङ्गलाचार्यक बेटा, ज्ञान मे कागभुसुण्डीक पौत्रे थिकहुँ।

सोने लाल–प्रिये अहाँ सभहि तौं स्वजातिक प्रशंसा तथा पुरुष जातिक निन्दा करबहि मे विशेष रूप सौं छाँटि गेलहुँ। अस्तु यथासाध्य अहाँक अनुरोधक पालन अवश्ये करब, किन्तु हमरा अबोध पर अहाँ कनेक दया-दृष्टि देने रहब।

उचितवक्ता दास–प्रिह् सजने ! अपने सबहि तौं हमरा दुलरुआ दुधमुख सोनेलाल कैं अपना-अपना शिक्षा दीक्षाक झकझोर सौं लोट-पोट कय छोड़लहुँ अछि। अहाँ सभक त्रिया चरित्र जखन दैवो नहि जानि सकैत छथि तखन हमर अबोध मानवक गणने कोन ?

राखिय नारि यदपि उर माहीं।
युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं॥
विधिहु न नारि हृदय गति जानी।
सकल कपट अघ अवगुण खानी॥
नारि विवश नर सकल गुसाईं।
नाचहि नर मरकट की नाईं॥

तुलसी या जग आइके कोउ न भयो समरत्थ।
एक कञ्चन इक कुचन पर को न चलायो हत्थ॥

श्रीमद वक न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगनयनी के नयन शर को अस लागु न जाहि॥

अस्तु ! पूर्वोक्त हास परिहास, शिक्षा दीक्षाक लेक्चरक (व्याख्यानक) फुलकोर्स अटेण्ड कय अर्थात् नर-नारी कर्त्तव्याकर्त्तव्य शिक्षाक सम्पूर्ण समय शेष कय सोनेलाल सासुर सौं सहटि अयलाह।

आइ चैत शुदि द्वादशी शुक्रो आबि गेल। विगत राति मे सोनेलाल अति संकीर्ण रूपे अर्थात् चारि कहार एक बेगारक सहित द्विरागमनक हेतु सासुर आएल छथि। येहि सरल संकीर्णता पर कतोक हमर हंसोड़ पाठक पाठिका कैं विस्मय तथा हँसियो लगैति होयतैन्हि जे जिनक सिद्धान्त-बिबाह ओहन धूम-धाम, ठाम-टाम सौं भेलैन्ह, तिनक द्विरागमनक दशा येहन सूक्ष्म कियैक होबय लगलैन्हि।

पाठक ! सहलोलपन, बहलोलपन, अन्ध-धुन्ध अपरिमितापव्ययताक प्रतिफलो राजा सौं रंकै होइत छैक। अतएव पूर्वोक्त घटना सौं हमरा सभ कैं शिक्षा ग्रहण कर्त्तव्य थीक जे "बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि ले। जो बनि आवै सहज मे ताही मे चित दे॥" अस्तु ! येहि उपन्यासक नायिका श्रीमती सुमति एक उच्च कुल कामिनी तथा विशेष विदुषी थिकीहि तें आशा कयल जाइति अछि जे भविष्य मे ई अपन सदाचार बुद्धिमता तथा दूरदर्शिता सौं स्वकुल मे एक आदर्श रमणी भै पतिक अधःपतित अवस्थां कें पुनः विभव शालिनी बनाय स्वनाम कैं सार्थक करतीहि।

"न गृहं गृहमी बिना।

मात्रा स्वस्त्रा दुहितावान विविक्तोसनो भवेत्।
बलवान इन्द्रिय ग्रामो विद्वान्समपि कर्षयति॥

भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी॥
होय विकल मन सकत न रोकी। जिमि रविमणि द्रव रविहिं विलोकी॥
कलि काल बिहाल किए मनुजा।
नहि मानत कोउ अनुजा तनुजा॥

सप्तम परिच्छेद

''दुर्गैस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः ।''

पति गृह प्रवेशान्तर नवल वधू श्रीमती सुमति पतिक आश्रमक अधःपतन देखि-देखि रात्रिन्दिवा खेद खिन्न । चित्त चिन्तामे पड़लि तर्क वितर्क करय लागलि छथि । हाय चिन्तामणि ! पतिमा मुख सौभाग्यक प्रशंसा पूर्व सौ सुनैत छलीहि किन्तु सम्प्रति औरक औरे देखि सुनि रहलि छी, हे माँ दुर्गे दुर्गति नाशिनी ! दया करू, पतीक दीनाहीनावस्था कें शमन कय कृपाकटाक्ष सौं येहेनि सुमति प्रदान करू जे येहि भवनमे हम एक आदर्श युवती भ' निज नाम कें सार्थक करैति पतिक दुर्दशा कें सुदशामे पुनः परिवर्त्तित कय सकी ।

करुणामयी भगवती श्री कालिकाक कृपा सौं किञ्चित कालमे अनुभवशीला श्रीमती सुमति आश्रमक प्रत्येक कार्य्य कें स्वयं सम्पादन करय लगलीहि । कमन कार्य्यदक्षता सौं समाज कें विमुग्ध करय लागलि छथि । हिनक कार्य्य कुशलता पर स्ववर्गीय सहवासिनी आलसिनी मूर्खा स्त्री सभ नाना प्रकारक कूट निन्दा तथा व्यङ्ग करैति परस्पर हास्य परिहास्य करय लागलि छथीन्हि ।

विदुषमनि कहैति छथीन्हि अय ! विद्दुसमनि देखु तौ ? हमरा सभक कुल लूटने आइ धरि येहनि निर्लज्जि कलियुगी कुलवधूक आगमन नहि भेल छलैक अछि । किन्तु लोकक सोहागा कें देखैति छियैन्हि ? सासुर बसना कतोदिन नहि व्यतीत भेलैन्ह अछि कि चुल्हि-चुहैनियाक काम करैत घरक काज-धन्धा सभ अपने हाथे सम्हारय लागलि छथि । हमरा लोकनि तौ सासुर अयलाक उत्तर १२, १५ वर्ष पर्य्यन्त गृहक कोनो कार्य्य मे हस्ताक्षेपो धरि नहि कयल । घर आङ्गन छोड़ि दरबज्जा सौं बीचा तौं कहिओ लातो नहि उठाओल । दिनक कोन चर्चा जे अर्द्धरात्रि सौं पूर्व तौं कहिओ पति कें स्वप्नहु मे दर्शन

नहि देने होयबैन्हि किन्तु आइ-काल्हिक विलासिनी पुत्रवधू तौ द्विरागमनक प्रातहि सौं पतिक गृहाहार भ' जाइति छथि । गृह कार्य्य कारिकाक तौ साटे लिखौने अबैत छथि । सासु-ससुर, देवर-देयादिनी, ननदि-जैधीक उपर हुर-हुलपतिक हुँकार तथा फर-फरमाइश सौं तौ हुनका सभ कें सतत सतबैत रहैत छथीन्हि विशेषतर तखन, जखन स्वामी उपार्ज्जक रहैत छथीन्ह ।

वार्त्तालापक गठन, शरीरक बठन मे तौ कोनो उपाधिये (डिगरीये) उपलब्ध कयने सासुर अबैति छथि परोपदेश मे तौ एम० ए० अथवा ओहू सौं एकाध दर्जा (डिगरी) बेशिये पास कय अबैत छथि । येहनि कुलाङ्गनाक तुलना मे हमरा सभक गणना कि करत ?

विद्दुसमनि–अय विदुषमनि ! बताहि भेलहुँ अछि आइ काल्हिक पढ़ल लिखल स्त्री कें स्वतंत्र करबैक से अहाँ कि सांध्य थीक ? सम्प्रति सरकारक समय नहि चिन्हैत जे अहाँ कान्हे पर चढ़ल रहबैक । आइ काल्हिक पुतहु तौं पति-भक्ति मे सावित्री, आदर मे सत्यभामा, चरित्र मे लक्ष्मी होइति छथि चुपचाप देखैति चलू नहि तौं कनेको किछु कहबैक कि लगले इन्द्रयुद्ध का वर्द्धमन्त्रक व्यवस्था करय लागति ।

पाठक ! विदुर-विलासिनीक कचहरी मे कहाँ तक ओझरायल रहब आगाँ चलू श्रीमती सुमतिक सुशिक्षाक सूत्र धयने चलू नहि तौं अहूँ औटहाक लोक मे भूतिआय जाएब ।

अस्तु ! आश्रमक दुर्दशा देखि श्रीमती अपन समस्त अवशिष्ट गहना गुड़िया कें सर्वाङ्ग सौं उतारि नवल और ओहि सभ कें बेचि खोचि कय तीनि सय रुपैया एकट्ठा कयलीन्हि । सय पचासक जिनीस तथा अन्यान्य उपयोगी सामान सालोभरिक निर्व्वाहक हेतु एखने ठाम कीनि-बेसाहि कय राखि देलैन्हि । स्वामी कें मालिक सौं जे किछु वेतन भेटैत छैन्ह से सभ पूर्वकृत ऋण मे परिशोधन करबय लगलीहि । स्वामी कें भोजन-छाजन मालिकहीक दरबार सौं भेटय लागल छैन्ह ।

आश्रमो येखन साढ़े तीनिओ नहि-नहि सबे तीन गोटाक छैन्हि अर्थात् जवाहिर लाल, स्वामी, स्वयं तथा जवाहिर लालक एक वर्ष-तीनिक तनय सुशील।

श्रीमती सुमतिक सुप्रबन्ध सौं सुख-सम्पदाक उन्नति आब दिन-दोबर, राति-चौबर होबय लागलि छैन्हि। आश्रमक प्रत्येक कार्य्य-चिन्तनक संगहि संग श्रीमती सुमति शिशु सुशीलक सेवा सुश्रूषा लालन-पालन विशेष रूपे कय रहलि छथीन्हि। प्रभात-सन्ध्या समयमे स्वयं सुशील कैं पढ़बैति छथीन्हि। किञ्चितकालान्तरहि मे वर्णमाला, गणित, दस-पाँच स्तोत्र, सए-सवा सए आवश्यक श्लोक तथा शास्त्र पुराणादिकक विशेष-विशेष उपयोगी उपाख्यानक सारांश स्मरण कराय एक प्राथमिक शिक्षाक पाठशाला मे प्रतिदिन एक भृत्यक संग अध्ययनार्थ पठबैति छथीन्हि जाहि सौं सुशीलक बुद्धि विकाश दिनानुदिन उन्नति कय रहल छैन्ह।

सौभागिनी श्रीमती सुमतिक कार्य्यविलक्षणताक कारणे सोनेलालक सौभाग्यता दिनानुदिन लहलहाय लागलि छैन्हि।

द्वितीय वर्ष मे श्रीमती सुमति पूर्व मलमूली खेतक प्रचूर उपजक आय सौं पुनः चारि पाँच बिगहा खेत खरीद कयलैन्हि। प्रतिवर्ष क्रमशः खेत-पथार खरीदतहिं जाइति छथि। एवम्प्रकारे एक पाँच वर्षाभ्यन्तर मे पचासों बिगहा भू-सम्पति उपार्जन कयलैन्हि। येही अभ्यन्तरमे भगवती कालिकाक अनुकम्पा सौं सौभागिनी श्रीमती सुमतिक कोड़ (कोर) एक सुन्दर शिशु सौं शोभायमान भै गेलैन्हि। सम्प्रति सुशील बाबूक वयस नौम वर्ष मे पदार्पण करय चाहैत छैन्हि और अछुके दशम दिन प्रवेशिका परीक्षा (इन्ट्रेन्स एकजामिनेशन) देबय जटना कयथीन्ह। परीक्षा-प्रश्नक प्रत्युत्तर पूर्ण रीति सौं सुशील बाबू दय आएल छथि। परीक्षाक प्रतिफल बुझबाक हेतु श्रीमती सुमति प्रति सप्ताह पाठशाला निरीक्षकक समक्ष पत्रिका पठबैति छथि। समयोचित पर परीक्षाक प्रतिफल प्रकाशित भेलैक। समाचार पत्र (गजेट) देखल गेल तौं प्रवेशिका परीक्षाक प्रथम श्रेणीक उत्तीर्ण विद्यार्थीक नामावलीमे प्रथम नाम सुशीले बाबूक

दृष्टिगत भेल। केवल पासे नहि १५) पन्द्रह रुपैया मासिक वृत्तियो सौं सम्मानित कयल गेल छथि। सुशील बाबूक विद्याविकाशक प्रशंसा सूनि-सूनि आब ढेरक-ढेर जाति वर्ग हिनक सिद्धान्त-विवाहार्थ लालाइत होबय लागल छथीन्ह। पञ्जीकार पर पञ्जीकार आवाजाही कय रहल छथीन्ह। किन्तु श्रीमती सुमति देवी प्रण ठनने छथि जे यावत् धरि सुशील बाबू एम० ए० पास नहि करथीन्ह तावत धरि हुनक सिद्धान्त-विवाह कदापि नहि करौथीन्हि।

पाठक! ईश्वरानुग्रह सौं सौभागिनी श्रीमती सुमतिक सुपुत्र सुबोधो आब अनेक-अनेक काका-काकी, दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामीक भाषण करय लगलैन्हि अछि। अपन काका जवाहिरलालक संग भरि दिन दलान पर एम्हर-ओम्हर ठेहुनिया दैत गुड़कल फुरैत छैन्ह। विश्रामित भेला पर पित्तीक पीठिक आश्रय सौं थरथराइत-थरथराइत ठाढ़ो भै जाइत अछि क्षणहि मे औंघड़ाय कय खसियो पड़ैत अछि। तत्काले क्रन्दन करय लगैत छैन्ह कि लगले काका कोरा कय लैत छथीन्ह। और पीठ कैं थपथपबैत एक लाल झुनझुना हाथ मे धराय चुप-चुप-चुप कहय लगैत छथीन्ह। झुनझुना हाथ मे धरैत सन्तां चुप्पो भै जाइत छैन्ह और झुनझुना कैं मुँह सौं भम्भोरि खेर सौं लेढ़ाय काकाक मुख मे ठुसैत और तोतराइत-तोतराइत कहय लगैत छैन्ह काका मा, काका कौआ, काकाहौवा। जखन विशेष भूख लगैत छैक तखन रकन्ना करैत-करैत काका मा, काका दूध कहय लगैत छैन्ह। कनको कान्ध पर चढ़ाय आंगन लय अबैत छथीन्ह। दुग्धपानान्तर पुनः दालान दिशि ससरय लगैत छैन्ह। एहि समय यदि जननी रोकबाक हेतु पाछाँ-पाछाँ परिश्रमणो करैत छथीन्हि तौं क्षणहि मे खिरिआय लगैत छैन्ह तखन विवश भै छोड़ि दैत छथीन्हि। जखन अपन भाय सुशील बाबू कैं प्रभात समय मे पढ़ैत देखैत छैन्हि तखन सुबोधो हुनक दू-एक पोथी कें उकटि-पुकटि एम्हड़-ओम्भर देखि मुख सौं भम्भोरैत खेर सौं लेभड़बैत भैया, काका हौआक पाठाभ्यास करय लगैत छैन्ह। सन्ध्या समय मे तौं पठनागार मे सुशील बाबूक आगमनं सौं पूर्बहि जाय विराजैत छैन्ह और काका-काकी, दादा-दादीक पाठ

कहय लगैत अछि। पढ़ैत-पढ़ैत थाकित भै ठामहि पर्य्यङ्क पर निर्भेद निद्रा मे निमग्न भै जाइत अछि तखन जननी उठाय लवति छथीन्ह और एक अन्य पालन पर सुताय दैति छथीन्हि । तखनुक सुतल पुनः प्रभाते काल मे जगैत छैन्ह ।

तखन सौं शिशु सुबोध कें सुरक्षार्थ चलय-फिरय भाषण करय अवलैक अछि तखन सौं कौखन आंगन मे रहितहि नहि छैन्ह । समवयस्क बालक संग सतत खेलाइत-धुपाइत रहैत छैन्ह । भोजनक समय पर जखन काका धपवाक हेतु वजवय जाइत छथीन्ह तँ एम्हर-ओम्हर भागल फिरैत छैन्ह । कतेक पोल्हौला-पुल्हौला पर शिशु समाज छोड़ि अयबो करथीन्ह तँ भरि देह धूर-धूसित भेल अयथीन्ह और चञ्चल चित सौं एम्हर-ओम्हर तकैत हुन्कारि कौर मुख मे देलकैन्ह और अवकाश पाय पुनः पलायन पर उद्यत तखन जौ काका घर-धर कहय लगैत छथीन्ह कि नरसर कय ससरि जाइत छैन्ह ।

येहि प्रकारक स्वतन्त्र शिशुक शैशवावस्थाक सुखानुभव करैत सोनेलालक परिवार भरिक लोक प्रमुदित देखल जाइत छथि ।

माता-पिता तथा भ्राता सुशील बाबूक विशेष प्रयत्न सौं थोड़बहि दिनक अभ्यन्तर मे शिशु सुबोध शिक्षा कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष मे विशेष क्षमता प्राप्ति करय लागल छथीन्ह ।

सौभाग्यिनी श्रीमती सुमति देवी अलौकिक क्षमता सौं हजारोक असामा-उपार्जन कय निज पति सोनेलाल कें दासवृत्तिक शृंखला सौं विमुक्त कराय वाणिज्य-व्यापार पथक प्रदर्शिका भेलीहि जाहि व्यापारक प्रसादे श्रीमती सुमति एखन पचासो हजार संपतिक अधिष्ठात्री भै गेलि छथि । थोड़बाहि दिनमे सुशील बाबू एम० ए० और सुबोध बाबू प्रवेशिका परीक्षा मे सभ सौं प्रथम संख्या मे परिक्षोत्तीर्ण भेलथीन्ह और सुबोध बाबू एक बीस रुपैयाक छात्रवृत्तियो प्राप्ति कयलथीन्ह । वाह ! होनिहार बिरबाक चुह-चुह पात ।

सौभाग्यिनी श्रीमती सुमति आब सभ ईषणा अर्थात् वित्तेषणा, कामेषण तथा पुत्रैषण सौं परिपूरित भै सुशील बाबूक सिद्धान्त विवाह तथा समाज सुधार पर

कटिबद्ध भै एक नियमावलीक निर्म्माण कयलैन्हि अछि और स्वयं प्रतिज्ञाबद्ध भेलि छथि जे जे व्यक्ति नियमावलीक अनुसार कार्य्य करथीन्ह । तनिकाहि ओहिठाम सुशील बाबू प्रभृतिक सिद्धान्त विवाह करौथीन्हि । एम्हर सुशील-सुबोध बाबूक विद्याविकासक प्रशंसा सुनि-सुनि हुनकर विवाहार्थ बहुतोक स्वजाति-वर्ग पञ्जीकार पर पञ्जीकार घटक पर घटक, दूती पर दूतीक धुरखा मचावय लागल छथीन्हि किन्तु श्रीमती सुमति देवी एतवय प्रत्युत्तर दैत छथीन्हि जे-जे विचारवान व्यक्ति हमर नियमावलीक पालन करताह तनिकाहि ओहिठाम हम सुशील बाबूक सिद्धान्त-विवाह करयवैन्हि । नियमावली मे बहुतोक बातक सुधार उल्लिखित छैक ।

॥ इति ॥

दूरभाष : 334 9371

कर्ण गोष्ठी



६/२८, सी॰ आई॰ टी॰ बिल्डिंग
१६, बागमारी लेन, कलकत्ता-७०० ०५४

श्री १०८ चित्रगुप्त पूजनोत्सव

आत्मीय बन्धु,

आदि पुरुष भगवान श्री १०८ चित्रगुप्तक वार्षिक सामूहिक पूजनोत्सव आगामी मंगलवार १२ नवम्बर १९९६ के आयोजित अछि।

प्रातः काल ९ बजे : श्री चित्रगुप्त-पूजन एवं प्रसाद-वितरण

एहि पुनीत अवसर पर स्व॰ राश बिहारी लाल दास रचित उपन्यास 'सुमति' क नव संस्करणक लोकार्पण मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार सं सम्मानित श्री प्रभास कुमार चौधरीक कर कमल सं होएत।

प्रधान अतिथि रहताह उपन्यासक नवसंस्करण क भूमिकाक लेखक डा॰ रमानन्द झा 'रमण'।

सम्पूर्ण कार्यक्रम मोहित श्रमजीवी हिन्दी विद्यालयक सभागार, ९३ नारिकेल डांगा मेन रोड, कलकत्ता-७०००५४ (फूल बगान चौरस्ता सं पूरब) मे अनुष्ठित होएत।

समारोहक सफलताक हेतु अपनेक उपस्थितिक आकांक्षी छी।

विनीत :

राजनन्दन लाल दास
अध्यक्ष

उपेन्द्रनाथ दास
सचिव